प्रकाशक—
पण्डित लक्ष्मणप्रसाद मिश्र
साहित्य-समिति
रायगढ़
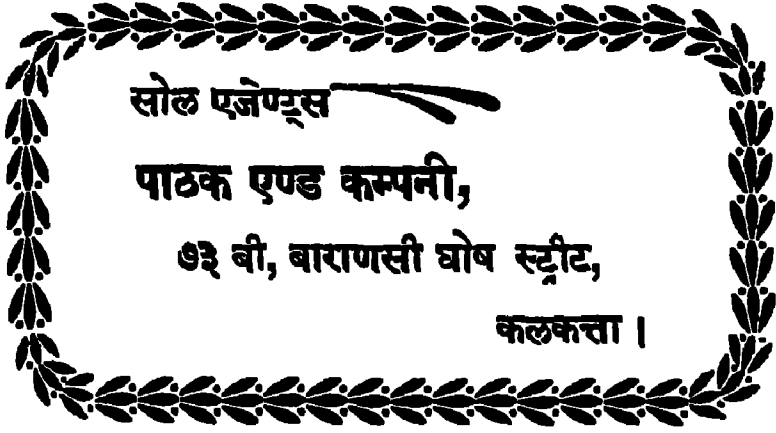
मुद्रक—
चन्द्रशेखर पाठक
महाराष्ट्र प्रेस,
७३ बी, बाराणसी घोष स्ट्रीट,
कलकत्ता।

दीबाचा

उर्दू और हिन्दी एक ही भाषा—एक ही ज़ुबान—के दो पहलू हैं। पण्डितोंने उसी भाषामें संस्कृतके शब्द भरकर उसे हिन्दीका रूप दे डाला। मौलवियों और मुल्लाओंने उसी ज़ुबानमें अरबी-फ़ारसीके अलफ़ाज़का ज़ख़ीरा रखकर उसे उर्दू कहना शुरू कर दिया।

पहले पहल हिन्दी (खड़ी बोली) और उर्दूमें तो कोई फ़र्क था ही नहीं। जहाँ मीर ख़ुसरो :—

"बीसोंका सिर काट लिया,
ना मारा ना ख़ून किया।"

तथा कबीर :—

"कबीरा इश्क़का माता दुईको दूर कर दिलसे,
जो चलना राह नाज़ुक है हमन सिर बोझ भारी क्या।"

लिखकर हिन्दीके कवि कहे जाते हैं,

वहींपर आबरू :—

"नैनसे नैन जब मिलाय गया,
दिलके अन्दर मेरे समाय गया।"

यकरंगः—

"यकरंग पास और सजन कुछ नहीं बिसात,
रखता है यह दो नैन कहो तो नज़र करे।"

हातिमः—

"जबसे तुम्हारी आँखें आलमको भाइयाँ हैं,
तबसे जहाँमें तुमने धूमे मचाइयाँ हैं।"

तथा सौदा :—

"सावनके बादलोंकी तरहसे भरे हुए,
यह वह नयन है जिससे कि जंगल हरे हुए।"

लिखकर भी उर्दू के शायर माने जाते हैं। जिसने उसी हिन्दुस्थानी ज़ुबानको देवनागर-अक्षरोंमें लिखा, वह हिन्दीका कवि कहलाया और जिसने उसे फ़ारसी लिखावटमें रखा, वह उर्दू का शायर कहा जाने लगा।

खड़ी बोली तो उस वक्त सिर्फ़ मेरठके आसपासकी बोली थी। वहाँ न तो ऐसा कोई राजा या रईस था, जो खड़ी बोली-का प्रेमी बनकर साहित्य तैयार कराता और न ब्रजभाषाके रहते कोई हिन्दीका कवि खड़ी बोलीमें कविता ही करना चाहता था। उर्दू के लिये यह बात न थी। लश्करी ज़ुबान होनेके कारण वह मुसलमानी सेनाके साथ देश भरमें फैल गई थी। धीरे-धीरे मुसलमानी दरबारोंने भी उसे अपनाना शुरू कर दिया था और उसके शायरोंकी अच्छी क़द्र भी होने लगी थी। यही बात है कि

पिछले ज़मानेमें खड़ी बोली पड़ी रह गई और उर्दू ने बाज़ी मार ली।

उर्दू की सजावट अकसर मुसलमान शायरोंके ज़िम्मे रही। वे संस्कृतके बजाय अरबी-फ़ारसीके आलिम फ़ाज़िल रहा करते थे। इसीलिये उर्दू बीबीने हिन्दुस्थानी रँग ढँग छोड़कर एकदम फ़ारसी लिबासमें रहना शुरू कर दिया और यह बात इस हद्तक पहुँच गई कि वह एक ग़ैर मुल्ककी ज़ुबान मालूम पड़ने लगी। लैला-मजनू और शीरीं-फरहाद ही इश्क़के आदर्श बने। जामे जम, तख़्ते सुलेमाँ, हौज़े क़ौसर, दारा फरीदूँ, काबा और क़िब्लेनुमाके दास्तानसे ही शायरी आरास्ता हुई। फ़स्ले बहारी और नालए-अन्दलीबका चर्चा यहाँतक छिड़ा कि बस जान पड़ने लगा कि फ़ारिसका कोई चमन-ए-बेनज़ीर यहाँ उड़ाकर ले आया गया है।

उर्दू शायरीकी सबसे बड़ी ख़ासियत है, 'बुतपरस्ती'। यह बुतपरस्ती पत्थर या मिट्टीके बने हुए बुतोंकी पूजासे एकदम अलग है—एकदम दूर है। यह है पत्थरके-से जिगरवाले बुतकी परस्तिश। इस परस्तिशमें ख़ास मज़ा है। महबूब या माशूक़ संगदिल बना बैठा रहता है और बेचारा आशिक़ उसके लिये तड़प तड़प कर जान तक दे देता है। इश्क़ हक़ीक़ीमें—ईश्वर प्रेममें—ठीक यही तो होता है। अगर महबूब या माशूक़ भी आशिक़ोंकी तरह फ़िदा होने लग जाय तो फिर इश्क़में यह ख़ूबी कहाँ रहेगी! उसकी संगदिली हीसे तो आशिक़के दिलकी तड़प

बढ़ती है और तभी तो हिज्रकी आतिशमें तप तपकर उसका इश्क़ एकदम कुन्दनका डला बनकर निकलता है।

कौन कह सकता है कि इस बुतपरस्तोमें बजाय इश्क़ हक़ीक़ीके एकदम इश्क़मजाज़ीका—सांसारिक प्रेमका—चर्चा है? शायरी कोई फ़िलसफ़ा नहीं। इसलिये इसमें इश्क़ हक़ीक़ीकी बात कई जगह ज़रा लपेटके साथ कही गई है। हक़ीक़ी इश्क़ने मजाज़ी इश्क़का नक़ाब डाल लिया है। शायरोंको इस सच्चे इश्क़की बेपरदगी पसन्द नहीं। है भी ठीक; क्योंकि वह अगरचे :—

"शोख़ इतना है कि हर घरमें है जलवा आशकार।"

फिर भी उसमें :—

"है हिजाब इतना कि सूरत आजतक नादीदः है।"

परदे हीमें तो पोशीदगी है और इन्सानका दिल पोशीदगी ही का राज़ खोलनेके लिये छटपटाया करता है। इसलिये सच्ची शायरी इसीमें है कि इश्क़ हक़ीक़ी रहे ज़रूर लेकिन बस, पोशीदा तौरपर। हिन्दीके कवियोंने भी इसी रास्तेको अपनाया है। उनका दोहा :—

"सर्व ढके नहिं जानियत, उघरे होत कुवेस।
अर्ध ढके सोहैं सदा, कवि-बानी, कुच, केस॥"

आम तौरसे मशहूर है। क्या सूरदासने शृङ्गारकी ओटमें भक्ति नहीं बताई है? क्या मलिक मुहम्मद जायसीने पद्मावतमें सिर्फ़ राजारानीके प्रेमकी बात ही लिखनी चाही थी? क्या कबीरदासने

"खेल ले नंहरवा दिन-चार" में सिर्फ़ एक नई नवेली नायिकाको ही नसीहत देनेका इरादा किया है ?

सूफ़ियाना शायरीका मतलब ही यह है कि बुतपरस्तोमें हक़परस्तोका जलवा दिखा दिया जाय। मीरने क्या खूब कहा है :—

"परस्तिशकी याँ तक कि ऐ बुत तुझे,
सबोंकी नज़रमें ख़ुदा कर चले।"

हरएक मज़हबके आलिमोंका कहना है कि फ़नाकी मंज़िलें ख़त्म करनेपर ही बक़ा हासिल होती है। ये मंज़िलें तय करनेमें इश्क़े-बुताँसे बड़ा सहारा मिलता है। क्योंकि आख़िर बुत तो बुत ही हैं। वहाँसे हमारे इश्क़की दाद मिलना मुश्किल है। हमीं अलबत्ता ग़म खाते और ख़ूने जिगर पीते चले जायँ। इसीलिये उर्दू शायरोंने शमा और परवाना, गुल और बुलबुल, क़ातिल और मक़तूल, मर्ज़ और गोरकी बातोंको बहुत पसन्द किया है। तुलसीदासजीका चातक—वह चातक जिसके लिये उन्होंने कहा है :—

"जलदु जनम भरि सुरति बिसारउ।
जाचत जलु पवि पाहन डारउ॥
चातक रटनि घटे घटि जाई।
बढ़े प्रेम सब भाँति भलाई॥
कनकहिं बान चढ़े जिमि दाहे।
तिमि रघुपति पद प्रेम निबाहे॥"

क्या उर्दू शायरोंके परवानेके ढंगका नहीं है ? जिनके सीनेमें

दिल है और दिलमें आहका मज़ा लेनेकी क़ूवत है, वे ही लोग समझ सकते हैं कि बुलबुलके नालओ-फ़रयादमें, परवानेके जल कर मर मिटनेमें और आशिक़ोंकी तड़पमें कितनी ख़ूबी है! आहों और आँसुओंकी क़ीमत हर कोई नहीं समझ सकता और जो इनकी क़ीमत समझता है, वह वस्लसे बढ़कर हिज्रकी इज़्ज़त करता है।

कुछ शेर नमूनेके तौरपर पेश किये जाते हैं:—

महफ़िलके बीच सुनके मेरे सोज़े दिलके हाल,
बे-इख़्तियार शमाके आँसू ढुलक पड़े।

—मज़हर।

ऐ आँसुओ न आवे कुछ दिलकी बात लबपर,
लड़के हो तुम कहीं मत अफ़शाय राज़ करना।

—दर्द।

इस सिवा खोज न पाया तेरे दीवानेका,
क़तर-ए-ख़ूँ है मगर ख़ारे बयाबाँमें लगा।

—सोज़।

लगती नहीं पलकसे पलक वस्लमें भी आह,
आँखोंको पड़ गया है मज़ा इन्तज़ारका।

—ज़ुरअत।

कैसे बढ़िया कलाम हैं। इन्हें पाकर कौन ज़ुबान अपनेको ख़ुशनसीब न समझेगी? कौन ऐसा ज़िन्दादिल होगा जो इन शेरोंपर सौ जानसे फ़िदा न हो जाय! हिन्दीवाले इन्हीं भावोंकी

चाशनी चखनेके लिये तो आज उर्दू के दीवान हिन्दीमें छपवाना चाहते हैं।

उर्दू की दूसरी ख़ासियत है उसकी मुहावरेदारी। मुद्दतोंसे बड़े बड़े उस्तादोंने उसपर तराश-ख़राश की है और मुहावरोंका ऐसा ज़ोरदार रंग चढ़ा दिया है कि मामूलीसे मामूली बात उस रंगके सबब एकदम भड़कीली और दिलमें चुभनेवाली बन जाती है। उर्दू शायरोंकी तमन्ना है :—

"वाहिद दे वह ज़ुबान जो दिलपर असर करे।"

शेरकी तारीफ़में मौलाना हसरत मोहानी साहब फ़रमाते हैं:—

"शेर दर असल है वही हसरत,
सुनते ही दिलमें जो उतर जाये।"

उनकी यही ख़्वाहिश रही है कि शेर सुनते ही लोगोंकी तबीयत फड़क उठे, कलेजेमें हलचल पैदा हो जाय, दिल लोटपोट हो उठे। इसीलिये उन्होंने ज़ुबानको यहाँतक माँजा है कि वह एकदम चाँदी-सी निखर गई है।

ज़रा नीचेके शेरोंमें मुहावरेदारीकी बहार देखियेगा :—

दिलके आईनेमें है तसवीरे यार,
जब ज़रा गरदन झुकाई देख ली।

—मीर हसन।

तुम मेरे पास होते हो गोया,
जब कोई दूसरा नहीं होता।

—मोमिन।

हमने जाना था कि क़ासिद जल्द लायेगा ख़बर,
क्या ख़बर थी जाके वाँ ख़ुद बेख़बर हो जायगा।

—ज़ौक़।

उग रहा है दरो-दीवारसे सब्ज़ा ग़ालिब,
हम बयाबाँमे हैं और घरमें बहार आई है।

—ग़ालिब।

इस मुहावरेदारीकी ख़ूबी, इस जादू-बयानीका जौहर, देखकर शायरोंकी क़लम चूम लेनेका दिल होता है। मामूलीसे मामूली बातको भी इन मुहावरोंने कितना ऊँचा चढ़ा दिया है! सीधे-सादे कलाम पर चार-चार चाँद लग गये। शेर एकदम आसमान पर चढ़ गया। इन मुहाविरोंको अपनानेके लिये अगर हिन्दी-प्रेमी छटपटा रहे हैं तो कोई ताज्जुब नहीं।

शायरी कोई मामूली बात नहीं है। बड़े बड़े शायर लोग जिगरका ख़ून पी पीकर लाल उगला करते हैं। उनका एक एक शेर एक एक लाख अशरफ़ियोंसे बढ़कर क़ीमती कहा जा सकता है। मुझे न तो उर्दूका पूरा इल्म ही है न मैं कोई बड़ा शायर होनेका दम भरता हूँ। फिर भी उर्दूकी ग़ज़लें पढ़कर मुझे जो शौक़ हो आया और उसके सबब मैंने भी जो चन्द ग़ज़लें तैयार कर दीं, उन्हें लोगोंकी नज़रोंसे हरदमके लिये छिपा रखना मैंने मुनासिब न समझा। ये अच्छी हुई हैं या ख़राब, ये सबकी सब उर्दू ज़ुबानके चमनिस्तानमें एकदम खादका काम देंगी, या इनके कुछ शेर गुलाब और चमेली बनकर अपनी कुछ महक भी फैला

सकेंगे, इसका फ़ैसला तो मैं पढ़नेवालोंपर ही छोड़ता हूँ—क्योंकि इसपर कुछ कहनेका मुझे कोई हक़ नहीं। हाँ, इतना ज़रूर कहूँगा कि अपने हिन्दी-प्रेमके सबब मैंने अपनी यह चौथी तसनीफ़ भी हिन्दी हीमें छपवाई है ओर हिन्दी पाठकोंके सामने ही पेश किया है। उर्दू की किताब है, इसलिये इस दीबाचेकी ज़ुबान भी कुछ उसी ओर झुक पड़ी है। उम्मीद है कि इसके लिये मुझे माफ़ी बख़्शी जायगी।

रायगढ़
गुरु पूर्णिमा, १९८९ वि० } राजा चक्रधरसिंह।

श्रीमान राजा चक्रधरसिंह (रायगढ़ नरेश)

जोशे फ़रहत

या

प्रेम-पीयूष ।
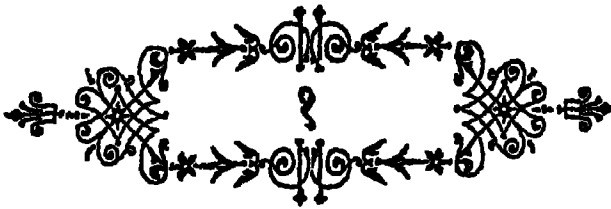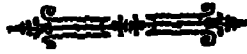
उलझ क्यों रहा ओसकी बूँदपर है।
उधर देख ख़ूबीका दरिया जिधर है॥

भटकता है नाहक़ ही दैरो हरममें।
नज़ारा उसीका ये पेशे नज़र है॥

उसीके सहारे टिका आसमाँ है।
उसीके उजालेसे रौशन क़मर है॥

समा जाय वहशतका नक़शा कुछ ऐसा।
न आये नज़र बुत किधर रब किधर है॥

वही कूए जानाँमें होता है दाख़िल।
हुआ चाक दिल या कटा जिसका सर है॥
जो हो देखना तुमको फ़रहत तो देखो।
छिपा परदये दिलमें वह जलवागर है॥

जोशे फ़रहत
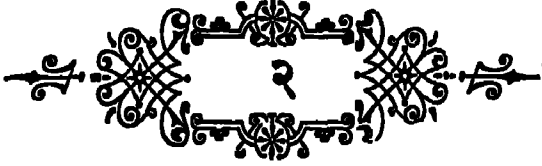
तुम्हारी नज़रका अजब माजरा है।
जफ़ा है, सितम है, क़हर है, बला है॥
सनम ! तेरे रुख़का जमाल है कुछ ऐसा।
शफ़क़ है, सहर है, क़मर है, शमा है॥
क़फ़स छोड़ तायर न क्यों शाद होवे।
चमन है, महक है, फ़िज़ा है, हवा है॥
बताऊँ मैं क्योंकर तेरा हिज्र ज़ालिम।
क़हर है, अजल है, क़यामत है, क्या है॥
लगे क्यों न फ़रहत का दिल इस जहाँमें।
कि साक़ी है, साग़र है और दिलरुबा है॥

जोशे फ़रहत

अज़लसे है दिलमें ठिकाना किसीका ।
बना रहता है आना जाना किसीका ॥

बशरको है लाज़िम करे ख़ाकसारी ।
कि अच्छा नहीं सर उठाना किसीका ॥

इधर मैं अकेला हूँ क़िस्मत तो देखो ।
उधर हो रहा है ज़माना किसीका ॥

न भूलेगा महशरमें भी देख लेना ।
मुझे ख़ाकमें यों मिलाना किसीका ॥

कहूँ क्या कि फ़रहत अजब था करिश्मा ।
सरे तूर जलवा दिखाना किसीका ॥
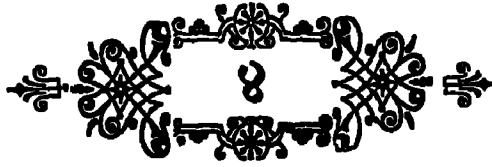
किस लिये है ये रश्के हूर हिजाब।
किसी शैदासे बे-क़सूर हिजाब॥

हुस्ने ख़ूबीसे फ़ैज़ हो आलम।
है मुनासिब कि हो ये दूर हिजाब॥

आप इन्साफ़ तो करें दिलमें।
अपने आशिक़से क्या ज़रूर हिजाब॥

कौंदी बिजली झपक गईं आखें॥
हुआ मूसाको कोहे-तूर हिजाब॥

पहले अपनी तरफ़ नज़र कर ले।
बन न ऐ चश्म ना-सबूर हिजाब॥

देखिये गिर पड़ेगा संगे जफ़ा।
शीशये दिल करेगा चूर हिजाब॥

आके फ़रहत को कीजिये शादाँ।
इससे ज़ेबा नहीं हुज़ूर हिजाब॥

जोशे फ़रहत

५

देख ले गर रूए तावाँ आफ़ताव।
रौशनी पर हो न नाज़ाँ आफ़ताव॥
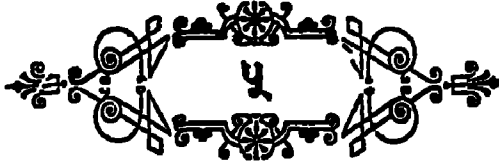
आरिज़े रौशनसे रौशन हो गया।
क्यों न माने तेरा अहसाँ आफ़ताव॥

अक्से रुख़सारे सनमके रूवरू।
है चिराग़े ज़ेर दामाँ आफ़ताव॥

है हिलाले ईद अवरूकी कशिश।
जिस पै सौ जाँसे है क़ुर्वां आफ़ताव॥

जलवागाहे हुस्न-जानाँमें वना।
सूरते आईना हैराँ आफ़ताव॥

आशिक़ोंके दाग़ दिल देखे अगर।
भूल जाये शौकतो शाँ आफ़ताव॥

सामने मज़नूँकी आवोतावके।
होगा क्या फ़रहत फ़रोज़ाँ आफ़ताव॥
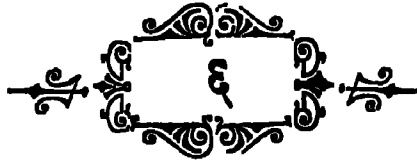
नज़र आ गया रूए ज़ेबा किसीका।
समाया है आँखोंमें जलवा किसीका॥
जो उस ज़ुल्फ़ पेचाँका मारा हुआ है।
नहीं उसके सरमें है सौदा किसीका॥
बुतोंमें भी मैं ढूंढ़ता हूँ ख़ुदाको।
मेरा दिल नहीं और जोया किसीका॥
जिगरमें मेरे चुटकियाँ ले रहा है।
तसव्वर सितमगर है ऐसा किसीका॥
तू अपनी ख़बर ले मेरी क्या है ज़ाहिद।
बलासे तेरी मैं हूँ बन्दा किसीका॥
गिराता है, बस बिजलियाँ दिलके ऊपर।
निगह फेरकर मुसकराना किसीका॥
मेरा नाम है इश्क़बाज़ोंमें फ़रहत।
बनाया है क़िस्मतने शैदा किसीका॥
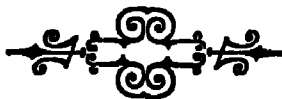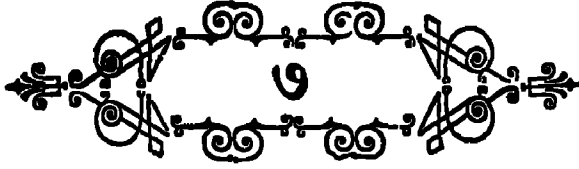
खटकता है दिलमें समाना किसीका ।
क़यामत है सज-धजके आना किसीका ॥
जिगर तीरे मिज़गाँसे चलनी हुआ है ।
अबस अब है ख़ंजर चलाना किसीका ॥
मसलकर दिलोंको रँगे हाथ उसने ।
क़यामत है मेंहदी लगाना किसीका ॥
शमा रात भर जलके कहती है देखो ।
शबे हिज्र आँसू बहाना किसीका ॥
गिराता है लाखोंके सीने पै बिजली ।
अदासे ज़रा मुसकराना किसीका ॥
वहाँ सैरे दरिया यहाँ जी पै आफ़त ।
डुबोता है मुझको नहाना किसीका ॥
समझते हैं अच्छी तरह हम भी फ़रहत ।
न आनेका सारा बहाना किसीका ॥

८
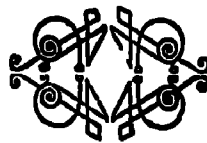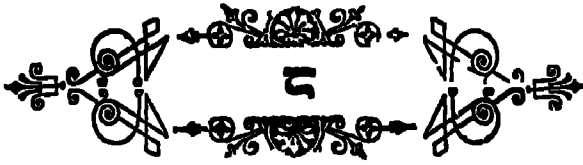
वो तारे नज़रसे जिगर बाँधते हैं।
वो गुलसे ; बुलबुलके पर बाँधते हैं॥
उलट करके घूँघट ये गुंचे महकसे॥
अदाये नसीमे सहर बाँधते हैं॥
इधर अब्रे बाराँमें होती है हलचल।
जो वह गेसुओंको उधर बाँधते हैं॥
हटाकर नक़ाब आसमाँको जो देखें।
तो समझो कि शम्सो क़मर बाँधते हैं॥
गुलोंमें पिरोनेको शबनमके मोती।
खिली चाँदनोसे शजर बाँधते हैं।
ग़ज़बकी है ख़ूबी कि बस इक झलकसे।
ज़मानेमें सबकी नज़र बाँधते हैं॥
सख़ुनगोईके शौक़में हम पे फ़रहत !
मज़ामीन भी बेशतर बाँधते हैं॥

जोशे फ़रहत

किये जा ऐ ज़ालिम ! सितम धीरे धीरे ।
सहेंगे तेरे ज़ुल्म हम धीरे धीरे ॥
झड़ी देखकर मेरे अश्कोंकी शायद ।
हुआ अब्रे-बाराँ भी कम धीरे धीरे ॥
शिकायत नहीं अर्ज़ ही कर रहा हूँ ।
मेरे हालपर कर करम धीरे धीरे ॥
सताया है तो और भी कुछ सताले ।
मिटा दे मगर दिलका ग़म धीरे धीरे ॥
हज़ारों मरीज़ोंको बेदम बनाकर ।
चला आता है वह सनम धीरे धीरे ॥
दिया साग़रे इश्क़ साक़ीने ऐसा ।
भुला बैठे हम जामे जम धीरे धीरे ॥
लिखे हुस्नपर तेरे मज़मून क्या क्या ।
चला जब कि फ़रहत क़लम धीरे धीरे ॥

जोशे फ़रहत

१०

हर एक घर मंज़िले जानाना देखा।
कहीं काबा कहीं बुतख़ाना देखा॥

कोई फ़रहाद है कोई है मजनूँ।
जिसे देखा तेरा दीवाना देखा॥

बहाए शमाने आँखोंसे आँसू।
अगर जलता हुआ परवाना देखा॥

मिला मस्तोंको क्या दौरे जहाँमें।
फ़क़त टूटा हुआ पैमाना देखा॥

चले आये जिगर थामे हुए वो।
यह जोशे नालये रिन्दाना देखा॥

उजाड़ा इश्क़ने दिलके मकाँको।
पड़ा यों ही इसे वीराना देखा॥

निगाहे मस्त साक़ीका असर था।
दिले फ़रहत को जो मस्ताना देखा॥
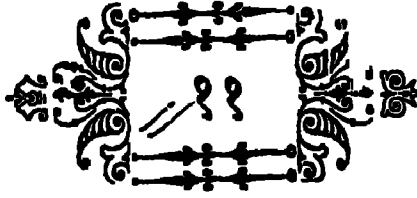
नज़र उस शोख़पर जबसे पड़ी है।
लबोंपर ज़िक्र उसका हर घड़ी है॥

जो देखा मैंने तो उसके चले तीर।
क़ुसूर इतना, सज़ा कितनी कड़ी है॥

तमन्ना कौनसे है दीदे गुलकी।
खिली गुलशनमें जो नरगिस खड़ी है॥

घटा छाई नहीं उस बुतके घरपर।
किसीकी आरज़ू आकर अड़ी है॥

डसेगी क्या किसीको बनके नागन।
ये चोटी किस लिये पीछे पड़ी है॥

करें तारीफ़ क्या फ़रहत सख़ुनकी।
ग़ज़ल है यह कि मोतीकी लड़ी है॥
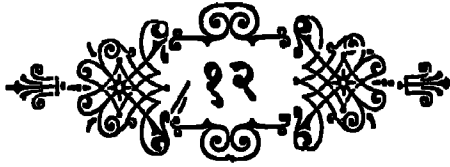
ज़िन्दगीसे अब तो घबराता है दिल ।
क़त्लकी ख़्वाहिशमें इतराता है दिल ॥
जानको बेचैन करके इश्क़में ।
मौतका पैग़ाम पहुँचाता है दिल ॥
आप हो बेसब्र बन रोता है फिर ।
आप ही अपनेको समझाता है दिल ॥
जिसकी फ़ुरक़तमें जला जाता हूँ मैं ।
उसके आगे आके शरमाता है दिल ॥
तर्क करके आबोदाना हिज्रमें ।
अश्क़ पीता और ग़म खाता है दिल ॥
जानसे बेज़ार हो जाता है वह ।
जब बुते बेपीर पर आता है दिल ॥
सुनता है फ़रहत के जिस दम ये कलाम ।
रंग महफ़िलमें अजब लाता है दिल ॥

शोलारूकी यादमें जलता है दिल।
जो लिखा तक़दीरका मिलता है दिल॥

रंजसे मुरझा गई दिलकी कली।
देखना ये है कि कब खिलता है दिल॥

याद किसकी चुटकियाँ हैं ले रहीं।
कौन चुपकेसे मेरा मलता है दिल॥

होशमें है पर है कुछ बेहोश-सा।
नाउमीदीकी तरफ़ चलता है दिल॥

वस्लकी उम्मेद जब फ़रहत न हो।
इस तरह क्या फूलता फलता है दिल॥
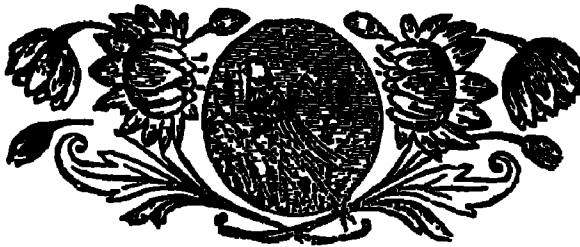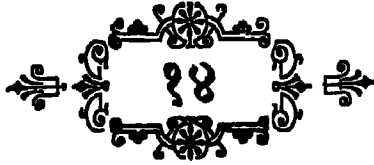
दस्ते क़ातिलमें था लहू मेरा।
रंग लायेगा क्या लहू मेरा॥
है फ़लकमें न आफ़ताब अयाँ।
बनके क़ासिद उठा लहू मेरा॥
हर तरफ़ है बहार लालीकी।
मैकदेमें भरा लहू मेरा॥
आज रो-रोके रगमें बहता है।
किस तरह ग़मज़दा लहू मेरा॥
ग़मे जानाँमें मैंने दम तोड़ा।
सूए बुत बह चला लहू मेरा॥
सुर्ख़ जामा सनमने पहना है।
उससे लिपटा है जा लहू मेरा॥
किश्तिये उम्रकी इलाही ख़ैर।
बहरमें है भरा लहू मेरा॥
पाँवमें यारके लगा देना।
है हिनामें भरा लहू मेरा॥

देख लें वह भी नींदसे उठकर।
है फ़लकमें सबा लहू मेरा॥

आज शायद इधर वो आये हैं।
क़ब्रसे भी बहा लहू मेरा॥

बज़्मे दुश्मनमें मैकशी फ़रहत।
मय है शीशेमें या लहू मेरा॥
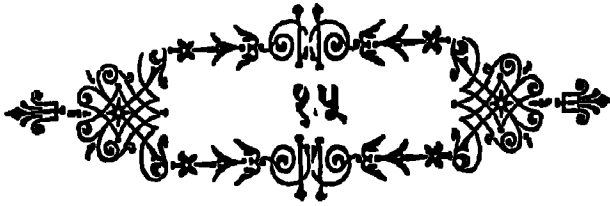
इश्क़में हार भी है दार भी है।
साथ उसके विसाले यार भी है॥

लुत्फ़ चलकर उठायें गुलशनमें।
आज बुलबुल भी है, बहार भी है॥

वस्लो फ़ुरकत हैं दोनों उल्फ़तमें।
फूल भी हैं चमनमें ख़ार भी है॥

गालियाँ देके मुसकरा देना।
लब पै इनकार भी है प्यार भी है॥

एक चितवनने दिलको छेद दिया।
तीर दिलके जिगरके पार भी है॥

जिसने दिलमें लगाई आतिश है।
आज उसका ही इन्तज़ार भी है॥

इतना फ़रहत ख़याल है लाज़िम।
नीम बिस्मिल है, जाँ-निसार भी हैं॥
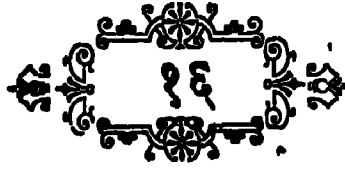
बुतको राज़े मुहब्बत बतायेंगे हम।
दिल किसी दिल-शिकनसे लगायेंगे हम॥
आँखमें जो बसा वह कहीं गर मिले।
तो सर आँखों पै उसको बिठायेंगे हम॥
वार पर वार करता चला जा सनम!
उफ़ तलक अब ज़ुबाँ पर न लायेंगे हम॥
रात दिन एक ख़ुरशीद रू जिसमें हो।
किस तरह ऐसे दिलको सुलायेंगे हम॥
गर हुए हिज्रमें मिस्ले शबनम फ़ना।
तो घटा बन उसी घर पै छायेंगे हम॥
कूए जानाँमें अपना ये दिल ढूँढ़ने।
है इरादा कि इक रोज़ जायेंगे हम॥
है तमन्ना मिलेंगे जहाँ क़द्रदाँ।
शेर फ़रहत वहाँपर सुनायेंगे हम॥
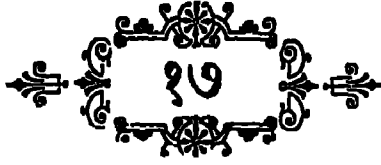
राज़े दिल आज उनको सुनायेंगे हम ।
राह उल्फ़तकी उनको दिखायेंगे हम ॥

रूठ जायेंगे गर वे, मनाकर उन्हें ।
अपने पहलूमें लाकर बिठायेंगे हम ॥

क़ैस फ़रहाद भी जो नहीं कर सके ।
अपनी आहोंसे वह कर दिखायेंगे हम ॥

बे-निशाँ होके दिलमें करेंगे निशाँ ।
पिसके मिस्ले हिना रंग लायेंगे हम ॥

संग दिल भी तो फ़रहत पिघल जायेगा ।
अपना सोज़े जिगर जब दिखायेंगे हम ॥

१८

वह ये कहते हैं तुझको जलायेंगे हम।
देखना किस तरह मुस्करायेंगे हम॥
मोज़िजा अपना सबको दिखायेंगे हम।
मार डालेंगे और फिर जिलायेंगे हम॥
वह मिटायेंगे मुझको, मिटेंगे, मगर।
देखना मिटके क्या रंग लायेंगे हम॥
हम बुतोंपर मिटे कुछ न हासिल हुआ।
अब ख़ुदापर ख़ुदीको मिटायेंगे हम॥
बे-असर होगा फ़रहत न ये रुक़ने दिल।
रोके ख़ुद दूसरोंको रुलायेंगे हम॥
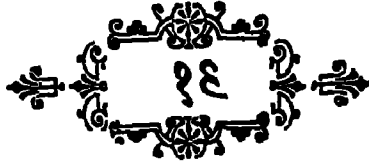
जनाबे इश्क़ जो दिलमें मुक़ाम कर बैठे।
तो रिन्द दैरो हरमको सलाम कर बैठे॥
वो बातों बातोंमें दिल आह! छीन लेते हैं।
हज़ार इसका कोई इन्तज़ाम कर बैठे॥
शराब पीनेसे तौबा है ज़ाहिदो कैसी?
हलाल चीज़को नाहक़ हराम कर बैठे॥
छुरी कहूं कि कटारी निगाह क़ातिलकी।
जिधरको देख लिया क़त्लेआम कर बैठे॥
न आये हज़रते दिल कूए इश्क़से वापिस।
ग़ज़ब हुआ कि वहींपर क़याम कर बैठे॥
मिला है फ़ैज़ हमें इश्क़से ये ऐ फ़रहत।
कि इश्क़बाज़ोंमें हम अपना नाम कर बैठे॥
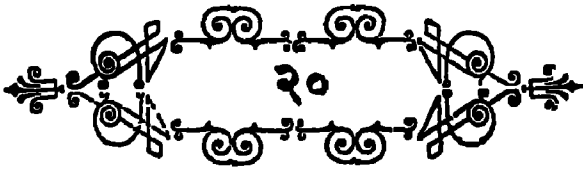
यह न पूछा कभी बीमारका हाल अच्छा है।
क्या इरादा है कि मिट जाये वबाल अच्छा है॥
दिल जो लेते हो तो कुछ दिलका लगाना सीखो।
यह न समझो कि मिला मुफ़्तका माल अच्छा है॥
आप भी थे मेरे क्या चाहनेवाले कोई।
मेरे मरने पै मुझीसे ये सवाल अच्छा है॥
बेवफ़ा हमने ज़मानेमें बहुत देखे हैं।
जो वफ़ादार हो वह हुस्नो जमाल अच्छा है॥
हश्रमें हसरतें पूरी मेरी होंगी फ़रहत।
दिलके समझानेको हरदम ये ख़याल अच्छा है॥
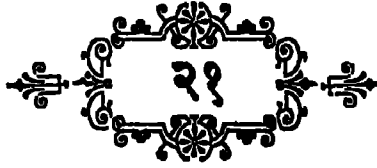
नया सुरूर नयी मै है नया प्याला है।
नई बहार नये रंगका उजाला है॥

खिला है कौन-सा गुल, किसकी महक फैली है।
चमनमें लुत्फ़ए बादे सबा दुबाला है॥

तुम्हें जो देखा तो ख़ादिम हुआ, निसार हुआ।
हर इकके दिलमें: ग़ज़बका ये जादू डाला है॥

मिलाये आँखें तो दिलमें ज़हर सा चढ़ जाये।
शबे-दराज़ हैं गेसू कि काला पाला है॥

यही सदा है उठी ज़र्रे ज़र्रेसे सुन लो।
कि आज बज़्ममें फ़रहत का बोल बाला है॥
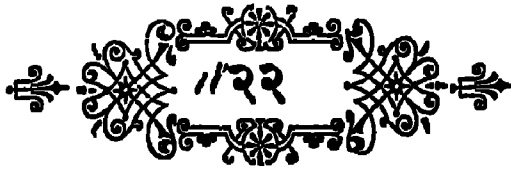
शबे फ़िराक़में भी यादे यार बाक़ी है।
सहर है होनेको पर इन्तज़ार बाक़ी है॥

सवाब होगा मुझे फिरसे मै पिला साक़ी।
नशा उतर चुका लेकिन ख़ुमार बाक़ी है॥

न जायें आप कलेजेमें चुटकियाँ लेकर।
अभी तो दिलकी हविस बेशुमार बाक़ी है॥

हटा न हल्क़से तलवार अभीसे ऐ क़ातिल।
अभी मरीज़में कुछ जानेज़ार बाक़ी है॥

इसे न पैरसे ठुकरा ऐ सितमगर आकर।
शहीद मर मिटा ख़ाली मज़ार बाक़ी है॥

कभी तो आयेगी गुल लेके फिर बहार यहाँ।
चमनसे आज भी बुलबुलका प्यार बाक़ी है॥

हुए रक़ीब तेरे ज़ेर इस तरह फ़रहत।
गई वो शान फ़क़त इन्किसार बाक़ी है॥

हुआ है ख़ाक मगर ख़ाकसार बाक़ी है।
मुराद मर मिटी उसका मज़ार बाक़ी है॥

तुम्हारा नाम सुना दर्द उठके यों बोला।
तुम्हारे इश्क़की यह यादगार बाक़ी है॥

शबे फ़िराक़में खो बैठे लुत्फ़ जीनेका।
रहा है क्या फ़कत उजड़ा दयार बाक़ी है॥

गुले विसालको सूखे हुए हुई मुद्दत।
गई बहार पै फ़ुरक़तका ख़ार बाक़ी है॥

पिला दे फिरसे ऐ साक़ी मुझे मये दीदार।
उतर चुका है नशा पर ख़ुमार बाक़ी है॥

अभी अभी ही तो आये हो उठ चले क्योंकर।
अभी तो दिलकी हविस बेशुमार बाक़ी है॥

सहर है दूर शबे वस्लकी अभी फ़रहत।
अभी तो यारसे बोसो कनार बाक़ी है॥

२४
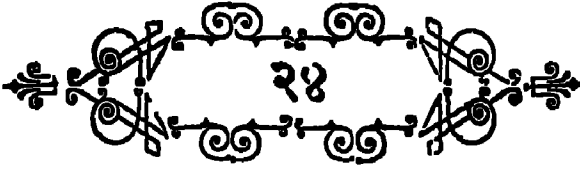
कभी माशूक़ भी आशिकसे वफ़ा करते हैं ?
पहले करते हैं वफ़ा पीछे जफ़ा करते हैं ॥

रूठ जाते हैं शबे वस्ल जो आती है कभी ।
जब मनाओ तो बहुत नाज़ किया करते हैं ॥

इम्तिहाँ किसका है मंजूर मेरे क़ातिलको ।
ख़ंजरे नाज़से किस किसको फ़ना करते हैं ॥

तिरछी चितवन हैं चढ़ी है वो कमाने अबरू ।
तीर चलने दो ज़मानेको फ़ना करते हैं ॥

एक दो हों तो गिनाऊँ मैं तुम्हें ऐ फ़रहत ।
सैंकड़ो ज़ुल्मो सितम माहेलक़ा करते हैं ॥

नौरतन फ़रहत

२५

जफ़ाके दाँव उन्हें याद हैं अच्छे अच्छे।
हजारों हो चुके बरबाद हैं अच्छे अच्छे॥

हो क़ैद खुद-बखुद इस दिलके बन्द शीशेमें।
कितने आबाद परीज़ाद हैं अच्छे अच्छे॥

न मिली पर न मिली इश्क़की कुंजी अबतक।
गर मिटे क़ैस औ फ़रहाद हैं अच्छे अच्छे॥

हविस है मरनेकी, मुझको न किसीका शिकवा।
है दार खूब तो जल्लाद हैं अच्छे अच्छे॥

आज क़िस्मतसे जो मुझपर तू मेहरबान हुआ।
करते किस शौक़से इमदाद हैं अच्छे अच्छे॥

ख़्वाहिशें गर न मिटी ज़र ज़मीन ज़न है अबस।
शाद हो होके भी नाशाद हैं अच्छे अच्छे॥

फड़क न दिलकी गई यह न गिरफ़्तार हुआ।
हार कर थक गये सैयाद हैं अच्छे अच्छे॥

है लुत्फ़ आपकी ग़ज़लोंमें अजब ऐ फ़रहत।
वगरना बज़्ममें उस्ताद हैं अच्छे अच्छे॥

कूचए इश्क़में बरबाद हैं अच्छे अच्छे।
मुब्तिलाये ग़मे बेदाद हैं अच्छे अच्छे॥

चढ़के उतरा न कभी मारे मुहब्बतका ज़हर।
गो कि आलममें भी उस्ताद हैं अच्छे अच्छे॥

नक़शा मुख ज़ारका वहज़ाद न मानीसे खिंचा।
जिनको नक्क़ाशीके फ़न याद हैं अच्छे अच्छे॥

फ़स्दसे भी न गया सरसे जुनूँका सौदा।
हिकमतें कर रहे फ़स्साद हैं अच्छे अच्छे॥

क़ैदिये ज़ुल्फ़की जंज़ीरोंके हल्के न कटे।
काट हैराँ हुए हद्दाद हैं अच्छे अच्छे॥

इक फ़क़त मैं ही नहीं तीरे नज़रका बिसमिल।
सैद इसके हुए सैय्याद हैं अच्छे अच्छे॥

मेरे मज़मूँका तो फ़रहत है ज़माना शैदा।
नज़्मकी देते मेरी दाद हैं अच्छे अच्छे॥
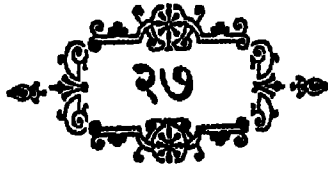
आबे शमशीर जफ़ा आप पिये लेते हैं।
सारी दुनियाँकी बला सर पे लिये लेते हैं॥
दर्द दिलको मैं समझता हूँ दवा है दिलकी।
चारागर मुफ़्त मेरी जान लिये लेते हैं॥
डर हैं क़ातिल न क़यामतमें कहीं हो रुसवा।
इस लिये आज लबे ज़ख़म सिये लेते हैं॥
अल्ला अल्ला मेरे नालोंकी रसाई देखो।
उँगलियाँ कानोंमें मलकूत दिये लेते हैं॥
दिल मेरा लेके इक अन्दाज़से यूँ फ़रमाया।
टूटा फूटा है मगर ख़ैर, लिये लेते हैं॥
जोशे वहशत हैं तरक्क़ी पे हमारा फ़रहत।
तार तार अपना गरेबान किये लेते है॥
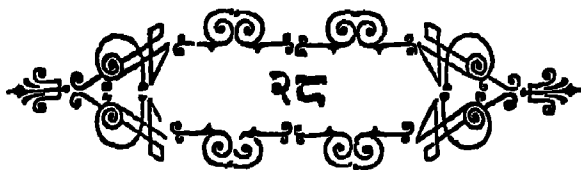
वह सताकर; दिले बेताबको क्या लेते हैं।
हाँ, जो लेते हैं तो बेकसकी दुआ लेते हैं॥

दोश पर दाम वो काकुलका बिछा लेते हैं।
तायरे दिलको परीज़ाद फँसा लेते हैं॥

हाकिमे किशवरे दिल बुत हैं ये अल्लाह अल्लाह!
अपना सिक्का जो ज़माने पै बिठा लेते हैं॥

उनको आना नहीं होता जो शबे वादा कभी।
मेंहदी पावोंमें सरेशाम लगा लेते हैं॥

मेरे मज़मून हैं मज़मून निराले फ़रहत।
हर सुख़नवरको ये हैरान बना लेते हैं॥

२६

ज़ुल्फ़के जालमें नज़रोंको फँसा लेते हैं।
हँसते हँसते वो मेरे दिलको चुरा लेते हैं॥

किस ग़ज़बकी है भरी हुस्नकी ख़ूबी उनमें।
सारी ख़िलक़तको भी ख़ादिम वो बना लेते हैं॥

विरतये अश्कमें हो जाते हैं हम ग़र्क़ कभी।
आतिशे :आहसे हम शमआ जला लेते हैं॥

वस्लका लुत्फ़ किसी और को होगा हासिल।
हिज्रका हम तो शबो रोज़ मज़ा लेते हैं॥

मैं मनाता हूँ कि आला ही रहे उनका उरूज़।
मेरी पामालीसे क्या शान वो पा लेते हैं॥

हमको होता नहीं दीदार जो उनका हासिल।
देख तसवीरको कुछ प्यास बुझा लेते हैं॥

बेरुख़ी उनकी कभी दूर न होती मुझसे।
ग़ैरको प्यारसे वो पास बुला लेते हैं॥

दिलको समझाना तो आसान नहीं है फ़रहत।
भोली आँखें तो किसी तौर भुला लेते हैं॥
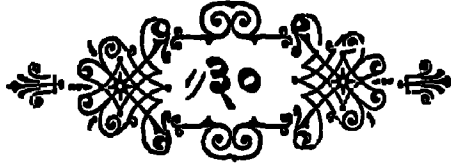
सर फिरा उनका कि लाखों हीके सर जाते हैं।
उनकी फ़ुरक़तमें गला काटके मर जाते हैं॥

उनका चरचा ही है बेसब्र बनाने वाला।
उनके आगे तो हुनरवरके हुनर जाते हैं॥

आँखके आगे फ़लक फीका नज़र आता है।
देखकर चाँद सितारे भी सिहर जाते हैं॥

ज़ुल्फ़को देख तेरी अब्र-सियह हैराँ है।
हारकर रुख़से पलट शम्सो क़मर जाते हैं॥

दिलमें चुभचुभके हँसी उनकी समा जाती है।
तीर नज़रोंके कलेजेसे उतर जाते हैं॥

मरहमे दीदकी होती है हमें जब ख़्वाहिश।
आबले आहके सीने पै उभर जाते हैं॥

नहींका नाम न ले चाक दिल मेरा होगा।
हम तो तेवर ही तेरे देखके डर जाते हैं॥

हिजाब कैसा है फ़रहत से ये बता तो सही।
हम तो आये हैं इधर आप किधर जाते हैं॥

लामकाँको जिसे बतलाता है हरएक मकीं ।
ख़ानए दिलमें मेरे रहता है वो परदानशीं ॥
वह झलक जिससे कि मूसा भी हुए थे बेहोश ।
सब वहाँ देखेंगे पर देख लिया हमने यहीं ॥
दैरसे काम न क़ाबेसे ग़रज़ है हमको ।
जिस जगह आप नहीं ऐसी जगह कोई नहीं ॥
इश्क़बाज़ोंके लिये ग़ैरका सिज़दा है हराम ।
आस्ताना है तेरा और ये है मेरी ज़बीं ॥
तेरे दरतक तो रसाई मेरी क़िस्मतसे हुई ।
किस लिये छोड़के तुझको मैं भला जाऊँ कहीं ॥
इश्क़ने जबसे मेरे दिलमें घर किया फ़रहत ।
कोई काबा इसे कहता है कोई अर्शेबरीं ॥

यह मैं कैसे कहूँ कोई तेरा बीमार नहीं।
दिलमें क्या मेरे किसी दर्दका आज़ार नहीं॥
तुम जो चाहो तो मेरे दर्दका दरमाँ हो जाय।
वरना जीनेके मेरे कोई भी आसार नहीं॥
आँखमें है जो ज़हर तो है मसीहाई भी।
मारते हो तो जिलाना तुम्हें दुश्वार नहीं॥
तुम जो होते हो तो कुछ चैन-सा आ जाता है।
तुम नहीं होते तो कब चलती है तलवार नहीं॥
आज़माऊँ मैं तेरे तीरे जफ़ाको किनपर।
एक ही दिल है मेरे पास तो दो चार नहीं॥
बाद मरनेके मेरे रोके कहोगे एक दिन।
वो है यह शख़्स जिसे हँसके किया प्यार नहीं॥
फ़रहत आई भी अगर बादेसबा क्या आई।
अब तो गुलचीं नहीं गुल भी नहीं गुलज़ार नहीं॥
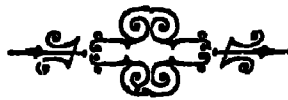
दर्द हो दिलमें न भूलेसे दवा याद करूँ ।
लुत्फ़ तो तब हैं कि सैयादसे फ़रियाद करूँ ॥

मेरा दिल लेके बदलते हैं वो मुझसे आँखें ।
किस भरोसे पै सितमगारोंसे दिल शाद करूँ ॥

तुझे हसरत है सतानेकी सता ले ज़ालिम ।
ग़ैर मुमकिन हैं कहीं शिकवए बेदाद करूँ ॥

है ये वहशतका तक़ाज़ा कि चलूँ काँटोंपर ।
दिल ये कहता है कि मजनूँ हीको उस्ताद करूँ ॥

इससे बढ़कर तेरा रुतबा ही भला क्या' होगा ?
याद पहिले हो तेरी यादे ख़ुदा बाद करूँ ॥

दे दे मुझको भी सनम ! प्यारकी बस एक नज़र ।
दिलकी उजड़ी हुई बस्तीको फिर आबाद करूँ ॥

सब्र आ जाये मुझे दीदसे उसके फ़रहत ।
क़ैदे ग़मसे मैं दिले ज़ारको आज़ाद करूँ ॥

३४

तूने मोबाफ़ जो चोटीमें है डाला काला।
अक़्ल बोली कि हुआ आज ये काला काला॥
बँध गया ज़ुल्फ़ परीशाँका तसव्वर जिसको।
क्यों न फिर आये नज़र उसको उजाला काला॥
शिद्दते दश्तनवर्दीसे ये हालत है मेरी।
कि निकलता है मेरे पाँवमें छाला काला॥
इस तरह आरिज़े पुरनूर पै बिखरे गेसू।
गिर्द महताबके गोया हुआ हाला काला॥
मैं तो कुश्ता था सनम! दस्ते हिनाका तेरे।
किस लिये लाश पै डाला है दुशाला काला॥
हो गया काकुले शबरंगका सौदा जबसे।
नज़र आने लगा मुझको तहोबाला काला॥
ज़ुल्फ़ शबगूँ नहीं बिखरी है तेरे आरिज़ पर।
शायद उश्शाक़के डसनेको है पाला काला॥
याद साक़ीमें जो इक आह जिगरसे निकली।
हो गया दिलकी जलनसे है ये प्याला काला॥

शौक़े फ़रहत

सियहबख़्तीका गिला हमने किया जब फ़रहत ।
बोले, क्या ख़ूब ये मज़मून निकाला काला ॥

३७
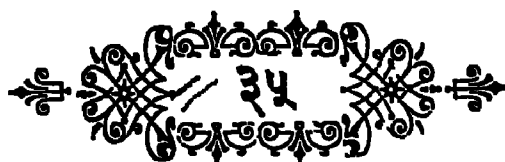
आँखमें अश्कका दरिया नहीं सँभलता है।
सोज़े फ़ुरक़तसे शबो रोज़ जिगर जलता है॥

शबे फ़िराक़ निकलते हैं आहो नाले कब।
किसीकी यादमें अरमाने दिल उछलता है॥

हज़ारों लाखोंकी बिछती हैं राहमें आँखें।
जो बे-नक़ाब वो परदानशीं निकलता है॥

विसाले यारसे रुतबा जो बढ़ गया मेरा।
रक़ीब देख मुझे अपने हाथ मलता है॥

हरीफ़ बनके जो महफ़िलमें बैठ जाते हैं।
तो दौर साग़रे फ़रहत का ख़ूब चलता है॥
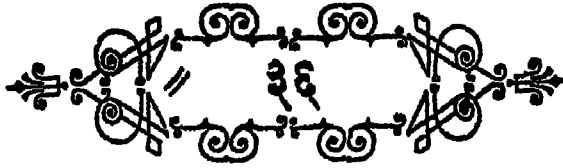
नागनी ज़ुल्फ़ जबींको महेताबाँ लिक्खूँ।
तेग़ अबरूको कहूँ ख़ंज़रे बुर्रां लिक्खूँ॥
नाककी औ लबो दन्दाँकी हो तौसीफ़ कहाँ।
दहने तंगके गुन्चे हैं. सनाख़्वाँ लिक्खूँ॥
माहपारे हैं वो रुख़सार मुनव्वर तेरे।
कानको काने जवाहिर या बदख़्शाँ लिक्खूँ॥
गर्दनो शान और बाज़ूकी अजब शान है कुछ।
न कलाईसे कल आई तो सुलेमाँ लिक्खूँ॥
दस्तगीरी तेरी आँखोंको ख़ुदाने दी है।
क्यों न पंजेको तेरे पंजये मिज़गाँ लिक्खूँ॥
सीनेकी या शिकमो नाफ़की क्या हो तारीफ़।
हाँ कमरको तेरे इक राज़ है पिनहाँ लिक्खूँ॥
पुश्त और रानकी पिण्डलीकी करूँ क्या मैं सिफ़त।
शाख़े बिल्लूरसे बेहतर कहीं हाँ हाँ लिक्खूँ॥
कफ़ेपामें ये सफ़ाईकी अजब हालत हैं।
आईना आप हुआ जाता है हैराँ लिक्खूँ॥

तेरे दीदारसे फ़रहत है दिले फ़रहत को।
क्या सरापा तेरा मै ऐ शहे ख़ूबाँ लिक्खूं ॥
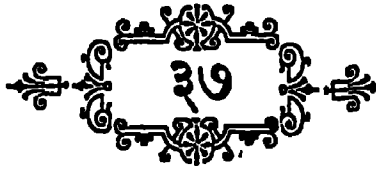
मेरे साक़ीने दिया मुझको जो पैमानए इश्क़ ।
दिले शैदा ये मेरा बन गया मस्तानए इश्क़ ॥

देखकर मुझको फ़रिश्तोंको भी हैरत आई ।
मैंने आबाद किया आके जो ये ख़ानए इश्क़ ॥

हम दुआगो हैं तेरे पीरे मुग़ाँ दे साग़र ।
हाथ फैलाये कहाँ जाके ये दीवानए इश्क़ ॥

गूँजती हैं मेरे कानोंमें उसीकी आवाज़ ।
कैसा दिलचस्प तराना था वो अफ़्सानए इश्क़ ॥

दिले फ़रहत में बनाया है घर अपना आकर ।
दिलरुबा तूने, इसे कहते हैं काशानए इश्क़ ॥
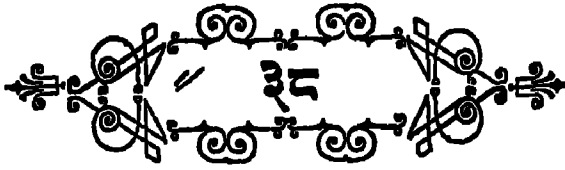
लीजिये जान भी अब तुझ पै फ़िदा करते हैं।
हमने जो वादा किया था वो वफ़ा करते हैं॥

दम लबोंपर है कोई दमके हैं मेहमाँ लेकिन।
ख़ुश रहो आप ये हम दिलसे दुवा करते हैं॥

चाहे जितना हमें जी भरके सता ले कोई।
शक्ले तसवीर हैं कब मुँहसे गिला करते हैं॥

मान लूँ आपका कहना मैं अगर ऐ नासह!
कहीं बीमारे मुहब्बत भी दवा करते हैं!

क्या मज़ा है कि मुहब्बतका सिला है उलटा।
हम वफ़ा करते हैं और आप जफ़ा करते हैं॥

सर झुका देते हैं शमशीर अदाके आगे।
जब नमाज़ इश्क़की जाँबाज़ अदा करते हैं॥

कूचए यारमें जब बैठ गये ऐ फ़रहत।
जीते-जी फिर कहीं ऐ जान उठा करते हैं॥

३६
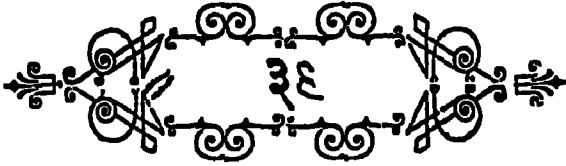
हविस कुचलके चले लुत्फ़ सब मिटाके चले।
तुम आये भी तो मुझे ख़ूने दिल पिलाके चले॥

हुआ न वस्ल न उम्मीद कोई बर आई।
ख़ुद अपनी हस्तीको हम ख़ाकमें मिलाके चले॥

दमे निज़ा भी न उट्ठी नक़ाब चेहरेसे।
हमींको शर्म जो आई तो मुँह छिपाके चले॥

मुराद ही न रही नामसे ग़रज़ क्या है।
रखो न ईंट भी, तुरबत ही क्यों बनाके चले॥

न ज़िन्दगीमें कभी बात तुमनेकी फ़रहत।
मज़ार पर मेरे दो फूल क्यों चढ़ाके चले?

दिखाया गुल था मगर ख़ार ही चुभाके चले।
सताने आये थे जिसको उसे मिटाके चले॥
जब आये दिलकी मेरे बेकली बढ़ाके चले।
कभी न बेख़ुदीये शौक़ तुम मिटाके चले॥
असर था आहमें कितना तुम्हें नहीं मालूम।
मेरी गलीसे चले मेरा दिल जलाके चले॥
हयासे तुमने नज़र फेरी हो अपनी शायद।
हयात हीसे हम अपनी नज़र फिराके चले॥
गलीमें इश्ककी आते ही बन गये बे-सब्र।
हमीं न रोके चले तुमको भी रुलाके चले॥
तुम्हारे शेरो सख़ुनकी है वो अदा फ़रहत।
जिधरसे निकले उधर गुल नया खिलाके चले॥

नाज़ कुछ बढ़ चले उस बुतके मचलनेके लिये।
आस्माँ चाहिये अब उनको टहलनेके लिये॥
देख लो है कि नहीं बूए मुहब्बत दिलमें।
गुल नहीं होता कभी हाथसे मलनेके लिये॥
क्या ज़िदें उनकी निराली हैं, ख़ुदा ख़ैर करे।
हम हैं मरनेके लिये, वह हैं मचलनेके लिये॥
चार दिनके लिये क्या नाज़ तुझे है साक़ी।
तेरे मैख़ानेका ये दौर है चलनेके लिये॥
लेके मिट्टीमें मिलाओ न इसे ऐ फ़रहत।
गुञ्चए दिल है मेरा फूलने फलनेके लिये॥

तेज़ ख़ंजर है अगर हल्क़ पै चलनेके लिये।
दिलके अरमान मचलते हैं निकलनेके लिये॥

शौक़से ख़ानए दिलमें मेरे आ जायँ हुज़ूर!
ये मकाँ ख़ूब है ऐ जान! टहलनेके लिये॥

पीस डाला हमें ज़ालिमने सितमगारीसे।
आस्माँ रंग था क्या हमसे बदलनेके लिये॥

दिले बेताबको समझे हैं खिलौना शायद।
लिये फिरते हैं किसी दिलसे बदलनेके लिये॥

उनके हर लफ़ज़की क़ीमत हैं सिवा ऐ फ़रहत।
जो पियें ख़ूने जिगर लाल उगलनेके लिये॥

जोशे फ़रहत

४२

दिल वो दिल ही नहीं जिस दिलमें तेरा प्यार न हो।
गुल वो गुल ही नहीं जिसपर निगहे यार न हो॥
गोश क्या है न सुने जो तेरा चरचा हरदम।
आँख क्या है जो तेरी तालिबे दीदार न हो॥
वस्ल वह है कि जहाँ हो न दुईका परदा।
क्या मज़ा है कि जहाँ देखूँ वहाँ यार न हो॥
मै हो, मीना हो, सभी साज़ मुहय्या हों मगर।
बज़्म वह क्या है जहाँ साक़िये दिलदार न हो॥
जब ख़ता होगी तभी नज़रे मेहर भी होगी।
लुत्फ़ क्या है जो कोई तेरा ख़तावार न हो॥
क्या बतायें कि है क्या राज़े मुहब्बत फ़रहत।
वह न आशिक है जो, दिलबरका गुनहगार न हो॥

जौहरे फ़रहत

५५

तू देख काटके तेग़े जफ़ा गुलू मेरा।
कि रंग लायेगा महशरके दिन लहू मेरा॥

तुझे मैं देता हूँ तलवारकी क़सम क़ातिल।
बहा सितमसे न यूँ ख़ूने आरज़ू मेरा॥

फ़िदाये ख़ंजरे नाज़ो अदा हूँ सौ जाँसे।
ज़माने भरमें यह शोहरा है चारसू मेरा॥

तड़पना लोटना हिस्सेमें मेरे आया है।
हमेशा होता है चरचा ये कूबकू मेरा॥

है अपना शौक़े शहादतमें सर झुका फ़रहत।
यही नमाज़ है मेरी यही वज़ू मेरा॥

अशआरे फ़रहत

४५
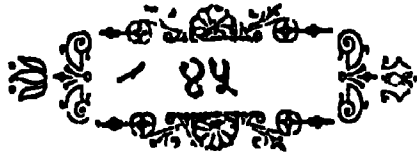
जो बुत पै मरता हो क्या पूछना है उस दिलका।
रफ़ीके इश्क़को समझो रक़ीब आक़िलका॥
ये गंजे हुस्न पै बैठा है निगहवाँ काला।
गुलाबी गाल पै समझो न दाग़ है तिल का॥
वो सख़्त जाँ हूँ नहीं ख़ौफ़ सरके कटनेका।
लचक न जाय कहीं हाथ मेरे क़ातिलका॥
बुतोंका कूचा है बढ़ना सम्हलके हज़रते दिल।
क़दम क़दम पै यहाँ है मुक़ाम मुश्किलका॥
हविस है यारके हाथोंमें लगे पिस पिसकर।
जिगर है वर्गे हिना बनके आया बिस्मिलका॥
हुनर यहाँ है, हुनरके हैं क़द्रदाँ फ़रहत।
बढ़े न औज क्यों इस शायरीकी महफ़िलका॥
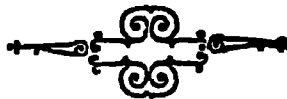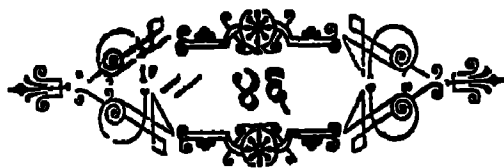
निगाहे ख़ल्कसे सब हाल है निहाँ मेरा।
ज़माने भरमें नहीं कोई राज़दाँ मेरा॥
निकाल लीजिये ख़ंजर नयामसे बाहर।
अगर है आपको मंज़ूर इम्तिहाँ मेरा॥
किसीके इश्क़में हासिल यही हुआ मुझको।
उदू ज़मीन है दुश्मन है आस्माँ मेरा॥
गलीमें इश्क़की हर जा तलाश करता हूँ।
पता नहीं है कि दिल खो गया कहाँ मेरा॥
सुराग़ लेलिये महमिलनशींका कुछ न मिला।
ग़ुबार वादिये हसरत बना गुमाँ मेरा॥
कलेजा थामके बोले कि अब रहो ख़ामोश।
भरा हुआ था मगर दर्दसे बयाँ मेरा॥
ख़ुदाका शुक्र करूँ किस लिये न मैं फ़रहत।
बना है वो सितम ईजाद मेहरबाँ मेरा॥

४७
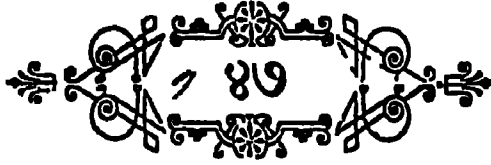
शितम शमा का :अबस

कम रहे रहे न रहे।

नहीं परवाने को ग़म

दम रहे रहे न रहे॥

इश्क़ की मै से भरा

दिलका ये शीशा है बहुत।

जहाँ में जामये

ज़मज़म रहे रहे न रहे।

ख्याल इतना रहे

दिल किसीका तोड़ा था।

किसी के मरने का

कुछ ग़म रहे रहे न रहे॥

जहाँ में ख़ूब हो रोशन

तुम्हारा हुस्नो जमाल।

किसी के दीदये

पुरनम रहे रहे न रहे॥

नौशे फ़रहत

बुतो शराब तुम्हारा

रहे हज़ार बरस।

हमारी फ़िक्र न हो

हम रहे रहे न रहे॥

था इतना सर्द जिगर वह

न कुछ रहम आया।

बला से आँसू बहे

थम रहे रहे न रहे॥

जो उसके तीरे नज़र

तन गये तो बस फ़रहत।

हजारों तेग़ो तबर

ख़म रहे रहे न रहे॥
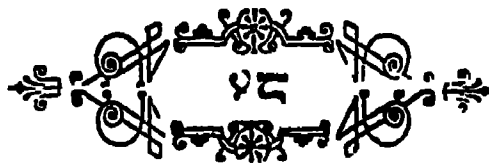
उसीकी जलवागरी है इधर उधर पैदा।
जमाले यारको देखे तो कर नज़र पैदा॥

सदफ़में है दुरे ग़लताँ भी जिनसे शरमिन्दा।
वो मोती करती है ये मेरी चश्मतर पैदा॥

सुने जो वो बुते काफ़िर तो मोम हो जाये।
इलाही हो मेरे नालोंमें ये असर पैदा॥

गया जो गोरे ग़रीबाँमें जी उठे मुर्दे।
कि तेरी चालसे है हश्र फ़ितनागर पैदा॥

हज़ारों दाग़ हैं सीने पै बाग़ हस्तीमें।
हुए है नख़्ले तमन्नामें ये समर पैदा॥

हमारा ख़ूने जिगर कैसा रंग लाया है।
किये ज़मानेमें क्या लाल औ गौहर पैदा॥

वो रखे कूचए उल्फ़तमें फिर क़दम फ़रहत।
मेरा सा कर तो ले पहले कोई जिगर पैदा॥

४६

दिल देके उनको अपना बरबाद हो गया मैं।
ढूँढ़ा उन्हें यहाँतक ख़ुद आप खो गया मैं॥

ख्वाहिश हुई है उनको अब मेरी जुस्तजूकी।
जब बे-निशान होकर तुरबतमें सो गया मैं।

अब क्या पता बताऊँ ऐ चर्ख़! मैं कहाँ हूँ।
तस्वीर सा जहाँके पर्देसे धो गया मैं॥

मानिन्द बूए गुलके मैं मिट गया चमनसे।
आया न फिर, यहाँसे इक बार जो गया मैं॥

फ़रहत कहूँ मैं किससे जो आप कर गया हूँ।
कितने दिलोंमें सदमे मर मरके बो गया मैं॥

५०

क्या रंग जमायेगी तब वह तेरी रुसवाई।
खोलेंगी राज़े उल्फ़त जब आँखें ये शरमाईं॥

बीमारको हिर फिरके बीमार बना देना।
यह कैसी दवा देना ये कैसी मसीहाई॥

ग़श खा होके छिपती है बादलकी ओट जाकर।
बिजली जो तेरे आगे बेशर्म बनके आई॥

देखा तुझे जी भरकर तेरा.ही हुआ शैदा।
सूरतके साथ तूने सीरत भी ख़ूब पाई॥

आमदसे अपनी ऐ जाँ बा-लुत्फ़ इसे कर दे।
फ़रहत को नहीं अच्छा ये गोशये तनहाई॥

जोशे फ़रहत

५१

दिल मेरा चुरा करके फिर मेरी ही रुसवाई।
ज़ख़्मीको ज़िबह करना यह कैसी मसीहाई॥
मुँहमें 'नहीं नहीं' है, आँखोंमें मगर: 'हाँ' है।
ख़ूबी ये बयाँकी है किसने तुझे सिखलाई॥
हम शाद रहे जबतक दीदार रहा तेरा।
आँखोंसे हुआ ओझल तो मौत नज़र आई॥
तू हैं जो छिपके बैठा कबतक छिपा रहेगा।
देखेंगे कहीं भी तो तुझको तेरे शैदाई॥
यह वह नशा नहीं है, तुर्शीसे उतर जाये।
नाहक़ ही तूने तुर्शी इतनी ज़ुबाँमें पाई॥
दिलमें भरे हुए हैं फ़रहत के लाखों अरमाँ।
ये आरज़ू हैं तुम हो और गोशये तनहाई॥

५२
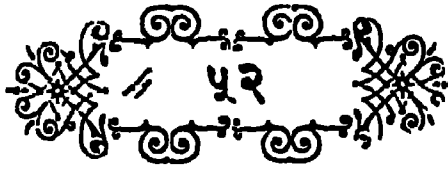
कब चाहता है कोई यों बनमे रहा करना।
तक़दीरमें लिक्खा था उलझनमें रहा करना॥
वे-परदा अगर रहना मंज़ूर नहीं तुमको।
दर परदा चले आओ चितवनमें रहा करना॥
ऐ आँसुओ! क्यों तुमने तूफ़ान उठाया है।
आँखें न सही मेरे दामनमे रहा करना॥
मैं-ख़ानेमें मस्जिदमें मन्दिरमें कलीसामें।
अन्दाज़ है क्या हर इक फ़ैशनमें रहा करना॥
दाग़ोंने मेरे दिलको गुलज़ार बनाया है।
तुम रश्के चमन होकर गुलशनमें रहा करना॥
अग़यारकी नज़रोंसे छुपना है अगर तुमको।
हाँ हाँ, मेरी पलकोंकी चिलवनमें रहा करना॥
आया है अज़लसे बस हिस्सेमें ये फ़रहत के।
नालोंमें रहा करना, शेवनमें रहा करना॥

जौहरे फ़रहत
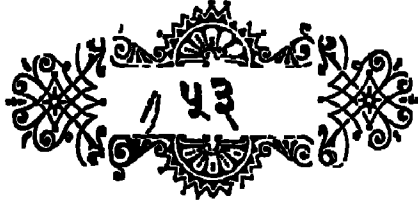
लेनेको तो ले लो दिल पर लुत्फ़ अता करना।
नाज़ोंका ये पाला है इसपर न जफ़ा करना॥
किस नाज़से कहते हैं हम ज़ुल्म किये जायें।
शिकवा न कभी करना शुकराना अदा करना॥
कह दो ये मसीहासे बीमारे मुहब्बत हूँ।
क्या खेल समझते हैं वो मेरी दवा करना॥
तुम हुस्नके सदक़ेमें कुछ दो या न दो लेकिन।
है काम आशिक़ोंका हर वक़्त दुआ करना॥
कूचेमें तेरे ऐ बुत! मैं छोड़के हूँ जाता।
पामाल न इस दिलको अज़ बहरे ख़ुदा करना॥
कसबल तेरे ख़ञ्जरका देखें तो हम ऐ क़ातिल।
हम सरको झुकाते हैं तुम वार ज़रा करना॥
उल्फ़तमें ऐ फ़रहत जो रक्खा है क़दम तुमने।
सह सहके जफ़ा उनकी कुछ पासे वफ़ा करना॥
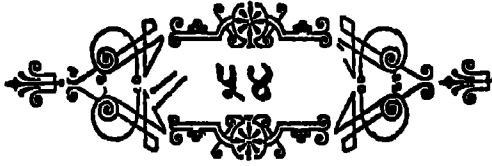
मुंहपर जो हमने देखा, फूलोंका वो बरसाना।
तो आँखमें हैं देखा बिजलीका तड़प जाना॥

क़ैदी जो हुआ तेरा मुझको न रिहा करना।
आज़ादीसे बढ़कर है उलफ़तका ये ज़िन्दाना॥

देखी जो शमा रौशन तो जाँसे हुआ क़ुर्बां।
करता है कभी जाँकी परवा नहीं परवाना॥

करनेको नज़र हमने सर अपना झुका रक्खा।
तुमने जो ज़रा तिरछा यह तीरे नज़र ताना॥

इक बार देख तो ले चिलमन ही तलक आकर।
गलियोंमें भटकता है तेरा कोई दीवाना॥

इस सख़्तीसे जो उसने दिल मेरा मसल डाला।
साबित न बचा कोई अब इश्क़का पैमाना॥

हूं ग़र्क़ हुआ इतना उस बुतकी मुहब्बतमें।
भूला-सा मुझे लगता मन्सूरका अफ़साना॥

आयेगा परस्तिशको बनकर तेरा शैदाई।
बतला दे तू फ़रहत को अपना ज़रा काशाना॥

५५

ग़श खाते हैं उठते हैं गिरते हैं ठहरते है।
उलफ़तके ये दीवाने क्या क्या नहीं करते हैं॥

सजधजसे उन्हें मुतलक़ फ़ुरसत ही नहीं मिलती।
.हम राह तका करते, उम्मीदमें मरते हैं॥

उस बे-रहमकी सूरत जब दिलमें समा जाती।
आहोंके ज़ख्म आकर सीने पै उभरते हैं॥

जीते जी तो रक्खा था फ़ुरक़तके अँधेरेमें।
क्यों आज दिया मेरी तुरबत पै वो धरते हैं॥

फ़रहत की आँख हरदम उस शोख़पर है अटकी।
वह इस तरफ़ मुख़ातिब होनेमें भी डरते हैं॥

रो-रोके कह रहा है ख़ूने जिगर किसीका।
आँखोंसे आज देखा यह हाल बेबसीका॥

ख़ुद मस्त हो गया मैं उस मस्तकी नज़रसे।
भूले कोई कहाँसे वह लुत्फ़ मै-कशीका॥

बादे बहार आई आकर निकल गई फिर।
पामाल हो गया मैं सामाँ मिटा हँसीका॥

क़ल्बो जिगर हमारा ज़ालिमने फूँक डाला।
यह आह है हमारी या है धुवाँ किसीका॥

बूए वफ़ा न पाई गमलोंके इन गुलोंमें।
फ़रहत को ध्यान हरदम रहता है बस उसीका॥
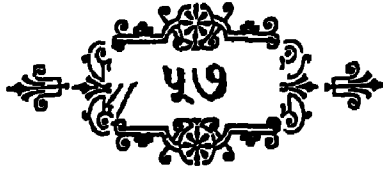
हिज्रे तो ज़ियादत वुकुनद रंजो अलम रा ।
चूं रोज़े क़यामत वेदहद जलवा शवम रा ॥

वह वन चुका था हिज्रमें तसवीरे जुदाई ।
थी लाग़री ऐसी कि न पड़ता था दिखाई ॥
कुछ देर तलक आँख जो विस्तर पै गड़ाई ।
कानों पै मेरे धीमी-सी आवाज़ ये आई ॥

हिज्रे तो ज़ियादत वुकुनद रंजो अलम रा ॥

शवको अकेला गोरे ग़रीवाँको जो गया ।
देखा मज़ार ढाँपे शजर एक था खड़ा ॥
पूछा जो मैंने उससे कि यह क्या है माजरा ।
लम्वी-सी साँस लेके शजरने यही कहा ॥

हिज्रे तो ज़ियादत वुकुनद रंजो अलम रा ॥

सोता है इस ज़मींके तले वदनसीव एक ।
थे दोस्त वहुत पर था मुक़द्दर रक़ीव एक ॥
आहिस्ता रखना फूल यहाँ अन्दलीव एक ॥
टूटे न कहीं ग़मसे भरा दिल ग़रीव एक ॥

नौरोज़ फ़रहत

हिज्रे तो ज़ियाद्त बुकुनद रंजो अलम रा ॥

वादे जो वस्लके थे वो दुश्वार हो गये।
गुलज़ारके गुल गुल न रहे ख़ार हो गये।
अख़्तर फ़लकके सीने पै अङ्गार हो गये।
अशआर ये फ़रहत के असरदार हो गये ॥

हिज्रे तो ज़ियाद्त बुकुनद रंजो अलम रा ॥

५८

अरमान उठ रहे हैं मेरे दिलके आस-पास ।
क्या पायेंगे मायूस ये बिस्मिलके आस-पास ॥

साक़ीने आज कौन-सी वह मै पिला दिया ।
सब मस्त हो गये वहीं महफ़िलके आस-पास ॥

क़िस्मतको क्या कहूँ कि मैं दरियाए इश्क़में ।
यों गर्क़ हो गया कहीं साहिलके आस-पास ॥

देगी पता नसीम भी क्या बूए वफ़ाका ।
गुल झड़ गया चमनमें यहीं खिलके आस-पास ॥

फ़रहत हुआ है मौतमें आराम ये नसीब ।
थक करके सो गये किसी मंज़िलके आस-पास ॥

दिल जल्वागाह जल्वए जानाना बन गया।
शाने ख़ुदा कि काबा भी बुतख़ाना बन गया॥
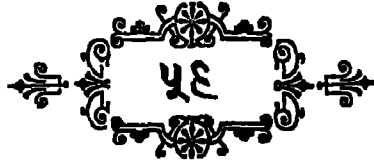
पीरे मुग़ाँका फ़ैज़े करम आम देखकर।
चुल्लू हमारा सूरते पैमाना बन गया॥

जायेंगे हम न कूचए लैलाको छोड़कर।
मजनूँ बड़ा सिड़ी था जो दीवाना बन गया॥

कौसरके जामकी न तमन्ना उसे रही।
जो चश्म मस्त यारका मस्ताना बन गया॥

जाँबाज़ मर मिटे तो मिली उनको ज़िन्दगी।
आबाद वह हुआ है जो वीराना बन गया॥

देखा जिधर ज़हूर है अनवारे हुस्नका।
आईना ख़ाना इश्क़का काशाना बन गया॥

फ़रहत जो लौ हमारी उसीसे लगी रही।
वह शमा बन गया तो मैं परवाना बन गया॥
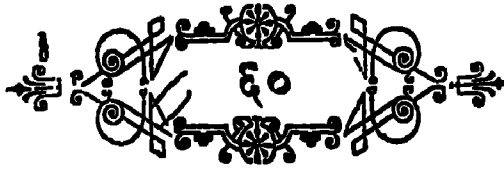
शमशीरे नाज़े यार अगर बेनयाम हो।
चल जाय जिस तरफ़को उधर क़त्लेआम हो॥
खुल ऐ दहाने ज़ख्म! पै इतना रहे ख़याल।
रुसवा कहीं न हश्रमें क़ातिलका नाम हो॥
सुनते ही अपने हाथोंसे वो दिलको थाम लें।
हसरत भरा हुआ मेरा क़ासिद पयाम हो॥
ख़तमें तू मेरे दिल हीको ले जा लपेट कर।
क़ासिद न और कोई ज़बानी पयाम हो॥
मेरे गले पै फेर भी दो ख़ंजरे अदा।
हो काम मेरा, आपका दुनियाँमें नाम हो॥
दौरे फ़लकके हाथसे बरबाद हो न जाय।
लेते हो दिल तो इसका भी कुछ इन्तज़ाम हो॥
फ़रहत शबे विसालका फिर लुत्फ़ हो नसीब।
मेरी बग़लमें वो मेरा माहे तमाम हो॥

अंधेर है ये शाम सहरसे निकल गई।
इतनी बढ़ी कि ज़ुल्फ़ कमरसे निकल गई॥

अबरू कमाँने जिसकी तरफ़ इक निगाह की।
तीरे नज़रकी नोक जिगरसे निकल गई॥

क़ातिलकी तेग़ तेज़को बतलाओ क्या कहूँ।
आई इधरसे और उधरसे निकल गई॥

तलवार है अदाकी कि बिजली ग़ज़बकी है।
छूटी जो हाथसे तो सिपरसे निकल गई॥

थामे हैं आसमाँने जिगर दोनों हाथसे।
किस दिलजलेकी आह इधरसे निकल गई॥

फ़रहत जमाल देखके बेहोश हो गया।
क्या बर्क़ सी चमकके नज़रसे निकल गई॥

६२
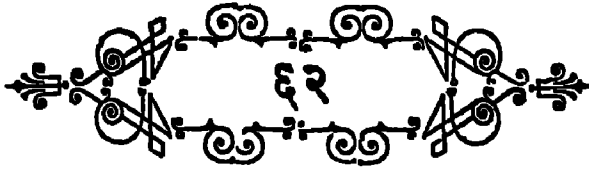
हम औरको दिल दे कभी दिलवर! नहीं सकते।
तू है तो वहाँ ग़ैर बना घर नहीं सकते॥
एक वो हैं चलाते हैं जो किस शौक़से खंजर।
एक हम हैं कि उफ़् तक भी कभी कर नहीं सकते॥
क्या चैनसे अग़्यारको मिलती हैं शबे वस्ल।
हम माँगते हैं मौत भी पर मर नहीं सकते॥
आँसूसे मेरे भर चुके हैं ऐसे समन्दर।
बरसातके बादल भी जिन्हें भर नहीं सकते॥
हम जल चुके हैं इतने शबे हिज्र जलनमें।
काले! तेरे काटेसे कभी डर नहीं सकते॥
तुम लाखमें पे फ़रहते बेताब हो यकता।
खुरशीदके आगे ठहर अख़्तर नहीं सकते॥

६३

कुछ भी नहीं है अब तो दिले दाग़दारमें।
वो दिन भी थे कि आग लगी थी बहारमें॥
जीना है कुछ न खेल न मरना है दिल्लगी।
ये अख़्तियारमें है न वो अख़्तियारमें॥
उनका दिया हुआ कहीं मैला क़फ़न न हो।
रखना मुझे ज़मीनसे ऊँचा मज़ारमें॥
उम्रे दराज़ माँगके लाई थी चार दिन।
दो आरज़ूमें कट गये दो इन्तिज़ारमें॥
फ़रहत अज़लके रोज़ जो पी थी शराबे इश्क़।
मस्ताना अभी तक हूँ उसीके ख़ुमारमें॥
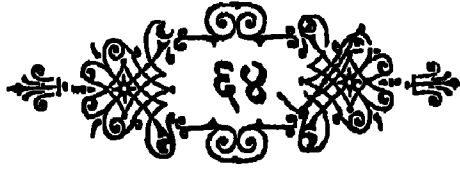
मुझपर बुतोंका प्यार कभी है, कभी नहीं।
यह दिल तेरा शिकार कभी है, कभी नहीं ॥

है मारती कभी, है कभी जान डालती।
तेरी निगहमें धार, कभी है, कभी नहीं ॥

खिलकर चमनमें जिसने दिलोंको खिला दिया।
वह गुल गलेका हार, कभी है, कभी नहीं ॥

उनके लिये खुशी है नई रोज़ ही मगर।
मेरे लिये बहार, कभी है कभी नहीं ॥

फ़रहत से तुमको मिलना है तो आके अब मिलो।
कैसा ये वस्ले यार, कभी है कभी नहीं ॥

माशूक़का वह प्यार कभी है कभी नहीं।
यह मौसमे बहार कभी है कभी नहीं॥
सहनेको चोट हम तो जिगर थामके बैठे।
लेकिन नज़रका वार कभी है कभी नहीं॥
बदमस्त बना साक़ी मुझे अपनी बज़्म में।
मयका तेरी ख़ुमार कभी है कभी नहीं॥
दिलसे है उसकी याद किसी दम न भूलती।
पर सामने वो प्यार कभी है कभी नहीं॥
आँखें तो मुझसे वस्लका वादा हैं कर रहीं।
लबपर मगर इक़रार कभी है कभी नहीं॥
दिन वस्लके उँगली पै तो गिन सकता हूँ अपने।
बोसोंका पर शुमार कभी है कभी नहीं॥
फ़रहत से पूछा हमने कि जोशे जुनूँ भी है।
उसने कहा :सरकार, कभी है कभी नहीं॥
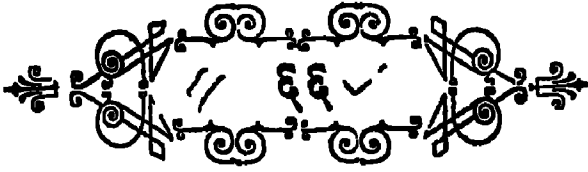
चिलमनसे वो सूरत जो सँवरती हुई निकली।
क़ैंचीकी तरह दिलको कतरती हुई निकली॥
जब वस्ल मिला दिलकी हविस मिस्ले जवानो।
पुरजोश हो सीनेसे उभरती हुई निकली॥
जो गेसू हटे रुख़से तो सूरज ही न निकला।
चितवनकी भी शमशीर चमकती हुई निकली॥
फ़ुरक़तमें हुआ है तेरे बीमारका ये हाल।
निकली जो आह वह भी अटकती हुई निकली॥
रोके हुए थी दीदकी हसरत अभी तलक।
आँखोंकी राह जान तड़पती हुई निकली॥
चलकर हवाने ग़ुंचोंका घूँघट उलट दिया।
किस नाज़से ख़ुशबू भी मचलती हुई निकली॥
क़िस्मतका ज़ोर देखिये फ़रहतकी बात भी।
अग़यारकी महफ़िलमें सँभलती हुई निकली॥

६७
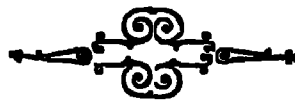
उस बुतको भला राज़े मुहब्बत जताये कौन।
बेदर्दको इस दर्दकी लज़्ज़त बताये कौन?

पहलूमें दिल जो होता तो हिम्मत न हारते।
दिल ही नहीं है पास तो हिम्मत दिलाये कौन?

तदबीर बिगड़ जाय तो बन जायेगी लेकिन।
तक़दीरकी बिगड़ीको जहाँमें बनाये कौन?

लगती है अगर आग बुझा देता है पानी।
उल्फ़तकी लगीको मगर आकर बुझाये कौन?

पहलूसे दिल मेरा जो ख़फ़ा होके चल दिया।
हैरतमें हूँ कि रूठे हुएको मनाये कौन?

नाज़ुक ख़यालीके भरे अशआर हैं फ़रहत।
अब इनके आगे शायरी अपनी सुनाये कौन?
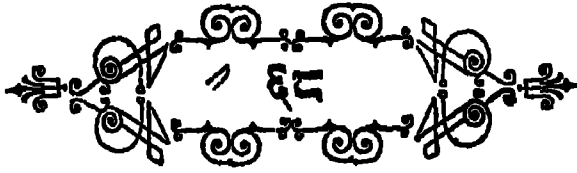
इन संग दिल बुतोंसे भला दिल लगाये कौन।
बैठे बिठाये आग जिगरमें जलाये कौन॥

रुसवा हुए ज़लील हुए ख़्वार हो गये।
सहराकी ख़ाक छानके मजनूँ कहाये कौन॥

कुछ काम है न वस्लका फ़ुरक़त गले लगे।
जल जलके हिज्रे यारमें धूनी रमाये कौन॥

उल्फ़त है क्या जो हिज्रकी शब काटनी पड़े।
माशूक़ बेवफ़ा हों तो आशिक़ कहाये कौन॥

फ़रहत बुतोंसे दिल न लगाऊँगा भूलकर।
मर मरके इन पै अपनी ख़ुदीको मिटाये कौन॥

फ़ुरक़तमें ख़्याले यार सरे शाम आ गया।
बैठे बिठाये मौतका पैग़ाम आ गया॥

दिन तो कटा कटेगी मगर रात किस तरह।
मुझको जलाने चाँद सरे बाम आ गया॥

लब तो खुले दुवाको मगर खुलके रह गये।
जिसको न चाहता था वही नाम आ गया॥

लहरा रहा है दोश पै वह गेसुओंका दाम।
सैय्यादके सर उसका ही अंजाम आ गया॥

सीने पै तीर चल गये खंजर चमक उठे।
क़ातिलका नाज़ आज तो कुछ काम आ गया॥

फ़रहत नसीब देखिये बादे फ़ना मुझे।
कुंजे लहदमें लेटके आराम आ गया॥

उनका उदूसे वस्लका इक़रार हो गया।
गोया मेरा नसीब ही नादार हो गया॥

दिल सर्द हुआ आँखसे आँसू निकल पड़े।
बैठे बिठाये दर्दका आज़ार हो गया॥

मेरे चमनमें आह ये कैसी हवा चली।
गुल था कभी जो आज वही ख़ार हो गया॥

दिन रात मैं जलूं है यही आरज़ूए दिल।
सोज़े जिगरसे इतना मुझे प्यार हो गया॥

फ़रहत मुझे वफ़ाकी हो क्या उससे फिर उमीद।
जब ग़ैरका शरीक मेरा यार हो गया॥

नक़्शा जो सामने है किसीके मज़ारका।
दिल घुटके रह गया है किसी बेक़रारका॥

क्यों यों मिटा रहे हो मेरी ख़ाकमें लहद।
बाक़ी यही निशाँ हैं तेरे जाँ-निसारका॥

लिपटी हुई कफ़नमें मेरी आरज़ू पड़ी।
शायद कभी नसीब हो दीदार यारका॥

गुल झड़ गये हैं आज चमन भी उजड़ गया।
जोबन मिटा दिया है ख़िज़ाँने बहारका॥

हसरत निकल न जाये कहीं दिलसे, इसलिये।
रौशन रहे चिराग़ शबे इन्तिज़ारका॥

फ़रहत ज़रूर है दिले शैदाको ये यक़ीं।
होगा नसीब मुझको कभी वस्ल यारका॥

सीनेमें दाग़ दाग़में इक आबला दिया।
क्या क्या हमारे पास हैं अल्लाहका दिया॥

जबसे जनाबे इश्क़ने नक़शा जमा दिया।
दिलसे हमारे नक़्शे तमन्ना मिटा दिया॥

उस्ताद इश्क़ने सबक़ ऐसा पढ़ा दिया।
जो कुछ पढ़ा लिखा था वो दिलसे भुला दिया॥

फ़िरदौसका चमन हैं, उसीके लिये बना।
घर अपना उसके नाम पै जिसने लुटा दिया॥

हम हैं कि हमने जान भी तुझपर निसार की।
तूने तो रंज ही हमें ऐ बेवफ़ा दिया॥

रहता है रोज़ दश्त नवर्दोका सामना।
जोशे जुनूंने कैसी बलामें फँसा दिया॥

फ़रहत विसाले यारसे ये दिल है शादमाँ।
पहलूमें उसने आके मेरा घर बना दिया॥

७३
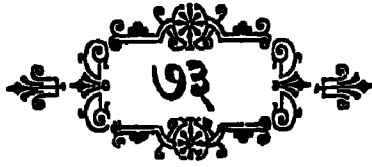
बिसमिल हुए लाखों परी पैकरके आस-पास।
दरियाए लहू बह गया ख़ंजरके आस-पास॥

शायद उन्हें मैं झाँकते खिड़कीसे देख लूँ।
चक्कर लगाता रहता हूँ उस दरके आस-पास॥

जामे शराबे इश्क़ पिया मैंने इस तरह।
दो बूँद भी पड़े न थे साग़रके आस-पास॥

उसके ही काकुलोंकी तरह आशिक़ोंके दिल।
रहते हैं उसकी सूरते अनवरके आस-पास॥

कैसे कहें कि दूर वो **फ़रहत** के दिलसे हैं।
उसने मकाँ बनाया है इस घरके आस-पास॥
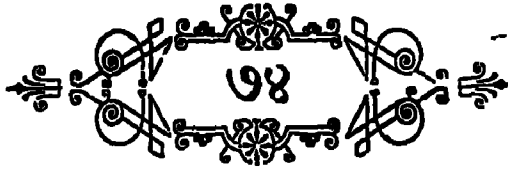
दिल मेरा जाके कूचए जानाँमें रह गया।
शैदाए बोस्ताँ था गुलिस्ताँमे रह गया॥

उठनेके हम नहीं दरे दिलदारसे कभी।
दीवाना क़ैस था जो बयाबाँमें रह गया॥

चमकेगा आफ़ताबकी मानिन्द हश्रमें।
गर दाग़े इश्क़ सीनये सोज़ाँमें रह गया॥

आवारए जुनूँ का ठिकाना न था कहीं।
घरसे निकलके ज़ुल्फ़ परीशाँमें रह गया॥

शमशीर नाज़ने न तवज्जह ज़रा भी की।
बिस्मिल तड़पता हसरतो अरमाँमें रह गया॥

दिलको निकाल डाला था पहलूको चीरकर।
तूफ़ान बन्द दीदये गिरियाँमें रह गया॥

फ़रहत के आके पहलूको आबाद कर दिया॥
हासिद अलममें रंजमें हिरमाँमें रह गया॥

रोज़े अज़लसे दिलको है इक तीरकी तलब।
हरदम रगे गुलूको है शमशीरकी तलब॥

काकुलके दाममें जो गिरफ़्तार हो गया।
क्योंकर उसे हो हल्क़ए ज़ंजीरकी तलब॥

हम तो हैं क्या ये जज़्बे मुहब्बतका काम था।
आहोंको खींच ले गयी तासीरकी तलब॥

काबेकी राह छोड़के बुतख़ानाको चले।
शेख़े हरमको है बुते बे-पीरकी तलब॥

चिल्ले पे हैं जो तीर सितमका चढ़ा हुआ।
क्या है कमाने नाज़को नख़चीरकी तलब॥

हैं मेरा ख़्वाब ख़्वाबे ज़ुलेख़ासे भी सिवा।
दिलसे अज़ीज़ रखता हूँ ताबीरकी तलब।

फ़रहत को कुछ तो आयेगी तसकीं शबे फ़िराक़।
करता है इसलिये तेरी तसवीरकी तलब॥

७६

ग़मगीं है दौरे चर्ख़ बरीं शादमाँ नसीब।
गोया ज़मीने पेश पै है आसमाँ नसीब॥

नाकामयाब होंगे न हरगिज़ उमीद हैं।
ले ले हमारा चाहे अगर इम्तिहाँ नसीब॥

इसको सुने जो गोशे नसीहत नियोश हो।
क्या क्या बयान करता है ये दास्ताँ नसीब॥

बेशक यही तो मंज़िले इरफ़ाँकी है दलील।
कहता हैं कौन करता है ये गुम निशाँ नसीब॥

हर एकसे जुदा मेरी तक़दीर हो गई।
देखो बना है यूसुफ़े बा-कारवाँ नसीब॥

दिल हो गया असीर मेरा दामे ज़ुल्फ़में।
तेरा गिला नहीं है ये है दिलसिताँ नसीब॥

उस बुतने अपने वस्लसे दिल शाद कर दिया।
फ़रहत है शुक्र वरना थे ऐसे कहाँ नसीब॥

क्योंकर न दिल हो शाद जो हो आशना क़रीब।
मेरी रगे गुलूसे है वो दिलरुबा क़रीब॥
नाज़ोनयाज़में है लगावट लगी हुई।
दर्दे जिगर अगर है तो इसकी दवा क़रीब॥
बुलबुल ये नाज़ इशरते गुलपर है किस लिये।
नादाँ बदलनेको है चमनकी हवा क़रीब॥
इन्सान किस्रो नाज़ करे किस बिसात पर।
सोचे तो हो ख़बर कि बहुत है फ़ना क़रीब॥
ऐ दिल विसाले यारसे होगा तू शादमाँ।
ग़मगीं न हो बर आयेगा ये मुद्दआ क़रीब॥
पूछा जो मैंने उनसे कब आओगे मेरे घर।
नाज़ो अदासे यारने हँसकर कहा क़रीब॥
फ़रहत सहर ये सो रही है शबकी गोदमें।
आरिज़से इसके या कि है ज़ुल्फ़े दुता क़रीब॥
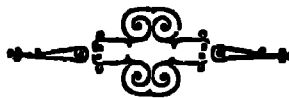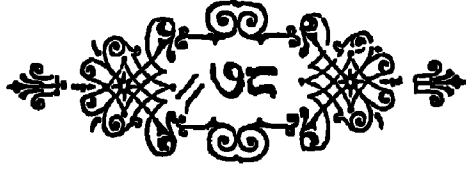
माना हुज़ूर आप हैं सूरतमें इन्तख़ाब।
तो मैं भी हूँ वफ़ामें मुहब्बतमें इन्तख़ाब॥

किस कामका है फूल अगर उसमें बू न हो।
लाज़िम बशरको है कि हो सीरतमें इन्तख़ाब।

तुम-सा हसीन और कोई दूसरा नहीं।
हो शोखियोंमें फ़र्द शरारतमें इन्तख़ाब॥

क्या हिकमते ख़ुदा है कोई जानता नहीं।
कितना ही हो वो इल्ममें हिकमतमें इन्तख़ाब॥

मैं भी हूँ और रक़ीब भी दोनों हैं रूबरू।
कर लीजिये अब अपनी तबीयतमें इन्तख़ाब॥

दुशवार इम्तियाज़ है दुशमनका दोस्तका।
होता मगर है इनका मुसीबतमें इन्तख़ाब॥

फ़रहत हमारे यारका अन्दाज़ है जुदा।
गर लेंगे हम तो रोज़े क़यामतमें इन्तख़ाब॥
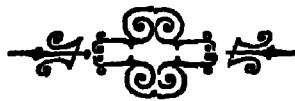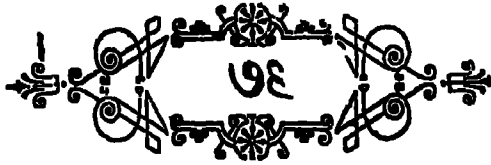
बचपन अभी है देखना दिलदारका शबाब।
क्या क्या न रंग लायगा उस यारका शबाब॥

खूने शहीदे नाज़ने जोबन बढ़ा दिया।
कैसा निखर गया है ये तलवारका शबाब॥

पीरे फ़लक भी आ गया चक्करमें देखकर।
नामे खुदा है उस बुते ऐयारका शबाब॥

जोशे जिनूँ न पाँव अभी तू निकालना।
आ लेने दे बहारको हो ख़ार का शबाब॥

रोज़े जज़ाके चेहरे पै ज़रदी-सी छा गई।
देखा जो उसने मेरी शबे तारका शबाब॥

हरदम इलाज करनेसे होता गया ज़ईफ़।
क्या पूछते हो इश्क़के बीमारका शबाब॥

फ़रहत जमाले यार जो पेशे नज़र रहा।
आने दिया न हसरते दीदारका शबाब॥

जौहरे फ़रहत

८०

दरियामें उठके कहता है ये बरमला हुबाब।
दरिया मेरा वजूद है और नाम क्या हुबाब॥
मेरी फ़ना बक़ा मेरी हस्तीकी है दलील।
पर क्या करूँ कि कहते हैं ना-आशना हुबाब॥
इन्सान आप मौजये ग़फ़लतमें ग़र्क़ है।
किश्तीके पार करनेको है ना-ख़ुदा हुबाब॥
बहरे जहाँसे बचके निकाले जहाज़े उम्र।
देता है दूर हीसे सभोंको बता हुबाब॥
राहत उसे मिले कि जो झेले मुसीबतें।
क़तरा बना है मौजमें होकर फ़ना हुबाब।
किस दिल जलेकी आहोंने दिखलाई गर्मियाँ।
दरियामें आबले हैं कि हैं जा-बजा हुबाब॥
देखे कोई जो चश्मे हक़ीक़तसे ग़ौरसे।
फ़रहत बशरके वास्ते हैं रहनुमा हुबाब॥
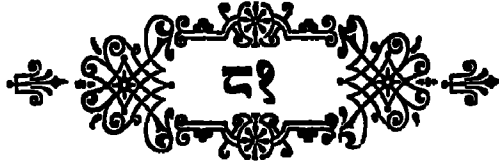
मस्तोंको कुछ न चाहिये साक़ी मगर शराब।
लेते हैं मोल अक़्लो ख़िरद् बेचकर शराब॥
मस्तीमें इनकी ज़ुहद्की ख़ुशबू है आ रही।
दिल है क़बाब और है ख़ूने जिगर शराब॥
वहदतका रंग होता है कसरतमें जलवागर।
हैरत ये है कि रखती है कैसा असर शराब॥
जिससे मिलाई आँख वो मद्-होश हो गया।
पीरे मुग़ाँ निगाहमें आई नज़र शराब॥
रहमतका अब्र झूमके आ जाये बाग़में।
बरसा दे आके जोशमें ऐ चश्मतर शराब॥
मस्तीकी शक्ल आती है हर एक तरफ़ नज़र।
मयख़ानेके बने हैं ये दीवारो दर शराब॥
हो लज़्ज़ते सरूरसे फ़रहत भी शादकाम।
शीशेका परदा रुख़से उठा दे अगर शराब॥

ले ले न जान हिज्रमें दर्दे जिगर शिताब।
लाना जवाब नामेका ऐ नामावर शिताब॥
सुनते वो किस तरह मेरी बेताबियोंका हाल।
आते हैं वो तो होता हूँ मैं बे-ख़बर शिताब॥
मंज़ूर हो जो सेहते बीमार ग़म तुझे।
आने न पाये मौत तू आ चारागर शिताब॥
बिजली गिरा दे ख़िरमने उम्मीद पर मेरी।
मुझ नातवांके हाल पै कर एक नज़र शिताब॥
तकता रहेगा कौन मेरी राह हश्र तक।
आना अगर तुझे है तो आ ऐ असर शिताब॥
धड़का रहे न रंजो अलमका ज़रा मुझे।
हो जाये शाम हिज्रकी या रब सहर शिताब॥
फ़रहत शकेबो सब्रसे लेगा अगर तू काम।
आयेगा पास तेरे वो रश्के क़मर शिताब॥

८३

बेहिजाबाना जो हुस्ने रूए जाना हो गया।
सारा आलम जलवागाहे नूरे इरफ़ाँ हो गया॥
अहले ज़ाहिदको कहाँ है राज़ बातिनकी खबर।
जिस क़दर दाना बना उतना ही नादाँ हो गया॥
हालते आवारगीये दिल करें क्योंकर बयाँ।
मायले ज़ुल्फ़े परीशाँ था परीशाँ हो गया॥
अक्स रुख़सारें सनमकी रू-नुमाई देखिये।
जिसने देखा सूरते आईना हैराँ हो गया॥
हैं तरक्क़ीपर दिले दीवानाका जोशे जुनू।
चाक दामाँ हो गया टुकड़े गरेबाँ हो गया॥
हसरतो हिरमाँको रहनेकी जगह मिलती नहीं।
ख़ानये दिलमें हमारे इश्क़ मेहमाँ हो गया॥
वस्लकी शब है मेरे पहलूमें वो दिलदार है।
अब तो फ़रहत फ़रहते ख़ातिरका सामाँ हो गया॥

नौरोज़े फ़रहत

८४

शक्ल भोली सी है पर काकुल है बल खाई हुई।
चाँदपर फिरती है नागिन-सी वो लहराई हुई॥

तन गई हैं तेग़े अब्रू तीरे मिज़गाँ तन गये।
चढ़ गये हैं हौसले अब आँख हरजाई हुई॥

क्या करेगा कौन जाने आपका हुस्नो शबाब।
कमसिनीमें इस क़द्र है चाल इठलाई हुई॥

मैं रुख़े रुख़सार देखूँ या निगाहे यारको।
दर-बदर फिरती है मेरी आँख ललचाई हुई॥

क्या किसीने राज़े दिल अपना सुनाया है तुझे।
चल रही बादेसबा! क्यों आज इठलाई हुई॥

ख़ूब ठुकरा लो मेरी तुरबतको मैं ख़ामोश हूँ।
रंग लायेगी कभी यह क़ब्र ठुकराई हुई॥

हश्रके दिन देखना फ़रहत मेरे दाग़े जिगर।
ख़ून किसका हो गया किस दिलकी रुसवाई हुई॥

होश रहता किस तरह वह रूए ज़ेबा देखकर।
हो गये बेहोश मूसा जिसका जलवा देखकर॥
बनके पानी खूँ उबल आया शहीदेनाज़का।
मछलियोंको खंजरे क़ातिलका प्यासा देखकर॥
देखिये तो उस सितम ईजादका ज़ुल्मो सितम।
जाके परदेमें छुपा मेरी तमन्ना देखकर॥
जज़्बए उल्फ़तने आख़िरकार दिखलाया असर।
जानिबे सेहरा चली मजनूँको लैला देखकर॥
क्या अजब दिलमें चिराग़े तूरकी है रौशनी।
जल बुझा हूँ आप हीमें नूरे यकता देखकर॥
खुल गईं आँखें फ़लककी हो गया हैराँ जहाँ।
ज़र्रेमें खुरशीद और क़तरेमें दरिया देखकर॥
गर्मिये जोशे मुहब्बत अब नहीं फ़रहत मुझे।
दिल हुआ है सर्द दुनियाँका तमाशा देखकर॥
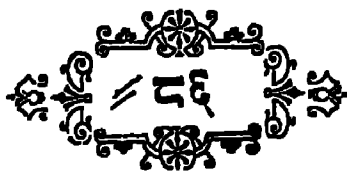
क्यों नहीं सुनते हमारे नाल-ओ फ़रियाद भी।
क्या अभी बाक़ी है कुछ ज़ुल्मो सितम बेदाद भी॥

आप तो आए मगर जोशे जवानी अब कहाँ।
जलते जलते बुझ गया है ये दिले नाशाद भी॥

एक तरफ़ हैं हसरतें और एक तरफ़ है बेवसी।
आप ही आवाद हूँ मैं आप ही बरबाद भी॥

ताकती ही रह गई बुलबुल बिचारी क़ैदमें।
ज़ुल्म होता ही रहा हँसता रहा सैयाद भी॥

बस तू अब मौक़ूफ़ कर ज़ालिम! लगाना वारका।
बे-ज़ुबानी रंग लायेगी दिले नाशाद की॥

ज़िन्दगीमें तो कभी पूछा न हाले दिल मेरा।
क्या हुआ आई जो मरनेपर हमारी याद भी॥

हसरतें सब मिट गईं अब कुछ नहीं फ़रहत यहाँ।
क़ैदमें हूँ और उसके साथ हूँ आज़ाद भी॥

८७

झूमकर काली घटा रुख़सार पै छाई न हो।
चाँद्से चेहरे पै नागिन आके लहराई न हो॥
जब हँसीमें दाँत चमके रातको उस हूरके।
मैंने समझा बर्क़ छिपकर फिर निकल आई न हो॥
पीके साक़ीकी मये दीदार महफ़िल मस्त है।
बनके दुलहन आँख जो उस बुतकी शरमाई न हो॥
बोले ये गुँचे चिटक करके नसीमे बाग़से
ज़िन्दगी बेकार है जबतक बहार आई न हो॥
आँख वह क्या है कि जिसमें हो न मस्तीका सुरूर।
क्या मज़ा है गर जवानी जोशपर आई न हो॥
हो समाँ बरसातका ठंडी हवा हो चल रही।
पास कोई गुलबदन हो और रुसवाई न हो॥
यार हो, हम हों, न कोई और फ़रहत हों वहाँ।
वस्ल कैसा वस्ल है जबतक कि तनहाई न हो॥

जोशे फ़रहत

७८

जब कि साक़ीने दिया पैमाना पैमानेके बाद।
आ गया मैं होशमें बेहोश हो जानेके बाद॥

कर दिया आबाद मैंने क़ैसकी जागीरको।
कौन आयेगा इधरको मुझसे दीवानेके बाद॥

ऐ अजल! हसरत न रह जाये कहीं दीदारकी।
तू अगर आये तो आना यारके आनेके बाद॥

हज़रते नासहकी सब जादू बयानी देख ली।
हो गये ख़ामोश आख़िर मेरे समझानेके बाद॥

राहे उल्फ़तमें फ़ना होकर हुई हासिल बक़ा।
ज़िन्दगी पाई है हमने उन पै मर जानेके बाद॥

ग़ैरकी सुहबत तुम्हें ऐ जाँ मुबारक हो मगर।
पूछता है कौन फिर मतलब निकल जानेके बाद॥

कूचए जानासे फ़रहत उठके जाते हो कहाँ।
क़स्द काबेका किया था तुमने बुतख़ानेके बाद॥

क्यों चुराते हो नज़र आँखें मिला जानेके बाद।
किस लिये पर्दा है यह दिलमें समा जानेके बाद॥
क्या अजब अन्दाज़ है नाज़ो अदाका आपकी।
बेरुख़ी यह क्यों मये उल्फ़त पिला जानेके बाद॥
था यही करना तुम्हें तो क्यों फँसाया इश्क़में।
किस लिये पर्दा किया जलवा दिखा जानेके बाद॥
एक अजब अन्दाज़से कहते हैं आओ होशमें।
होशमें लाते हो क्यों बेख़ुद बना जानेके बाद॥
इस क़दर बरबाद फ़रहत को किया है किस लिये।
क्या मिलेगा ख़ाकमें मुझको मिला जानेके बाद॥

दिल मेरा लेकर अगर तू बेवफ़ा हो जायगा।
तो मेरी क़िस्मतका भी बस फैसला हो जायगा॥

है तमन्ना रंग लाकर यारके हाथों लगूं।
बादे मुर्दन दिल मेरा बर्गे हिना हो जायगा॥

ख़ुद परस्तीसे हमेशा जाम-ए वहदत है दूर।
गर ख़ुदी खोई तो बस ख़ुद ही ख़ुदा हो जायगा॥

इब्तिदामें मानता था फ़र्क वस्लो हिज्रमें।
इन्तिहामें दर्द ही अपनी दवा हो जायगा॥

सबको ऐ फ़रहत! यहाँपर इन्तज़ारे यार है।
देखना तुम वो जो आयेगा तो क्या हो जायगा॥
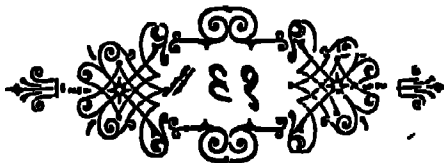
चल गई तलवार पर तलवार लेकिन दूरसे।
हो गये अब्रू निगहके वार लेकिन दूरसे॥

दिल! संभल कर बैठ शायद आ रहे हैं इस तरफ़।
सुनता हूं पाज़ेबकी भनकार लेकिन दूरसे॥

ख़ूबिये क़िस्मतसे मेरे रह गुज़रमें एक दिन।
हो गईं दोनोंकी आँखें चार लेकिन दूरसे॥

सुनता हूँ उनपर हुआ कुछ मेरी उल्फ़तका असर।
वह भी तो हैं तालिबे दीदार लेकिन दूरसे॥

क्या कहें किससे कहें उस बेवफ़ाके इर्द गिर्द।
हमने देखा महफ़िले अग़यार लेकिन दूरसे॥

वेरुख़ी-सी रुख़ पै थी और मुझ पै थे तेवर तने।
आँखमें था वस्लका इक़रार लेकिन दूरसे॥

"हाँ" "नहीं" कुछ भी कहो पर हमने पाया था सनम।
मुस्कुराहटमे दिली इज़हार लेकिन दूरसे॥

शुक्र है सदशुक्र है कुछ तो हुई पूरी मुराद।
सुन लिये फ़रहत के सब अशआर लेकिन दूरसे॥
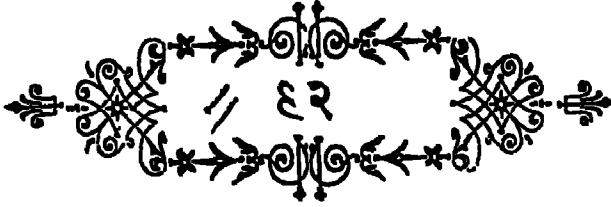
जा रहा हूँ इश्क़की सूरत दिखानेके लिये।
दिलसे दिल और आँखसे आँखें मिलाने लिये॥

चाँदसे रुख़ पै जो उलझे बाल सुलझाता है वो।
तायरे दिल दामे उल्फ़तमें फँसानेके लिये॥

क़त्ल करनेको जहाँमें लाखों बिस्मिल थे पड़े।
क्या मेरा ही दिल था ख़ंजर आज़मानेके लिये॥

देखकर मेरा जनाज़ा बोला आख़िर संगदिल।
मैंने कब था यूँ कहा दुनियासे जानेके लिये॥

अब सँभल बैठो सरे महफ़िल कलेजा थामकर।
लाये हैं फ़रहत की हम ग़ज़लें सुनानेके लिये॥

आप बैठे हैं मुझे क्या आज़मानेके लिये।
शोख़ क्या होते हैं सब योंही सतानेके लिये॥

इम्तिहाँ ले लो भले ही आज़मा लो तुम हमें।
हर तरह तैयार हैं हम ग़म उठानेके लिये॥

तेग़ तो अपनी सँभालो उफ़ न होगी देखना।
झुक पड़ेंगे ख़ुद बख़ुद हम सर कटानेके लिये॥

ख़ूँ किसीका हो रहा है कोई महूवे पेश है।
मर रहा कोई किसी बुतको हँसानेके लिये॥

क्या इसीके वास्ते पैदा हुए हैं ख़ल्कमें।
तुम सतानेके लिये हम ग़म उठानेके लिये॥

भैरवी गाते हो क्या जब चाहिये गाना विहाग।
क्या शबे वसलत ही थी शिकवा सुनानेके लिये॥

हमसे फ़रहत पूछते हो अश्के बारीका सबब।
रो रहे हैं हम तो औरोंको रुलानेके लिये॥
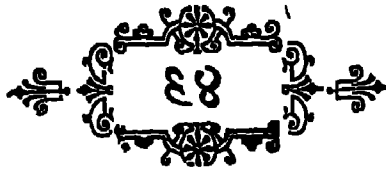
तीरे मिज़गाँ देखते अबरूका ख़ंजर देखते।
कूचए क़ातिलमें जाँबाज़ोंका जौहर देखते ॥

इश्रके दिन मय परस्तोंको जो मिल जाती शराब।
आँख उठाकर भी न सूए हौज़े कौसर देखते ॥

गरचे कुदरतमें दख़ल इन्सानको होता नसीब।
अर्शपर होता दिमाग़ अल्लाहो अकबर देखते ॥

ख़्वाबे ग़फ़लतमें खुलीं रहतीं जो आँख इन्सानकी।
कैसे बन बनकर बिगड़ता है मुक़द्दर देखते ॥

इश्क़की मंज़िल पै जाना आशिक़ोंका काम है।
ख़िज़्र भी आकर यहाँ खा जाते चक्कर देखते ॥

आइना होतीं सज़ाकी और जज़ाकी सूरतें।
जामे ज़म होता तो अंजामे सिकन्दर देखते ॥

फ़रहत इस हस्तीमें होता इन बुतोंको क्यों ग़रूर।
हक़ तो ये है गर जज़ाए रोज़े महशर देखते ॥

है निशाना दिल मेरा तिरछी नज़रके तीरका।
जान शुकराना अदा करती जिगरके तीरका॥

दिल तड़पता है उछलता है कलेजा रात दिन।
इश्क़ मुझको हो गया किस बे-ख़बरके तीरका॥

चैन आता ही नहीं दम भर किसी पहलू मुझे।
हमदमो क्या हाल बतलाऊँ जिगरके तीरका॥

याँ मसीहाकी मसीहाई कभी चलती नहीं।
क्या इलाजे दर्दे दिल हो, उम्र भरके तीरका॥

सूरते शबनम हूँ शबको दिनको हूँ अब्रे बहार।
ये असर ज़ाहिर हुआ शम्सो क़मरके तीरका॥

चाक कर डाला गरीबाँ अपना क्यों गुलकी तरह।
बाग़बाँ घायल हुआ उस बर्गोबरके तीरका।

सूरते लाले बदख़्शाँ हैं मेरा ख़ूने जिगर।
क्या पड़ी है जो हूँ मैं ज़ख़्मी गुहरके तीरका॥

तुरबते फ़रहत पै आकर रो रहा है वो सनम।
ज़ख़्म क्या खाया है मेरी चश्मतरके तीरका॥

गर ! तमाशा देखना हो इस दिले दिलगीरका।
वार कर क़ातिल ज़रा अन्दाज़की शमशीरका॥
क्या ज़ुरूरत ख़ंजरो तेग़ो सिनाकी है मुझे।
आप हूँ मारा हुआ मैं तो अदाके तीरका॥
दिल मेरा है हल्क़ए गेसूके अन्दर ख़ुद फँसा।
मैं गिरफ़्तारे बला हूँ काम क्या ज़ंजीरका॥
मुझको बिसमिल छोड़कर जाता है ऐ क़ातिल ! कहाँ।
तोड़ना दमका ज़रा तो देख ले नख़चीरका॥
ख़ानए दिलमें है फ़रहत के तेरा ऐ जाँ ! मकाँ।
रहता है पेशे नज़र नक़शा तेरी तस्वीरका॥

ज़ख़्म मुझसे कह रहा है बेवफ़ाके तीरका।
दिल तराज़ू हो गया इक दिलरुबाके तीरका॥

ऐ सितमगर! हालते दिल क्या कहूँ ख़ामोश हूँ।
मैं तो हूँ मारा हुआ बाँकी अदाके तीरका॥

मेरी तुरबत पर पसे मुर्दन ये लिक्खा जायगा।
ढेर है ये कुश्तये जौरो जफ़ाके तीरका॥

मैंने ऐ गुलचीं कमाँदारी तेरी सब देख ली।
आशियाँ बरबाद है ख़ुद तू सबाके तीरका॥

मुझसे पूछे लज़्ज़ते दर्दे जिगर फ़रहत कोई।
मैं तो हूँ मारा हुआ शर्मो हयाके तीरका॥

॥ ९८

दिलको है खटका लगा दर्दे निहाँके तीरका।
किस जगह देखा असर यारब कहाँके तीरका॥

पूछा जब उसने अदासे किसका जख़्मी है बता।
सर झुकाके मैं ये बोला इस कमाँके तीरका॥

वो हुए बेताब सुनकर जब मेरा दर्दे जिगर।
ग़म निशाना बन गया ख़ुद दास्ताँके तीरका॥

बेक़रारीमें हमेशा रहते हैं अहले ज़मीं।
जिसको देखो हैं वो घायल आस्माँके तीरका॥

तूने फ़रहत कर दिया बेताब सारी बज़्मको।
आजकल चिल्ला चढ़ा है क्या ज़बाँके तीरका॥

६६
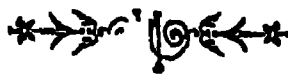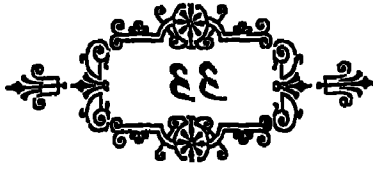
शोर ज़िन्दांमें उठा जब हल्क़ए ज़ंजीरका।
बढ़ गया जोशेजुनूं आगे दिले दिलगीरका॥
हल्क़से दो घूंट उतरे तो नहीं ख़ौफ़े फ़ना।
ख़ूब है आबे बक़ा पानी तेरे शमशीरका॥
सीनए मजरूहमें है रात दिन इसकी ख़लिश।
दिल दिया अल्लाहने मुझको कि टुकड़ा तीरका॥
तू तो यकता है कि आलममें नहीं तेरी मिसाल।
खिंच सके मानीसे क्या नक़शा तेरी तस्वीरका॥
इश्क़की नैरंगसाज़ीका बयां दुश्वार है।
कर्बलामें खूं बहाया हज़रते शब्बीरका॥
हश्रके दिन मेरे मज़हबका अगर होगा सवाल।
साफ कह दूंगा कि बन्दा हूं बुते बेपीरका॥
वस्ले गुलकी शादमानी है मुझे फ़रहत नसीब।
क्या फला फूला हुआ गुलज़ार है तक़दीरका॥

जोशे फ़रहत
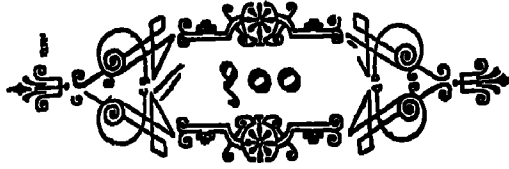
टुक इधर रुख़ फेरकर सुन लो मेरी फ़रियाद भी।
फिर तो कर लेना मुझे नाशाद भी बरबाद भी॥

कौन कहता है कि तुममें ऐब कोई भी नहीं।
आशिक़ोंके दिल चुरा लेनेमें हो उस्ताद भी॥

आहको सख़्तीसे जितने ज़ख़्म सीनेपर लगे।
किस तरह कर दूं बयाँ कुछ होवे तो तादाद भी॥

मेरे दिलका हाल भी सुन पायेगा जो वह कहीं।
थामकर दिल अपना रह जायेगा बस फ़रहाद भी॥

जा रही फ़स्ले बहारी देख क़ैदीकी तरफ़।
रहम इसपर चाहिये इस वक्त ऐ सैय्याद भी॥

तेरे ज़ुल्मोंसे सितमगर! मैं तो मरता हूँ मगर।
इश्क़का अफ़साना रह जायेगा मेरे बाद भी॥

बे-वफ़ाई कर लो जितनी करना हो तुमको सनम!
अर्ज़ इतनी है रहे फ़रहत की लेकिन याद भी॥

दिल चुरा लेते हैं वो दिलमें समा जानेके बाद।
हो गये रू-पोश वह जलवा दिखा जानेके बाद॥

मर चुका आशिक़ है पर आँखें खुलीं पुरआरज़ू।
बन्द हो जायेंगी खुद दीदार पा जानेके बाद॥

दिलमें ही रह जाते हैं अरमाँ न कह पाते हैं हम।
दो घड़ी भी तो नहीं ठहरे वह आ जानेके बाद॥

वस्लके वादेमें थीं कुछ हिज्रकी घड़ियाँ मिलीं।
वस्ल पाया हिज्रके सदमें उठा जानेके बाद॥

हाले दिल अपना सुनाये जाओ ऐ फ़रहत अभी।
क्यों हुए चुप इश्क़का मज़मूँ सुना जानेके बाद॥

दिल तड़पता रह गया उल्फ़त जतानेके लिये।
वो रहे आमादा हरदम दिल दुखानेके लिये॥
वाह रे उल्फ़त कि दोनों किस तरह हैं बेक़रार।
हम तो रोनेके लिये और वह रुलानेके लिये॥
आज़माना चाहते वह अब्रूए ख़ंजरका वार।
हम भी हैं तैयार बस गरदन झुकानेके लिये॥
बन चुका मेरा जिगर है इश्क़के आतिशका घर।
आँख मुझको है मिली आँसू बहानेके लिये॥
चाहते हैं वह जो आना छोड़कर चिलमनकी ओट।
हम भी तो बेताब हैं दीदार पानेके लिये॥
उनकी आँखोंने जिधर देखा किया बस क़त्ले आम।
किस तरहकी हैं क़यामत और आनेके लिये॥
ख़ल्कने देखा न होगा मुझ-सा शैदाई कहीं।
छोड़ जाऊँगा फ़िसाना इक ज़मानेके लिये॥
हो असर चाहे न हो पर संगदिल! कुछ सुन तो ले।
लाया है फ़रहत कोई मज़मूँ सुनानेके लिये।

१०३
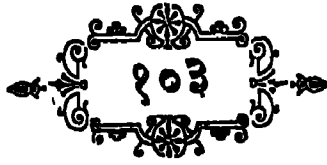
नख़्ले हसरतका वो गदराया समर परदेमें हो।
दिलमें चुभनेवाली वह तिरछी नज़र परदेमें हो॥
होश उड़ता है उड़े दिल तो कहीं उड़ता नहीं।
वह कहाँ जायेगा जब जोशे जिगर परदेमें हो॥
टूट जायेगी कहीं पायेगी जो नज़रोंका बार।
यह मुनासिब है सनम! पतली कमर परदेमें हो॥
जाये बाहर सैर करने बाग़में मेरी बला।
मिस्ल चिलमन दर पै मैं हूँ तू अगर परदेमें हो॥
मैं तुझे देखा करूँ दुनियाँ न तुझको देख पाय।
रात हो बाहर जहाँमें औ सहर परदेमें हो॥
यारको इसने छिपाया इसमें है तारीफ़ क्या।
मेरी फ़ुरकत जो छिपा ले तब हुनर परदेमें हो॥
इस दिले नाचीज़की जो ज़िन्दगी है तुझसे है।
काबे या बुतख़ानेका जो हो सफ़र परदेमें हो॥
फ़रहते बेताबका क्योंकर फड़क उट्ठे न दिल।
चार आँखोंका नज़ारा जब उधर परदेमें हो॥

दिलकी आहोंका ख़ुदावन्दा असर परदेमें हो।
मुझ-सा फिर बेताब मेरा सीमवर परदेमें हो॥
इश्क़ करता है इधर दीवानोंकी परदादरी।
कुछ ख़बर तुमको नहीं तुम तो उधर परदेमें हो॥
ख़ंजरे नाज़ो अदाकी ये सितमगारी नहीं।
क्या क़यामत है कि यूँ ख़ूने जिगर परदेमे हो॥
राज़ खुल जाये न ग़ैरों पर हमारे इश्क़का।
हाँ, निशाना दिलका ऐ तीरे नज़र! परदेमें हो॥
पास फ़रहत के चले भी आयें दर परदा हुज़ूर।
बात जो कुछ है वो ऐ रश्के क़मर! परदेमें हो॥

१०५

गर न शैदा हो कोई तो हुस्न ही बेकार है।
जब न गाहक हो कोई किस कामका बाज़ार है॥

तेग़ है तलवार है आतिश है या यह बर्क़ है।
कह है आफ़त है या ज़ालिम! तेरा दीदार है॥

उड़ गया मिस्ले सनम शमाका सब हुस्नो जमाल।
रह गया परवानोंके परका फ़क़त अंबार है॥

साँसका चलना शबे फ़ुरकत है जारी इस तरह।
कह नहीं सकता कि जाँ इस पार या उस पार है॥

बन गया गोरे ग़रीबाँ किस तरह कूँचा तेरा।
जिस जगह देखा वहीं तुरबत मिली तैयार है॥

दम लबोंपर आ चुका है रूहको है बेकली।
ऐ मसीहा अब कोई दमका तेरा बीमार है॥

बस रहो दामनमें आकर शौक़से ऐ आँसुओ।
गर तुम्हें आँखोंमें रहना इस क़दर दुश्वार है॥

देख लेंगे हम भी फ़ुरहत जब कभी होगा नियाज़।
कैसा वो गुल है गुले गुलज़ार है या ख़ार है॥

१०६

मैं रहूँ परदेके अन्दर दिलरुबा परदेमें हो।
आँखमें मस्ती भरी हो और हया परदेमें हो॥

राज़े उल्फ़त खोल देना बे-मज़ा होगा ज़रूर।
इब्तिदा परदेमें हो और इन्तिहा परदेमें हो॥

सीनेसे सीना लगा हो देखता कोई न हो।
लुत्फ़ हो जब वस्लका सारा मज़ा परदेमें हो॥

छिपके ही तो हमने था रुख़सारका बोसा लिया।
मेरी गुस्ताख़ीकी जो कुछ हो सज़ा परदेमें हो॥

ये भी क़िस्मतसे हुआ **फ़रहत** को है मौक़ा नसीब।
बाद मुद्दत पूरा दिलका हौसला परदेमें हो॥
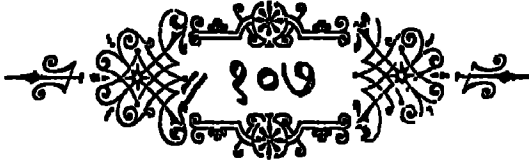
बना हूँ शक्ले मजनूँ मायले ज़ुल्फ़े दुता होकर।
गिरफ़्तारे मुसीबत हूँ तुम्हारा मुब्तिला होकर॥
तरीक़े इश्क़में मरनेको हम जीना समझते हैं।
वफ़ा हासिल करेंगे आख़िरश इसमें फ़ना होकर॥
तड़प कर जान दे देगा कोई बेताब फ़ुरक़तमें।
पशेमानी तुझे होगी बहुत ज़ालिम जुदा होकर॥
लगाते भूलकर भी दिल न अपना हम हसीनोंसे।
ख़बर होती करेंगे बेवफ़ाई दिलरुबा होकर॥
तुम्हारी शोख़ियोंसे जाँ बचाना है बड़ा मुश्किल।
दिले बेताबमें रहते हो तुम दर्दे निहाँ होकर॥
न वो हैं पास गुलशन और वीराना बराबर है।
ख़िज़ाँमें क्या करेगी दामसे बुलबुल रिहा होकर॥
दहाने ज़ख़्म खुल खुलकर करें शुकराना क़ातिलका।
छुरी गर्दन पै चल जाये कहीं तेग़े अदा होकर॥
तुम्हारा ज़ुहदो तकवा अब कहाँ है हज़रते फ़रहत।
बने हो बन्दए इश्क़े सनम मर्दे ख़ुदा होकर॥

जौहरे फ़रहत

१०८
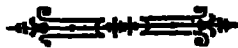
सुनाता हूँ जो उनको हाल मसरूफ़े फ़ुग़ाँ होकर।
जबावे साफ देते हैं वो ख़ंजरकी ज़ुबाँ होकर॥
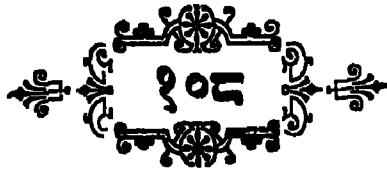
ग़ज़बकी शोख़ियाँ करते हैं बचपन हैं अभी उनका।
नहीं मालूम ढायेंगे सितम क्या क्या जवाँ होकर॥

निशाना बन गये दिल औ जिगर बस इक निशानेमें।
चलाये तीर मिज़गाँके जो अब्रूने कमाँ होकर॥

ज़मीने कूए क़ातिलमें न रखते हम क़दम अपना।
ख़बर होती कि पीसेगी ये हमको आसमाँ होकर॥

ये इक अदना करश्मा इश्क़बाज़ीका है ऐ फ़रहत।
किया है नाम पैदा आशिक़ोंने बे-निशाँ होकर॥

नग़मों-फ़रहत

बयाँ हो किस ज़बाँसे उसकी शाने किब्रियाईका।
कहाँ बन्देकी हस्ती और कहाँ रुतबा ख़ुदाईका॥
हरेक आईनारूमें अपना अक्से हुस्न दिखलाया।
हुआ जब शौक़ उस परदानशींको ख़ुदनुमाईका॥
दरे दिलदार तक आहे रसा पहुँची तो क्या पहुँची।
फ़रिश्तोंको नहीं मक़दूर जब वाँ-पर रसाईका॥
बनाना और मिटाना है तुम्हारे दस्ते कुदरतमें।
अमल बेकार है इस राहमें बस जिब्बः साईका॥
इधर शौक़े शहादतसे सरे तसलीम झुक जाये।
उधर उनका इरादा हो जो ख़ंजर आज़माईका॥
ख़राबाते जहाँमें गर न जोशे मयपरस्ती हो।
मज़ा ज़ाहिद कभी आता नहीं है पारसाईका॥
उसे अपना बनाकर हो गया अपनोंसे बेगाना।
मुझे फ़रहत हुआ है लुत्फ़ हासिल आशनाईका॥

निराली शानकी रबने निगाहे यार रक्खी है।
ग़ज़बकी तेग़ है तीखी तनी तलवार रक्खी है॥
असर बिजलीका है जादू भरी ख़ूँबार चितवनमें।
उठी उठकर बढ़ी बढ़कर जिगरके पार रक्खो है॥
निराली चाल है हरसू निराला रंग उल्फ़तका।
निगाहें जब लड़ीं तो जीतमें भी हार रक्खी है॥
न मुँह फेरो सनम आख़िर शबे वसलत हया कैसी।
गले लगकर भला क्यों बीचमें दीवार रक्खी है।
हमें मज़हबसे क्या मतलब बने हैं इश्क़के बन्दे।
न क़ाबेकी हविस नै हाजते ज़ुन्नार रक्खी है॥
मुसाफ़िर बनके ही शायद इसे वह देख लें आकर।
शहीदे नाज़की मैयत सरे बाज़ार रक्खी है॥
मिलाकर ख़ाकमें इसको न ठुकरा पैरसे ज़ालिम।
दिले नाशादकी मिट्टी पसे दीवार रक्खी है॥
तमन्ना गर हो लेनेकी तो फ़रहत शौकसे ले लो।
हमारी जान यह ज़ेरे क़दम सरकार रक्खी है॥

नासिरे फ़रहत

१११
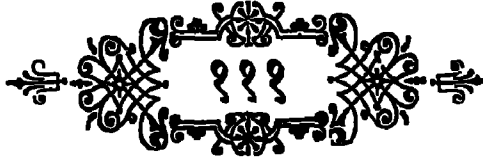
इलाही अब्रुओंकी क्यों तनी तलवार रक्खी है।
किसे अब क़त्ल करनेको छुरी पर धार रक्खी है॥

बनानेको असीरे दाम अपना आज यों किसको।
बलाकी ज़ुल्फ़ ऐ ज़ालिम! सरे रुख़सार रक्खी है॥

जिसे तुम देख लो वह आप ही बेजान हो जाये।
अबस है यह तुम्हारी तेग़ जो तैयार रक्खी है॥

लड़ाई आँख नाहक ऐ दिले नाशाद! उस बुतसे।
फ़तह होगी उसीकी और तेरी हार रक्खी है॥

लगे हैं किस ग़ज़बके रहज़ने हुस्नो शबाब इसमें।
सँभल कर चलना राहे इश्क़ यह पुर ख़ार रक्खी है॥

मज़ा तो जब है हम हों यार हो पर्दा न हो कोई।
हयाकी वस्लमें क्यों दरमियाँ दीवार रक्खी है॥

हशरके दिन भी शरमा जायेंगे वह देखकर फ़रहत।
कफ़नके साथ लिपटी हसरते दीदार रक्खी है॥
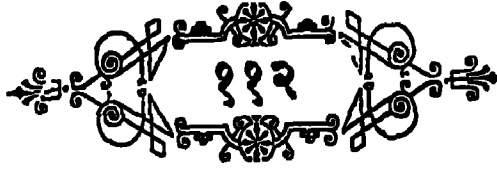
क़यामतका नमूना आपकी रफ़्तार रक्खी है।
मसीहाई इसी अन्दाज़में ऐ यार! रक्खी है॥

नज़र पड़ती है जिसपर थाम लेता है जिगर अपना।
ग़ज़बकी शोख़ी आँखोंमें तेरे अय यार रक्खी है।

न लग जाये कहीं दामनमे इसके ख़ूँ शहीदोंका।
मेरे क़ातिल जो तूने तेज़िये तलवार रक्खी है॥

हमारे ख़ानए दिलकी हमेशा इससे ज़ीनत है।
कहीं वहशत कहींपर हसरते दीदार रक्खी है॥

मुझे फ़रहत हुई है शादमानी इश्क़की हासिल।
कि बहलानेको दिल महफ़िल ये कर तैयार रक्खी है॥

ग़ज़लें फ़रहत

११२
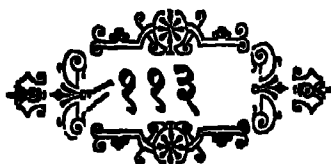
जफ़ायें कर वफ़ाओं पर मेरे तुम दिलरुबा ठहरे।
वफ़ायें कर जफ़ाओं पर तेरे हम बेवफ़ा ठहरे॥

परीशाँ हम रहे बरसों हुए बदनाम दुनियाँमें।
मगर तेरी नज़रमें हम न कुछ भी पारसा ठहरे॥

लगाकर तुझसे दिल अपना हुए गुम ऐसे आलममें।
रहे दुनियाँमें दुनियाँसे मगर ना-आशना ठहरे॥

उठाईं ज़िल्लतें लाखों तुम्हारे हिज्रमें हमने।
बने आवारा फिरते हैं कहीं क्या एकजा ठहरे॥

तलब बोसा किया फ़रहत तो झुंझलाकर वो बुत बोला।
शहंशाह महलक़ाओंकी नज़रमें कब गदा ठहरे॥

नहीं उम्मीद जीते जी दिले ग़मगींसे ग़म निकले।
निकल जाये तमन्ना भी जो जाने पुर अलम निकले॥
गज़बका सामना है हिज्रकी शब जाने शैदाको।
इलाही क्या क़यामत है न वो आये न दम निकले॥
अबस उम्मीद थी संगीं दिलोंसे मेहरबानी की।
वफ़ा उनकी जफ़ा निकली करम उनके सितम निकले॥
हज़ारों उठ गये हस्तीसे दिलमे हसरतें लेकर।
बहुतसे ऐसे अरमाँ थे जो निकले भी तो कम निकले॥
हज़ारों दाग़ खाये हैं जिगरपर क्या तअज्जुब है।
मेरे सीनेका गंजीना अगर गंजे दिरम निकले॥
लिये क़दमोंके बोसे आके फ़रहत रूहे मजनूं ने।
जुनू के क़ैदख़ानेसे अगर घबराके हम निकले॥

जोशे फ़रहत

रंगे हैं आपने सुरमेसे जो तीरे नज़र काले।
न जाने क्या करेंगे आज यह तेग़ो तबर काले॥

बलाके बाल बिखरे हैं तुम्हारे गोरे गालों पर।
ये गेसू हैं कि कोई सो रहे-हैं पुर असर काले॥

मेरी आहोंने कुछ ऐसा ग़ज़बका रंग दिखलाया।
जले जलकर जलनसे हो गये हैं दरके दर काले॥

हिरन काले हुए हैं आह! कितने ही बियाबाँमें।
चमनमें बुलबुलें काली हैं गुल काले शजर काले॥

हुई है सोज़िशे दिलसे ये हालत बाद मुर्दन भी।
कि तुरबतमे कफ़न ओढ़े हुए हैं हर बशर काले॥

चलाकर चोट चितवनकी न तुम दिल तोड़ सकते हो।
कलेजे पर चले हैं इस क़दर घन उम्र भर काले॥

तुम्हारी बेवफ़ाईकी शिकायत क्या करें फ़रहत।
शहादत ख़ूनकी देंगे मेरे दाग़े जिगर काले॥

११६
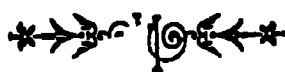
हुए उस गुलबदनको देख फूलोंके बदन काले ।
चले आते हैं आँखोंसे लगा आँखें हिरन काले ॥

ज़रा रुख़सार पर मत गेसुओंको यों लटकने दो ।
ख़ज़ाना हुस्नका ये लूट लेंगे राह ज़न काले ॥

धुवाँ उट्ठा है इतना आतिशे फ़ुरक़तका इस दिलसे ।
समर काले शजर काले चमन काले हैं बन काले ॥

करूँगा मैं न कुछ फ़रियाद पर यह है यक़ीं मुझको ।
शहादत बेवफ़ाकी देंगे महशरमें कफ़न काले ॥

मेरा दिल तोड़नेको थी तेरी हलकी नज़र काफ़ी ।
चलाता क्यों है ऐ ज़ालिम ! मेरे सीने पै घन काले ॥

किसी माहेलक़ाने सैरे दरियाकी थी कल आकर ।
उसीकी यादमें हैं साहिले गंगो जमन काले ॥

फ़तहयाबी तुम्हारी ही हुई दुनियाँमें ऐ फ़रहत ।
तुम्हारे दुश्मनोंके हो गये देखो दहन काले ॥

बनेंगे आहकी तासीरसे सारे चमन काले।
हर इक बुलबुल भी काली होंगी होंगे गुलबदन काले॥
ज़मानेमें :है मातम हो रहा तेरे शहीदोंका।
लिबास अपना ये हैं बदले हुए अहले ज़मन काले॥
चला है रात दिन काँटोंके ऊपर तेरा दीवाना॥
हुए हैं पाँवके छालेसे हर गुंचा दहन काले॥
ज़रा खोले तो आँखें नरगिसे बीमारसे कह दो।
तमाशा देखनेको हो गये हैं बनके बन काले॥
दिले फ़रहत में जबसे इश्क़ने क़ब्ज़ा बनाया है।
हुए हैं सोज़े पिनहाँसे रुख़े रंजो मुहन काले॥

लबे रंगीके आगे हो गये लाले यमन काले ।
किये ज़ुल्फ़ें सियहने नाफ़ये मुश्के ख़तन काले ॥
रहा गर बादे मुर्दन भी असर सोज़े मुहब्बतका ।
लहद्से हम उठेंगे देखना पहने कफ़न काले ॥
धुवाँ पैदा हुआ यह दिल जलोंकी गर्म आहोंका ।
जिधर देखो उधरको हो गए हैं बनके बन काले ॥
जलानेका मेरे चर्ख़े सितमगर यह नतीजा है ।
तेरे सीने पै आते हैं नज़र दाग़े कुहन काले ॥
ग़ज़बकी गरमियाँ हैं आतशीं रुख़सारमें उनके ।
कि जिसको देखकर हो जाते हैं गोरे बदन काले ॥
निगाहे शोख़ उस दिलदारकी देखी जो ऐ फ़रहत ।
तो क़ुरबाँ हो गये सौ जानसे उसपर हिरन काले ॥

फ़लक पर रंग ख़ूनी यह न सुबहो शाम आता है।
जहाँके सामने बस इश्क़का अंजाम आता है॥

निगाहोंने उसे देखा लुटा पर कारवाँ दिलका।
गुनह करता हैं कौन और किसके सर इलज़ाम आता है॥

इधर दिल आप ही फँस जानेको आगे उछलता है।
उधरसे क्यों उड़ा वह गेसुओंका दाम आता है॥

सुबह बेदार होकर सुननेको तैयार हैं गुंचे।
नसीमे सुबहके हाथों कोई पैग़ाम आता है॥

वहाकर अश्ककी नदियाँ वो आतिश-आह उगलेगा।
कलेजा थाम लो महफ़िलमें इक बदनाम आता है॥

तेरे दीदारको आंखें ये नरगिस बनके निकली हैं।
लहदमें भी न उस बेताबको आराम आता है॥

मिली हैं वस्लकी शबके एवज़ ये हिज्रकी घड़ियाँ।
थे तालिब साग़रे मयके फ़नाका जाम आता है॥

वता दो कुछ पता फ़रहत मुझे उस वज़्मे साक़ीका।
नशेमें गिरता पड़ता यह दिले नाकाम आता है॥
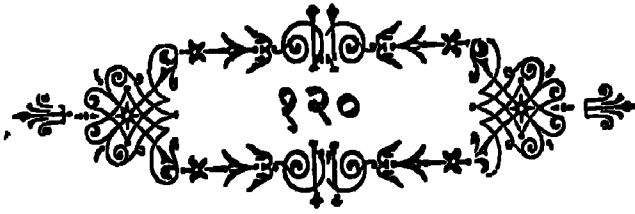
सुना है बज़्ममें वह साक़िये ख़ुद काम आता है।
शराबे अर्ग़वानीका लिये वह जाम आता है॥

नहीं है चैन मुतलक़ बेक़रारारने मुहब्बतको।
नहीं क़िस्मत तो बद्बख़्तोंको कब आराम आता है॥

कभी रुख़सार पर शैदा कभी ज़ुल्फ़ोंका है सौदा।
ख़याल इतना दिले शैदाको सुबहो शाम आता है॥

इसी उम्मीदमें दिल पर मैं अपने दाग़ खाता हूँ।
ये तोशा वो है जो बादे फ़ना भी काम आता है॥

बना है आपसे नादान दाना होके वो ज़ालिम।
वो मुँहको फेर लेता है मेरा जब नाम आता है॥

बुतोंके घरको भी सब ख़ानये काबा समझते हैं।
जो आता है यहाँ बाँधे वही अहराम आता है॥

अभी तो इब्तिदाये इश्क़ है ऐ हज़रते फ़रहत।
तुम्हारे सामने क्या देखना अंजाम आता है॥

१२१

क़फ़समें तायरे दिलको फँसाना किससे सीखा है।
बिला तेग़ो तबर भी ख़ूँ बहाना किससे सीखा है॥

निगाहें करती हैं इक़रार तुम तकरार करते हो।
नहींकी आड़में हाँ को छिपाना किससे सीखा है॥

क़दम रक्खा जो तुमने बुलबुलें आईं बहार आईं।
गुलिस्ताँमें शिगूफ़ोंका खिलाना किससे सीखा है॥

परस्तिश करते हैं वह जिनसे तुम उनसे रूठे ही रहते हो।
बताओ तो बुतो ये रूठ जाना किससे सीखा है॥

न कुछ ख़ौफ़ो ख़तर है इस क़दर बढ़ बढ़के चलते हो।
नज़रसे होके एकदम दिलमें आना किससे सीखा है॥

शमारू हुस्नसे तेरे ये रौशन सारी महफ़िल है।
मुझे यूं मिस्ले परवाना जलाना किससे सीखा है॥

दिया फ़रहत ने दिल तुमने चलाया नाज़का ख़ंजर।
वफ़ामें भी जफ़ाका रंग लाना किससे सीखा है॥
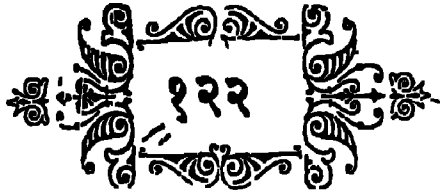
नज़रकी बिजलियाँ हरदम गिराना किससे सीखा है।
जो हैं ख़ुद दिल जले उनको जलाना किससे सीखा है॥
तेरे बाज़ूके सदक़े और तेरी तलवारके क़ुरबाँ।
बता क़ातिल! कि ख़ंजर आज़माना किससे सीखा है॥
मेरी हस्तीको भी हरफ़े ग़लत क्या आप समझे हैं।
ज़रा कहिये बनाना और मिटाना किससे सीखा है॥
सितमगर यों बिछाकर दामे गेसू दोशपर अपने।
हज़ारों तायरे दिलको फँसाना किससे सीखा है॥
सितम ईजाद ज़ालिम फ़ितनागर हो और जफ़ाजू हो।
दिले फ़रहत को यूँ नाहक सताना किससे सीखा है॥

मुकरना करके वादे दिल दुखाना किससे सीखा हैं ।
मचलना रूठना बातें बनाना किससे सीखा है ॥
गुलोंका हुस्न सब तुमने चुराया अपने होठोंमें ।
अदाके दाममें दिलको फँसाना किससे सीखा है ॥
सरे महफ़िल दुतरफ़ा वार होता है हज़ारों पर ।
नज़रके दोरुखे भाले चलाना किससे सीखा है ॥
तुम्हें होती ख़ुशी लेकिन हमारी जान जाती है ।
किसीको क़त्ल करके मुस्कुराना किससे सीखा है ॥
निकल पड़ते हैं मुरदे गोरसे होकर जो तुम गुज़रे ।
शहीदोंको मज़ारोंसे उठाना किससे सींखा है ॥
जो तुम आये तो सबकी जान भी क़ालिबमें फिर आई ।
मकाँ उजड़े हुए फिरसे बसाना किससे सीखा है ॥
ग़ज़ब थी सादगी उसपर ज़रो ज़ेवर, क़यामत है ।
जवानीमें जवानीको सजाना किससे सीखा है ॥
तुम्हारी जब ज़ुबाँ खुलती है रौनक़ आ ही जाती है ।
ये फ़रहत का कलामे आशिक़ाना किससे सीखा है ॥
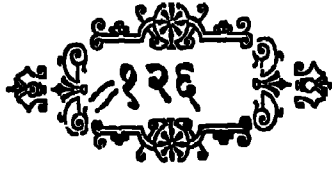
किये तेग़े अदाने इस दिले दिलगीरके टुकड़े।
नहीं ये दिलके टुकड़े हैं मेरी तक़दीरके टुकड़े॥

खुदा रक्खे तरक्क़ी पर अगर वहशत रही मेरी।
तो कर डालूंगा एक दिन पाँवकी ज़ंजीरके टुकड़े॥

मेरे लख़्ते जिगरको देखकर हर शख़्स कहता है।
कोई हैं तीरके टुकड़े कोई शमशीरके टुकड़े॥

ज़रे ख़ालिस बना देते हैं दममें क़ल्बे मुज़तरको।
मेरे अश्कोंके क़तरे हैं कि हैं अकसीरके टुकड़े॥

दिले फ़रहत से पूछे कोई राज़े इश्क़ो उल्फ़तको।
किये दस्ते जुनूँ से जामये तदबीरके टुकड़े॥

मिले सौगातमें मुझको जो ये तहरीरके टुकड़े।
कहूँ शमशीरके टुकड़े इन्हें या तीरके टुकड़े॥

न शैदा ही हुआ वह तो हुआ तेरा ही सौदाई।
मुसव्वरने बनाये जो तेरी तसवीरके टुकड़े॥

इसी ख़्वाहिशको लेकर रात दिन आँसू ढलकते हैं।
तेरी आग़ोशमें भर जायँ बस तासीरके टुकड़े॥

ये कसकर बाँध ही लेंगे तेरी उड़ती हुई आँखें।
हैं आहनसे कड़े इन आहोंकी ज़ंजीरके टुकड़े॥

ज़हे क़िस्मत कि फ़रहत से मिला तू इस तरह आकर।
कि बस, तक़दीरके आगे हुए तदबीरके टुकड़े॥

तबर फीके पड़े पानी हुए शमशीरके टुकड़े।
तेरी नज़रोंकी तेज़ीने किये हैं तीरके टुकड़े॥
जफ़ायें दे रहा है क्यों वफ़ादारोंको ऐ ज़ालिम।
नहीं लाज़िम है करना दिलसे दामनगारके टुकड़े॥
मज़ा था ज़िन्दगीका वस्लकी उम्मीद पर क़ायम।
हुआ मुनकिर जो तू बस हो गये तक़दीरके टुकड़े॥
सुना दे शोख़! फिर इकबार वह शीरीं कलाम अपना।
मेरे ज़ख़्मोंके मरहम हों तेरी तक़रीरके टुकड़े॥
तुझे फ़रहत समझते थे कि है उल्फ़तमें लासानी।
ये तूने कर दिये क्यों अपनी ही तसवीरके टुकड़े॥

ग़ज़ल फ़रहत

१२६
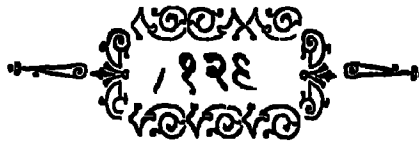
कोई हस्ती न कैसे अपनी वारे चुलबुलेपन पर।
ज़माना जान देता हैं तुम्हारे चुलबुलेपन पर॥

कहा मैंने जो उससे जाने आलम तुम पै मरता हूँ।
तो इक अन्दाज़से बोले हमारे चुलबुलेपन पर॥

तुम्हारी शोख़ियोपर महरोमह क़ुरबान होते हैं।
मिटे जाते हैं गरदूँके सितारे चुलबुलेपन पर॥

मुझे शक था निगाहे नाज़ उनकी जान लेती है।
मगर आँखें तो करती हैं इशारे चुलबुलेपन पर॥

जो पूछेगा ख़ुदा किसपर दिलो ईमाँ लुटा बैठा।
तो कह दूँगा बुतोंके प्यारे प्यारे चुलबुलेपन पर॥

तुम्हें ख़ुद इश्क़बाज़ीने किया बदनाम ऐ फ़रहत!
अबस इलज़ाम रखते हो बेचारे चुलबुलेपन पर॥

मैं खो बैठा हूँ अपनेको तुम्हारे चुलबुलेपन पर।
दिलो जाँसे हुआ शैदा हूँ प्यारे चुलबुलेपन पर॥

ये मयख़ाना है बस आबाद तेरी एक चितवनसे।
निसार ऐ जाँ हैं सदहा मयके प्याले चुलबुलेपन पर॥

हिजाब इतना न कर पर्दानशीं परदेके बाहर हो।
कि देख, होता है सदक़े चाँद तेरे चुलबुलेपन पर॥

जो धोखेसे भी वह गंजे शहीदाँ तक चला जाये।
तो जी उठेंगे क़बरोंसे भी मुरदे चुलबुलेपन पर॥

शफ़क़ फीकी पड़े फ़रहत जो वो रुख़सारे लब देखे।
लुटायें तश्त गौहरके सितारे चुलबुलेपन पर॥
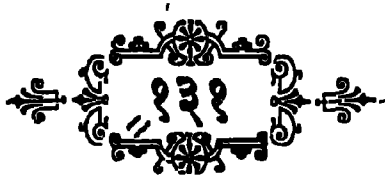
हुए कुरबान हैं लाखों सनमके चुलबुलेपन पर।
उसे भी नाज़ है हर आन अपने चुलबुलेपन पर॥

तमन्ना ख़ंजरोंके चोटकी दिलसे नहीं निकली।
तड़प कर रह गये मक़तलमें कितने चुलबुलेपन पर॥

ख़ुश आमद किस तरह उस शोख़की रग रगमें है इसकी।
नज़ाकतको भी प्यार आता है उसके चुलबुलेपन पर॥

बनाकर उसको चंचल चुलबुलाहट किस क़दर भर दी।
हँसी है आ रही मुझको तो रबके चुलबुलेपन पर॥

बताता हूं तुम्हें फ़रहत कि जो कुछ राज़े बातिन है।
न चितवन पर न रुख़पर मैं हूं सदक़े चुलबुलेपन पर॥

मुझीसे मेरी तबियतका वो करते हैं सवाल उलटा।
कहूं क्या हज़रते दिलका है जब इस वक़्त हाल उलटा॥
मेरे सीनेके ज़ख़्मों पर वो क्या मरहम लगायेंगे।
निकलती उफ़ मेरे मुंहसे वह होता हैं निहाल उलटा॥
उन्हींके वस्लकी उम्मीद पर दिल थामे बैठे थे।
रहेगा सब्र कबतक जब हुआ उनका ख़याल उलटा॥
समझता था कि चिलमनसे ही वह सूरत दिखा देंगे।
बना माहे मुहर्रम ईदका मुझको हिलाल उलटा॥
भिखारी था मैं उसका जिसके दरकी ख़ाक छानी थी।
मुझे ठुकराके उसने कर दियो कैसा कमाल उलटा॥
समझ पड़ता नहीं कैसी सनमको यह वफ़ादारी।
बनाकर अपना ख़ादिम कर दिया दिलको हलाल उलटा॥
ग़मे दरियामें बहता हूं नहीं साहिलकी भी परवा।
मुहब्बतके भँवरमें किश्तिए ग़मका है पाल उलटा॥
ज़हे क़िस्मत कि उलटा चल गया फ़रहत का ये जादू।
यहाँ सैयादके ऊपर ही उसका सारा जाल उलटा॥

जोशे फ़रहत

१३३

ग़ज़ब है चालमें शोख़ी अदामें है कमाल उलटा।
तुम्हारा रुख़ जो देखा हूरोंका सारा जमाल उलटा॥
पड़े जीनेके लाले सीनेको देखा जो गुञ्चोंने।
दमक दन्दाँ की जो देखी फ़लकसे भी हिलाल उलटा॥
हुई आफ़त दुतरफ़ा तुमने जो शीरीं दहन खोला।
सितार उलटा था महफ़िलमें यहाँ पिंजड़ेमें लाल उलटा॥
तुम्हारे गेसुओंने मारकी मस्ती हवा कर दी।
तुम्हारी देख आँखें जंगलोंमे जा ग़िज़ाल उलटा॥
उठाये हाथ जो तुम तो दरिया हुस्नका उमड़ा।
मिले फ़रहत से तुम आकर ज़माने पर वबाल उलटा॥

जोशे फ़रहत

१३४
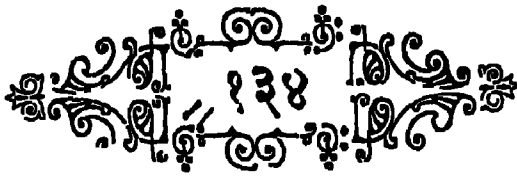
बनाया दिल चुराकर पहिले तो ख़ाना ख़राब उलटा।
किया क़ातिलने बिसमिलसे ये फिर कैसा हिजाब उलटा॥
गुलोंमें मुर्दनी-सी छाई उसकी मुस्कुराहटसे।
हटा रुख़से नक़ाब उनके फ़लकसे आफ़ताब उलटा॥
नज़र करता हूँ दिल, पर वह नज़र मुझसे फिराते हैं।
उन्होंने सीख रक्खा है मुहब्बतका हिसाब उलटा॥
जो कुछ कहता हूँ तो मुझको समझ लेते हैं सौदाई।
पिलाकर इश्क़का प्याला दिया कैसा ख़िताब उलटा॥
मिटाया मिट नहीं सकता भरा जो बाँकपन उनमें।
न सीधे होंगे वह चाहे बहे दरियाका आब उलटा॥
उसे मरहम दिया मर हम गये पर उसके पास आकर।
हमारे वास्ते तो हो गया कारे सवाब उलटा॥
तुम्हें मैं देखता था बन्द थीं आँखें मेरी जबतक।
जो आँखें खुल गईं तो देखा बस अंजामे ख़्वाब उलटा॥
मेरे इज़हारे उलफ़त पर वो फ़रहत चल दिये उठकर।
करूँ किससे मैं शिकवा है ज़माना ही जनाब उलटा॥

न भूला है न भूलेगा निगाहें चार हो जाना।
गलेसे उनका लगना और गलेका हार हो जाना॥

बहुत अच्छे थे ख़्वाबे ऐशमें बेहोश सोते थे।
गुलोंको क्यों सिखाया ऐ सबा! बेदार हो जाना॥

इधरको आबलापा आ रहा है जोशे वहशतमें।
क़दम बोसीको अब तैयार नोके ख़ार हो जाना॥

ग़ज़ब करती हैं गर आँखें तेरी सीधी भी उठती हैं।
क़यामत हैं तेरे अब्रूका बस ख़मदार हो जाना॥

अजब दुनिया है ग़ैरोंको नहीं भाती ख़ुशी मेरी।
किसीका फूलना फलना किसीका ख़्वार हो जाना॥

ज़मानेने न समझा ख़ाक क्या है राज़ फ़रहत का।
कोई तो बात है रुसवा सरे बाज़ार हो जाना॥

१३६
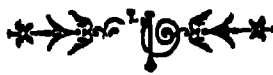
नहीं ज़ेबा तुम्हें गुल होके मिस्ले ख़ार हो जाना।
ख़ुशीकी बात करना भी मुझे दुश्वार हो जाना॥

तुम्हारे नाज़पर जो दीनों ईमाँ सब लुटा बैठे।
उन्हींकी शक्लसे जाने जहाँ बेज़ार हो जाना॥

अदाओंसे निराला किससे ये अन्दाज़ सीखा है।
कहीं सूफ़ार हो जाना कहीं तलवार हो जाना॥

यही डर है न बेताबीकी रह जाये ख़लिश बाक़ी।
तू ऐ तीरे निगाहे नाज़ दिलके पार हो जाना॥

तुम्हें गर क़त्ल करना और ज़िन्दा करना आता है।
मेरे हिस्सेमें आया है फ़िदा हरबार हो जाना॥

शबे वादा उन्हें फ़ुरसत न हो ग़ैरोंसे मिलनेकी।
तू दस्ते शौक़दिल ऐसा गलेका हार हो जाना॥

इरादा है कि मयख़ानेसे फ़रहत जाये क़ाबेको।
कहो शेख़े हरमसे तुम भी अब तैयार हो जाना॥

न बिजली सी गिरा कर तेग़ या तलवार हो जाना।
गले लगकर अदासे तुम गलेका हार हो जाना॥

बिखरकर रुख़ पै मुझको बेरुख़ी करके वो डसते हैं।
तेरी ज़ुल्फ़ोंका ऐ ज़ालिम! ग़ज़ब है मार हो जाना॥

तेरे दाँतोंसे हीरेकी कनी हीरोंने खाई है।
तेरे रुख़सारके आगे गुलोंका ख़ार हो जाना॥

तुम्हारा देखके रुख़ यह ग़रूर अपना भुला बैठा।
सनम! अब चाहता है चाँद ख़िद्मतगार हो जाना॥

यही अरमाँ है दिलमें अर्ज़ भी है तुमसे यह मेरी।
मुझे अपना बनाकर तुम मेरे सरकार हो जाना॥

चमनमें हम जो बैठे हों तुम्हारी यादमें ग़ाफ़िल।
तो इतनी देरमें पाज़ेबकी झनकार हो जाना॥

अदाएँ बाँकी तिरछी सैकड़ों देखी हैं फ़रहत ने।
न भौंहें तानकर तुम भी कहीं ख़मदार हो जाना॥
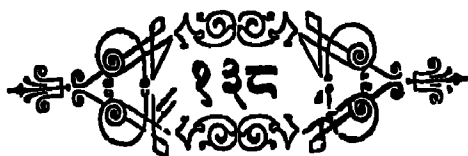
लगाकर आँखमें सुरमा नई वो धार धरते हैं।
बिगाड़ेंगे किसे जो आज वो इतना सँवरते हैं॥

निकलते हैं न सीधे सैरको जब वह निकलते हैं।
निगाहों पर भी चढ़कर दिलके महलोंमें उतरते हैं॥

जो वह सीधे हुए बरबाद भी आबाद रहता है।
ज़रा तिरछी नज़रमें शादको बरबाद करते हैं॥

खिज़ाँमें कहते हैं बुलबुलसे वह देखो बहार आई।
उड़ा बे-परकी किस अन्दाज़से वह पर कतरते हैं॥

हमारी ही तरह कुछ है अजब मरना हमारा भी।
हमें जो क़त्ल करता है उसी क़ातिल पै मरते हैं॥

ज़बाँ जो खोलते हैं हम तुझे क्यों तैश आता है।
न शिकवा कुछ तेरा करते फ़क़त इक आह भरते हैं॥

कहे जिस जिसका जी चाहे कि ये फ़रहत है दीवाना।
कभी क्या इश्क़के बन्दे भी रुसवाईसे डरते हैं॥
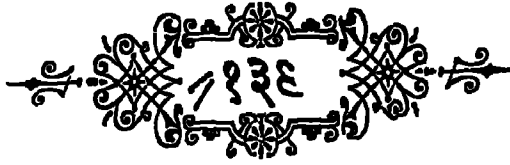
मुझे बरबाद करनेके लिये ही तो सँवरते हैं।
झलक इक बार दिखला कर मेरे दिलमें ठहरते हैं॥
अभी इक आनमें क़ुरबान हम जी जानसे होते।
मगर अय संगदिल! तेरे सितमसे हम भी डरते हैं॥
तड़पता है जिगर बेचैन होकर देखता है ये।
वो कब आकर मेरे सीने पै अपना हाथ धरते हैं॥
किया हमने नज़र दिल आपने उसको मसल डाला।
सरे बाज़ार कैसा ज़ुल्म यह सरकार! करते हैं॥
ख़ुशीसे सहते हैं फ़रहत सितमगारीके सदमोंको।
जो निकला बेवफ़ा उस यारकी सूरत पै मरते हैं॥
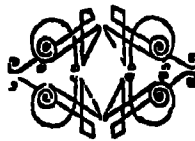
सुना था ज़िन्दादिल हो, ज़िन्दादिलके जौहरी तुम हो।
मेरे सरकार! पर मेरे लिये कुछ और ही तुम हो॥

ज़मानेकी हवामें वह गये अग़यार बादलसे।
न कम हो नूर जिसका उस क़मरकी चाँदनी तुम हो॥

जिन्होंने कुछ न समझा हो गई उनकी समझ उलटी।
ग़ज़बके तुम हो जलवागर अजब इक दिल्लगी तुम हो॥

सवाले वस्ल पर बोले चलो, जाओ, हटो, भागो।
खड़े हो गालियाँ खाकर बड़े बेशर्म अजी तुम हो॥

बने आशिक़ तो आख़िर वस्ल हासिल करके ही छोड़ा।
कहूँगा मैं तो फ़रहत बातके सच्चे धनी तुम हो॥

अजब शै हो उधर तो इश्क़की पैनी छुरी तुम हो।
इधर लेकिन तड़पते बिस्मिलोंकी ज़िन्दगी तुम हो॥

ज़रा ठहरो, तुम्हारा भी ज़माना आनेवाला है।
ग़लत है गुल तुम्हें कहना अभी कच्ची कली तुम हो॥

जो पूछा मैंने क्या जीता बचा आशिक़ कहीं कोई।
अदासे तो वो आँखें फेरकर बोले अभी 'तुम हो'॥

जिधर देखो उधर ही बस हमीं दोनोंकी शोहरत है।
ज़ुबाने ख़ल्क पर अब तो कभी मैं हूँ कभी तुम हो॥

जहाँ तुम हो नहीं उस अंजुमनका है मज़ा फीका।
उसी महफ़िलमें रौनक़ है जहाँ फ़रहत अजी तुम हो॥
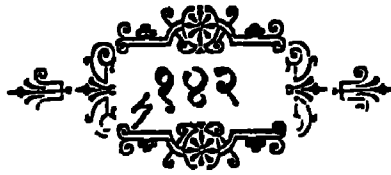
पता हूँ मैं तुम्हारा और मेरा भी पता तुम हो।
न मैं तुमसे जुदा हूँ और न मुझसे ही जुदा तुम हो॥
जो तुम काबा हो तो बस जान लो क़िबलेनुमा मैं हूँ।
जो दिल मेरा है परवाना तो शमआकी ज़िया तुम हो॥
जो बलखानेमें नागिन हो तो दिलशिकनीमें ख़ंजर हो।
बिगड़ने पर क़ज़ा तुम हो सुधरने पर वफ़ा तुम हो॥
फ़लकके हो सितारे और सितारेकी चमक तुम हो।
दिले: हसरतज़दा मैं हूँ तो दिलका मुद्दआ तुम हो॥
पढ़ो, पढ़कर सुनो, सुनकर हँसो, हँसकर इधर देखो।
कहें क्या औरसे फ़रहत के दिलकी इल्तिजा तुम हो॥
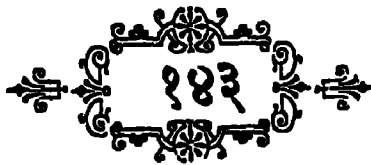
फँसा कर दामे उल्फ़तमें मुझे जाते कहाँ तुम हो।
जहाँ दिल है वहाँ मैं हूँ वहाँ दिल है जहाँ तुम हो॥

क़यामत है भवोपर आँखमें लेकिन मसीहाई।
ग़मे फ़ुरक़तकी ईज़ा हो तो उल्फ़तका मज़ा तुम हो॥

तड़प जानेमे विजली हो वरस जानेमें बादल हो।
क़यामत तुम हो ख़फ़गीमे ख़ुशीमे गुलसिताँ तुम हो॥

तुम्हारा घर है बुतख़ाना तुम्हारा दर ही मसजिद है।
मेरा क़ाबा तुम्हीं हो और मेरे दिल-सिताँ तुम हो॥

जो मैं बोला जिगर है चाक मरहमकी तमन्ना है।
तो वस वह चल दिये कहकर कि हाँ कहते वजा॰तुम हो॥

तुम्हे देखा तो उसका नाम सवको याद आता है।
शहीदेनाज़ था जो वे-निशाँ उसके निशाँ तुम हो॥

हँसे, हँसकर छिपे, छिपकर वढ़े, वढ़कर कहाँ भागे।
दिले फ़रहत में जिसकी याद है वो जाने जाँ तुम हो॥

नौरंगी फ़सल

१४४
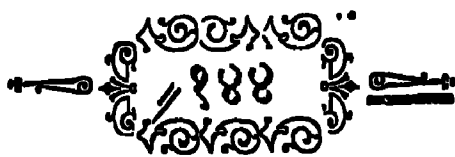
बहारे नौजवानी वस्लमें ऐसे तुले तुम हो।
चले, चलकर मिले, मिलकर खुले, खुलकर घुले तुम हो॥
जो मुझको ख़्वाबमें देखा तो क्यों हैरत हुई इतनो।
जगे, जगकर उठे, उठकर झॅपे, झॅपकर हॅसे तुम हो॥
शमाके इश्क़में क्या क्या मिला बोलो तो परवाने?
खिंचे, खिंचकर जले, जलकर मरे, मरकर मिटे तुम हो॥
सबक़ कैसे अजब सीखे हैं ये उल्फ़तके मक़तबमें।
सजे, सजकर डरे, डरकर चिढ़े, चिढ़कर लड़े तुम हो॥
कहाँ हो तालिबे दीदार यह बेदम तड़पता है।
मिले, मिलकर छिपे, छिपकर फिरे, फिरकर हटे तुम हो॥
न कनकव्वेसे कम कुछ हज़रते दिल! हम तुम्हें समझे।
बॅधे, बॅधकर उड़े, उड़कर मुड़े, मुड़कर गिरे तुम हो॥
रहे उल्फ़तमें तुमने बात कुछ मानी न फ़रहत की।
चढ़े, चढ़कर रुके, रुककर हॅसे, हॅसकर फॅसे तुम हो॥

जो आये हो तो बैठो, क्या यही है वक़्त चलनेका।
मज़ा तो देखते जाओ हमारे दम निकलनेका॥

अजी क्यों आप करते हैं निगाहें शर्मसे नीची।
नतीजा है यही देखो शबे वादा मचलनेका॥

बहे बैठे बिठाये क्यों तुम्हारी आँखसे आँसू।
धुवाँ क्या जाने-जाँ लगता है मेरे दिलके जलनेका॥

इधर है हुस्नका दरिया उधर है महफ़िले रहज़न।
चला जो राहे उल्फ़तमें नहीं वह फिर सँभलनेका॥

बहुत अरमाँ थे दिलमें पर कहाँ अब वे कहाँ मैं हूँ।
कहाँ मौक़ा मिला फ़रहत कभी उनके निकलनेका॥

जोशे फ़रहत

ख़ुदाका शुक्र जाँ तनसे शबे फ़ुरक़त निकलती है।
बला सरसे टली घरसे बड़ी आफ़त निकलती है॥

इलाही! दिल न ठहरा ख़ानए सद आरज़ू ठहरा।
टटोले जब ज़रा कोई तो इक हसरत निकलती है॥

ज़मीने कूचए क़ातिल भी क्या गंजे शहीदाँ है।
कुरेदें जिस जगह मिट्टी वहीं तुरबत निकलती है॥

हमे ये देखना है ऐ सनम! रोज़े क़यामतमे।
तसल्लीकी हमारे कौन-सी सूरत निकलती है॥

अदबसे पीछे पीछे है निगाहे हसरते फ़रहत।
किसीके साथ आहे दिल दमे रुख़सत निकलती है॥

पड़ा रंजो अलमका इस क़द्र बाँका दुधारा हैं।
हुआ मुँह ज़ख्मका खुलकर अदासे गुलहज़ारा है॥

हुए हैरतज़दह हैं दोस्त दुश्मन देखकर मुझको।
फ़लक पर जब उठा ऊँचा मुक़द्दरका सितारा है॥

शफ़क़ने रंग दिखला कर मिटा दी ख़ल्ककी हसरत।
गुहर शबनमने बिखरा कर गुलोगुलशन सँवारा है॥

समझमे कुछ नहीं आता है ये क्या राज़े पिनहाँ है।
मगर सूए क़यामत ये मेरी आहोंका नारा है॥

तुम्हारा ज़िक्र फ़रहत ही नहीं करता फ़कत तनहा।
ज़ुबाँने ख़ल्क पर देखा है बस चर्चा तुम्हारा है॥

अबस तीरे निगहसे शीशए दिल तोड़े जाते हो।
पिलाकर शर्बते दीदार मुँह क्यों मोड़े जाते हो॥

गिरा दी तुमने बिजली हमने जो आबे बक़ा माँगा।
सितारे नामुरादों पर सितमके तोड़े जाते हो॥

ख़बर भी लो पड़ा तुरबतमें वह तनहा तड़पता है।
शहीदेनाज़को किसके सहारे छोड़े जाते हो॥

बिछा दी हर क़दमपर हमने तेरी राहमें आँखें।
औ राहे ज़िन्दगीमें तुम बिछाये रोड़े जाते हो॥

बहुत अच्छी थी बेहोशी कि तुमको भूल बैठा था।
दिखाकर जलवा अपना क्यों लगाए कोड़े जाते हो॥

मेरी इस दिलकी महफ़िलसे तुम हरगिज़ उठ नहीं सकते।
नज़रमें अहले महफ़िलकी जो महफ़िल छोड़े जाते हो॥

नसीहत है ये **फ़रहत** की चलो आहिस्ता आहिस्ता।
ख़िरामे नाज़पर लाखोंके दिल क्यों तोड़े जाते हो॥

जौहरे फ़रहत

नहीं ज़ेबा है तुमको हुस्नपर मग़रूर हो जाना।
न आना आशिक़ोंके पास भी और दूर हो जाना॥

मये उल्फ़त है साक़ी है मगर मैं पी नहीं सकता।
इसीका नाम हैं तक़दीरसे मजबूर हो जाना॥

तू उस आलमको क्या जाने तुझे है क्या ख़बर साक़ी।
किसीका शीशएदिल बेख़ुदीमें चूर हो जाना॥

ख़ुशीसे ऐ क़ज़ा आजा लगा लूं मैं गले तुझको।
यही होगा मेरा इस ख़ल्क़मे मशहूर हो जाना॥

शबे फ़ुरक़तमें जीनेसे यही अच्छा है ऐ फ़रहत!
कि ज़हरे इश्क़ पीकर वस्लमें मसरूर हो जाना॥

सितम है, क़ह्र है, सख़्ती है, दिल शिकनी है, आफ़त है।
जफ़ा है, ज़ुल्म है, जामे फ़ना है, हाँ क़यामत है॥
कहाँ वह वस्लकी शब थी कहाँ ये हिज्रकी घड़ियाँ।
ग़ज़ब है, ज़्यादती है, जब्र है, कैसी ये ज़िल्लत है॥
सितम है, दिल भी दे देनेपर उसने रुख़ नहीं फेरा।
बिला शक बेरहम है, बेवफ़ा है, बे-मुरव्वत है॥
हज़ारोंकी नज़र हरदम लगी उस बुत पे रहती है।
अदा है, नाज़ है, मस्ती है, शोख़ी है, नज़ाकत है।
अजब क्या है अगर फ़रहत है उसके चाहनेवाले।
जवानी है, तबीयत है, अदा है, तर्ज़े उल्फ़त है॥

औरत का हुस्न
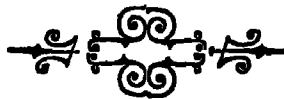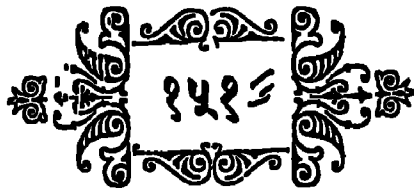
शबे तारीक गेसू हैं जबीं माहे मुनव्वर है।
हिलाले ईद भी क़ुर्बां ख़मे अवरूके ऊपर है॥
निगह ख़ंजर मिज़ह नश्तर जगाया आँखमें जादू।
फड़क वीनीकी करती नाकमें दम दिलका अक्सर है॥
शकर लब सिल्के गौहर दाँत हैं ग़ुञ्चा दहन तेरे।
ज़कनकी चाह यूसुफ़को सरासर ऐ गुलेतर है॥
समझते है तेरे रुख़सारको तफ़सीरे क़ुरआनी।
सदफ़ है कानकी सूरत कि यह काने जवाहर है॥
सुराहीदार गर्दन ख़ूब है पुर ज़ोर बाज़ू हैं।
कलाई और पंजे पर फ़िदा हर इक दिलावर है॥
लकीरें हैं हथेलीकी कि मौजें हैं समन्दरकी।
हर इक उक़्देको हल करना तेरे नाख़ुनके अन्दर है॥
नहीं सीनेमें कीना अल्ला अल्ला क्या सफ़ाई है।
शिकम मख़मल है नाफ़ा, नाफ़का नाफ़ेसे बेहतर है॥
कमर है वालसे वारीक तो है वो पुश्त आईना।
हैं रानें साफ़ विल्लूरी ज़मानेमें ये अज़हर है॥

❀ तौसीफ़ फ़रहत ❀

कफ़े पा पर यदे बेज़ा है क़ुर्बां जान और दिलसे।
क़यामत चाल है तेरी फ़िदा जिसपर कि महशर है॥

सरापा इस सरापासे कहे बढ़कर कोई फ़रहत।
ये शाने किब्रिया है या सरापा तेरा दिलवर है॥

निराले नाज़के पाले ये कैसे हुस्नवाले हैं।
ग़ज़बके संगदिल हैं ये अजब अन्दाज़वाले हैं॥

ये आँखें हैं तुम्हारी या कि मस्तानोंकी हसरत है।
शराबे नाज़के साक़ी ये दो लबरेज़ प्याले हैं॥

तुझे जो देख लेता है वही बेताब होता है।
तेरी चितवनके घायल अपना अपना दिल सँभाले हैं॥

मज़ा काँटो पै चलनेका कोई पूछे मेरे दिलसे।
किसीके पाँवमें होगे तो मेरे दिलमें छाले हैं॥

ग़ज़बमें जान है फ़रहत किसे रोकूँ किसे थामूँ।
मेरी आहोंसे बढ़कर ये मेरे पुरदर्दनाले हैं॥

कलामे फ़रहत

बलासे मुद्दई दुश्मन हमें अपना बना लेंगे।
हमारा क्या बिगाड़ेंगे बिगड़कर हमसे क्या लेंगे॥

हज़ारों थामकर दिल बैठ जायेंगे सरे महफ़िल।
कमाने अब्रू पर जब तीर मिज़गाँके चढ़ा लेंगे॥

परी पुतली नज़र जादू बला चितवन इशारा है।
मुसख़्ख़र अपना कर लेंगे वो आँखें जिस पै डालेंगे॥

पड़ा है वास्ता जिस जिसको तेरी महरो उल्फ़तसे।
कभी वो नाम उल्फ़तका न फिर ऐ बेवफ़ा लेंगे॥

ज़ुबाँसे कुछ न बोलेंगे वो हरफ़े मुद्दआ सुनकर।
यही फ़रहत है होनेको हयासे सर झुका लेंगे॥

नाले फ़ुरक़त

१५४
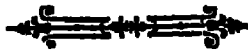
शबे फ़ुरक़त ख़याले यार जब ऐ जानि जाँ होगा।
बहेगा जो मेरी आँखोंसे आँसू ख़ूँ चिकाँ होगा॥
सितम होगा ग़ज़ब होगा क़हर होगा ज़मानेमें।
मरेंगे हम यहाँ लेकिन न जाने तू कहाँ होगा॥
ये तुरबत है तेरी या हसरते दीदार सोती है।
उमीदो नाउमीदीका यहाँ एक आशियाँ होगा॥
मेरे मरने पै आयेगी तुम्हें जो याद आशिक़की।
यही मुझ बे-निशाँका एक दुनियाँमें निशाँ होगा॥
यक़ीं फ़रहत को है आओगे तुम इक रोज़ तुरबतपर।
मेरी आहोफ़ुग़ाँका बस वहीं पर इन्तहाँ होगा॥

अबस जल जलके मरनेको ग़रीब आकर अड़ा होगा।
शमा जलने न दो परवानेको अहसाँ बड़ा होगा॥
दबा रक्खा है दिलमें आतिशे फ़ुरक़त इसी डरसे।
जो मुँहसे आह निकलेगी तो तूफ़ाँ उठ खड़ा होगा॥
मेरे मरनेकी जो पहुँची ख़बर तो सुनके वह बोले।
जुनूनी था किसी धुनमें कहीं सोता पड़ा होगा॥
ग़ज़ब हैं फूलोंके बिस्तर पै भी उनको न नींद आई।
बहुत नाज़ुक बदन हैं, बर्गे गुल कोई गड़ा होगा॥
जो फ़रहत आया भी तूने न कुछ अहवाले दिल पूछा।
किसी बुतका जिगर क्या तुझसे भी बढ़कर कड़ा होगा॥

ग़ज़लियाते फ़रहत
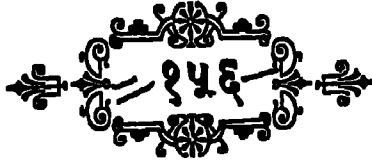
तुम्हारी ज़ुल्फ़े शबगूँको अगर काली बला कह दूँ।
तो जीमें है कि आरिज़को चिराग़े मुद्दआ कह दूँ॥
रसाई गर दरे जानाँ तलक होवे, सुना देना।
जो अपना हाले दिल मैं तुझसे ऐ बादे सबा! कह दूँ॥
सितमगर हो जफ़ाजू हो, सरापा रश्के क़ातिल हो।
तुम्हीं बतलाओ ऐ जाने जहाँ मैं तुमको क्या कह दूँ॥
सताते हो दिले बेकसको बेजुर्मो ख़ता नाहक़।
बुरा क्या माननेकी बात है गर बेवफ़ा कह दूँ॥
दिले फ़रहत को तड़पाना नहीं अच्छा है ऐ ज़ालिम।
मुझे शैदाई तुम कह दो तुम्हें मैं दिलरुबा कह दूँ॥

१५७

असर नालोंका रखतो है जो ये तर्ज़े बयाँ मेरी ।
कलेजा थाम लेते हैं वो सुनकर दास्ताँ मेरी ॥

तुम्हीं कह दो कि क्या कहते नहीं ज़ुल्मोसितम इसको ।
क़फ़समें क़ैद करके बन्द करते हो ज़ुबाँ मेरी ॥

न लेते नाम तुम हरगिज़ कभी फिर बेवफ़ाईका ।
जो सुन लेते शबे फ़ुरक़त मेरे मुँहसे फ़ुग़ाँ मेरी ॥

तरक़्क़ी है ये वहशतकी कि सूए दश्त जाता हूँ ।
नहीं मालूम ले जायेगी ये क़िस्मत कहाँ मेरी ॥

पहुच जाऊंगा आख़िर मंज़िले मक़सूद तक फ़रहत ।
मुहब्बतमें रही रहबर अगर रूहे रवाँ मेरी ॥

जोशे फ़रहत

न जाने किस घड़ी यह राज़े दिल होगा अयाँ मेरा।
मज़ा जब था कि वह ख़ुद आके सुन जाते बयाँ मेरा॥

जमा दो चार तिनके हैं किये लाकर बियाबाँसे।
न कर बरबाद ऐ सैयाद! उजड़ा आशियाँ मेरा॥

न दम बाक़ी है कुछ दिलमें न जोशे इश्क़ बाक़ी है।
लुटा हैं या इलाही बेतरह ये कारवाँ मेरा॥

मिलाती हैं अरी बादे सबा! क्यों ख़ाकमें तुरबत।
यही तो पर्दये हस्ती पै है बाक़ी निशाँ मेरा॥

ख़िज़ाँके बाद आता है चमनमें मौसमे गुल भी।
कभी आबाद फ़रहत होगा वीराँ गुलसिताँ मेरा॥

ये ताज़ा आबला दिलका जो छिलना हो तो छिल जाये।
नतीजा आह करनेका दिले नादाँको मिल जाये॥
इसीसे छानता हूँ ख़ाक तेरे दरकी मैं हरदम।
मेरे खोये हुए दिलका पता कुछ भी तो मिल जाये॥
न हो पाज़ेबकी झनकार आहिस्ता चलो साहब।
शहीदेनाज़ तुरबतमें कहीं सुनकर न हिल जाये॥
इसीसे अश्कबारी करती हैं आँखें अज़ीज़ अपनी।
कहीं इस आतिशे फ़ुरक़तमें पड़कर जल न दिल जाये॥
कलाम अच्छा वही फ़रहत है जिसके सब सनाख़्वाँ हो।
सख़ुनगोई वो है तबियत जिसे सुनते ही खिल जाये॥

फ़िराक़े यारने इक आग सीनेमें लगाई है।
गिराकर बिजलियाँ खेती उमीदोंकी जलाई है॥

शबे तारीकमें जब इकबयक जुगनू चमकते हैं।
तो ये मालूम होता है कि शोलोंकी चढ़ाई है॥

हवा ये गर्म है बादे सहर मेरे लिये हरदम।
हवा गुलज़ारकी है या कोई तीरे हवाई है॥

जुदा है यार पहलूसे नहीं आराम जाँ मुझको।
कलेजा मुँह पै आया और लबोंपर जान आई है॥

नहीं है होश फ़ुरक़तमें कि मैं हूँ कौन और क्या हूँ।
मेरी ख़ानेख़राबीने मेरी हस्ती मिटाई है॥

मुहब्बतमें जो लज़्ज़त है मेरे दिलसे कोई पूछे।
कि फ़रहत मैंने इसकी कैफ़ियत सारी उठाई है॥

१६१
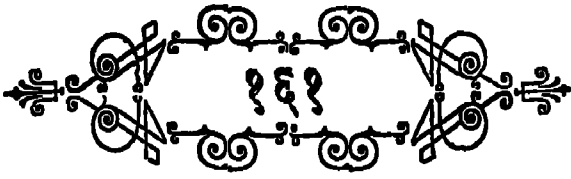
क़ातिल लिये ज[illegible] आता है।
तो हर जाँबाज़ मरनेके लिये तैयार आता है॥

जो बोसे उस गुले रुख़सारके लेता हूँ गुलशनमें।
गुलोंपर बुलबुले शैदाको क्या क्या प्यार आता है॥

ये मुल्के इश्क़ है याँ इश्क़बाज़ोंकी हुकूमत है।
न ख़ौफ़े कोतवाली है न थानेदार आता है॥

नज़र जिसकी पड़ी वो बन गया दीवाना दम भरमें।
शराबे हुस्नमें मख़मूर मेरा यार आता है॥

दिले नादाँका फ़रहत अब ख़ुदा हाफ़िज़ ख़ुदा हाफ़िज़।
न कर डाले कहीं ख़ूँ रहज़ने ख़ूँख़्वार आता है॥

१६२

तड़पते तालिबे दीदार होकर उनके शैदाई।
उन्होंने इस तरफ़ लेकिन न आनेकी क़सम खाई॥

मेरी आहोंके बादल बनके क़ासिद जो वहाँ पहुँचे।
तो झुँभला करके वह बोले कि होगा कोई सौदाई॥

मिलें मत ज़ाहिरा पर ख़्वाबमें भी तो मिलें आकर।
क़यामत है, कि परदेमें भी आनेमें शरम आई॥

अकेले बैठकर जब चाहता हूँ दिलको समझाना।
भुला देती है उनकी याद आकर लुत्फ़े तनहाई॥

न जीते जी कभी फ़रहत मेरा अहवाले दिल पूछा।
मेरी तुरबत पै जब आये तो उनको मेरी याद आई॥
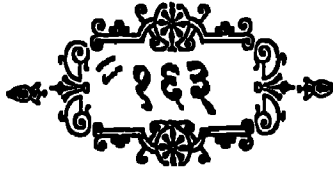
मैंने कहा कि दर्द है उसने कहा हुआ करे।
मैंने कहा इलाज कर बोला मेरी बला करे॥

मैंने कहा कि किस तरह दिलकी लगी हुई बुझे।
कहने लगे मज़ा है जब इसमें सदा जला करे॥

लज़्ज़ते दर्दे इश्क़का मैंने किया सवाल जब।
बोले कि दम लबों पै हो पर न कभी दवा करे॥

मैंने कहा कि आह भी हो बे-असर तो क्या करे।
बोले ख़ुदा पै छोड़ दे अपनेको और दुवा करे॥

। सुराग़ आपका कैसे मिले कहाँ मिले।
बोले कि क़ैसकी तरह सहरामें बस फिरा करे॥

मैंने कहा बताइये मानीये तीरे बेख़ता।
बोले कि तीरे नाज़ है जो न कभी ख़ता करे॥

फ़रहते ज़ार किस तरह ज़िन्दा रहे कहा जो ये।
बोले कि खाये लख़्ते दिल ख़ूने जिगर पिया करे॥
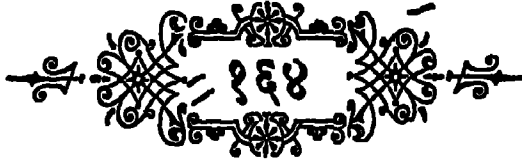
मैंने कहा कि बर्क़ तूर उसने कहा जमाल है।
मैंने कहा कि बेख़ुदी उसने कहा कि हाल है॥

मैंने कहा कि क्यों नहीं मुझ पै निगाह लुत्फ़की।
बोले अदा ओ नाज़से तुझसे हमें मलाल है॥

मैंने कहा करोगे कब वादेको अपने तुम वफ़ा।
कहने लगे कि याद है, उसका हमें ख़याल है॥

मैंने कहा जो हुक्म हो, अर्ज़ करूँ मैं हाले दिल।
बोले कि जानते हैं हम इसमें भी कोई चाल है॥

मैंने कहा जवाब दो फ़रहते बेक़रारको।
बोले बताओ तो सही हमको कि क्या सवाल है॥

१६५
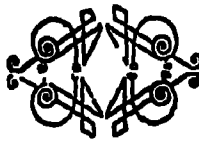
मैंने कहा न आये क्यों उसने कहा मलाल है।
मैंने कहा हूँ मर रहा उसने कहा ख़याल है॥
मेरी और उसकी बातोंमें फ़र्क हमेशा ही रहा।
मैंने कहा ये आँखें हैं उसने कहा ग़िज़ाल है॥
मेरी हज़ार कोशिशें कुछ भी हुईं न कारगर।
मैंने कहा तू बेवफ़ा उसने कहा जमाल है॥
मरके चला गलीसे मैं फिर भी न कुछ रहम हुआ।
मैंने कहा जनाज़ा देख उसने कहा ये चाल है॥
हों दूर दिलकी उलझनें आप ही आप किस तरह।
मैंने कहा जवाब दो उसने कहा सवाल है॥
कैसे सुनाऊँ मैं उसे जो जो जफ़ायें उसने कीं।
मैंने कहा सुनो भी कुछ उसने कहा वबाल है।
क्यों न तुम्हारे नामकी शोहरत हो अहले इल्ममें।
फ़रहत तुम्हारी शेरका हर लफ़्ज़ बाकमाल है॥
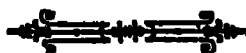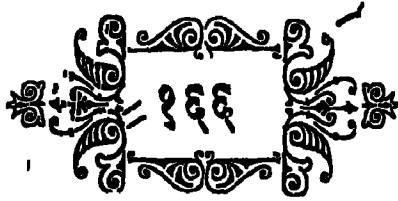
जाते हो कहाँ इश्क़का अंजाम सुनाकर,
आशिक़को रुलाकर।
बैठे हैं तेरे दर पै सनम होश भुलाकर,
कुछ भी तो हयाकर॥
हाजिर हैं ये नज़राना नज़र भी तो इधर हो,
मोती न ये समझो।
लाया हूँ अपने अश्ककी बूँदोंको जमाकर,
यों हार बनाकर॥
बेपीर तेरे जौरका शिकवा न करूँगा,
ख़ामोश रहूँगा।
बेहोश कर दिया जो मये इश्क़ पिलाकर,
दिल मेरा चुराकर॥
हँसते हो मेरा देखके तुम आलमे वहशत,
कुछ भी तो हो रहमत।
क्या फ़ायदा होगा तुम्हें यों बिजली गिराकर,
जलतेको जलाकर॥

जोशे फ़रहत

अफ़ईसे वहाँ बैठे हैं यहाँ लोट रहे हैं,
सब हमने सहे हैं।
अब भागे कहाँ ज़ुल्फ़से चेहरेको छिपाकर,
काली घटा छाकर॥
फ़ुरक़तमें तड़पते थे बेहिजाब तो न थे,
बेताब तो न थे।
आफ़त ही तुमने कर दी यहाँ चुपकेसे आकर,
घूँघटको हटाकर॥
चिलमनकी ओट रहना नहीं तुझको है लाज़िम,
बन इतना न ज़ालिम।
फ़रहत को ज़रा शरबते दीदार अताकर,
चिलमनको उठाकर॥

१६७

ज़ख़्मी किया जिगर जो मेरा ख़ून बहाकर,
ख़ंजर ये चलाकर।
तो अर्ज़ है दम भी ये मेरा तोड़ दे दिलवर!
बेख़ौफ़ सितमगर॥
वह बेवफ़ा हुए तो बनी मौत आशना,
पाया उसे यहाँ।
इस वस्लकी मस्तीको मिटाते हैं वो क्योंकर,
आकर मज़ार पर॥
मरता हूँ मर रहा हूँ यही कहना है हरदम,
निकला न अभी दम।
बोले वो हाथ मलके हुए तीर बे-असर,
है सख़्त जाँ बशर॥
दिल आँसुओंकी राह निकल कर जो बह गया,
कुछ भी न रह गया॥
उस संगदिलको इसकी न मुतलक़ हुई ख़बर,
क्या सख़्त था जिगर।

१६८

हैं तेग़ तमंचा तीर तबर तलवार तुम्हारी आँखोंमें ।
क्या जाने क्या क्या भरा हुआ सरकार तुम्हारी आँखोंमें ॥
होठोंको जुंबिश होती है चितवन कुछ हँसती जाती है ।
इनकार ज़ुबाँ पर हो, पर है इक़रार तुम्हारी आँखोंमें ॥
मोतीके दाने गिर गिरकर क्यों ख़ाकमें मिलते जाते हैं ।
क्या ख़ता हुई जो बँधा अश्कका तार तुम्हारी आँखोंमें ॥
इनकी चोटोंको खा खाकर मग़रूरोंके सर नीचे हैं ।
पर आबे क़ौसर पाते हैं बीमार तुम्हारी आँखोंमें ॥
उल्फ़तके कूचेमे आकर जो चाहो वो सौदा लेलो ।
है लगा हुआ इस ख़ूबीका बाज़ार तुम्हारी आँखोंमें ॥
हम ग़ैर नहीं हमसे कह दो क्यों दिलका हाल छिपाते हो ।
तसवीर निहाँ ये किसकी है ऐ यार ! तुम्हारी आँखोंमें ॥
तुम जिसे देखते हो वो ही मस्तीसे झूमा जाता है ।
मस्तानी अदासे फूला है गुलज़ार तुम्हारी आँखोंमें ॥
भर नज़र जो फ़रहत को देखा बस फिर इतने बेसब्र बने ।
यह आज कौन-सा लगा नया आज़ार तुम्हारी आँखोंमें ॥

मैं हूँ इश्क़ तुम हो निगारे इश्क़,
मैं हूँ और नहीं तुम हो और नहीं।
तुम असर हो तो मैं हूँ उसकी दुवा,
मैं हूँ और नहीं तुम हो और नहीं॥
जो मैं हिज्रमें यादे सनम हूँ बना,
तो तुम्हें मानता हूँ मैं दर्दे जिगर।
मैं हूँ क़तरा तुम भी हो मौजे बहर,
मैं हूँ और नहीं तुम हो और नहीं॥
किसी दिलकी तुम जो बहार हो,
तो मैं उसकी एक मुराद हूँ।
जो मैं लाली हूँ तुम हो वर्गे हिना,
मैं हूँ और नहीं तुम हो और नहीं॥
तुम हो फ़लक तो मैं हूँ सितारा वहाँ,
तुम हो मेहर मैं सूरते माह हूँ।
तुम हो चमन तो मैं भी हूँ फूल बना,
मैं हूँ और नहीं तुम हो और नहीं॥

जौहरे फ़रहत

तुम हो दिलरुबा दिलदार हूँ मैं,
तुम हुस्न हो गर तो प्यार हूँ मैं।
हूँ तुम्हारा तुम फ़रहत की बक़ा,
मैं हूँ और नहीं तुम हो और नहीं॥
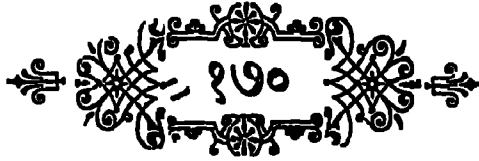
बही ऐसी ज़मानेकी उलटी हवा,
हम और कहीं तुम और कहीं।
तक़दीरका अपनी है ये गिला,
हम और कहीं तुम और कहीं॥
कभी हार भी जिनको था बार हुआ,
उन्हें देखना भी दुशवार हुआ।
नदी नाले पहाड़ हुए दरमियाँ,
हम और कहीं तुम और कहीं॥
हुई ख़्वाब वो वस्लकी रातें सभी,
गईं भूल वो वादेकी बातें सभी।
न वो दिल ही रहा न दिमाग़ रहा,
हम और कहीं तुम और कहीं॥
क्या फ़लकको मिला यों सताके मुझे,
क्या तुम्हें भी मिला तरसाके मुझे।
मेरी आहोंका कुछ न ख़याल किया,
हम और कहीं तुम और कहीं॥

बसे दिलमें नज़रमें न आये कभी,

दिल चुराकर भी इतराते हो तुम।

कहाँ तुम हो कहाँ फ़रहत बख़ुदा,

हम और कहीं तुम और कहीं॥

तेरा तीरे नज़र जिस दिलमें चुभा,

उसे ज़ीस्तका होश रहा ही नहीं।

तेरे गेसूके मारका काटा हुआ,

जो गिरा तो कभी फिर उठा ही नहीं॥

ख़ाक छानी है धूनी रमाई वहाँ,

भीख माँगी है आहें सुनाई वहाँ।

जिसने देखी झलक हुस्नकी अब सनम,

वह तुम्हारी गलीसे गया ही नहीं॥

मैंने सोतेमें बोसे चुराये तो थे,

रुख़सार पै लब भी लगाये तो थे।

आओ, ज़ंजीरे गेसूसे बाँधो मुझे,

इससे बढ़के है कोई सज़ा ही नहीं॥

न तबीयत है वो जिसमें मस्ती न हो,

न वो बुत है जिसकी परस्ती न हो।

न वो दिल हैं जिसमें मुहब्बत न हो,

न वो आँखें हैं जिनमें हया ही नहीं॥

वह शमा ही नहीं जिस पै आके कभी,

परवाना न जीसे निसार हुआ।

जिसे आँखोंसे सरसे लगाये न गुल,

वह हवा होगी बादे सबा ही नहीं॥

नहा वो चुके बालोंने झट नई,

बिखरा दी लड़ी मोतियोंकी कई।

जिस अदासे हटे गेसू रुख़सारसे,

वैसे ख़ुरशीदसे अब्र हटा ही नहीं॥

हँस हँसके मुरादोंके गुंचे खिले,

मरग़ूबे जहाँसे ये फल हैं मिले।

हुई फ़रहत है जिस पै करमकी नज़र,

उसने औरका नाम लिया ही नहीं॥

हसरत है यही कि मरने पर,
कोई माहेलक़ा मुझे याद न हो।
अबतक तो सहे हैं रंजो अलम,
फिर और सितम ईजाद न हो॥

जो ज़ुल्म हुए हैं जीते जी,
वह भूलूँ सभी मैं बादे फ़ना।
शिकवा न रहे कुछ ग़म न रहे,
तब और कोई फ़रियाद न हो॥

बे-सब्र न हो चल धीरे चल,
क्यों झूम रही है शाख़ोंसे।
ऐ बादे सबा! तेरी ठोकरसे,
यह क़ब्र मेरी बरबाद न हो॥

वह मेरी लहद पै आ करके,
कहते हैं मुझे ठुकरा कर यों।
वीरान ये दिल सरसब्ज़ न हो,
बरबाद कोई आबाद न हो॥

॥ जोशे फ़रहत ॥

यह सोज़े जिगर यह आहो फ़ुग़ाँ,

यह तीरे नज़र यह दाग़े निहाँ।

ताक़ीद है फ़रहत आलममें,

दिल शाद कोई नाशाद न हो॥

इस प्यारसे पास बुलाके सनम !

शमशीरे अदाका वार न कर।

फ़ुरक़तमें जलाना है जो मुझे,

तो वस्लसे फिर इक़रार न कर॥

हँस हँसके गिरी जो बिजली इधर,

रो रोके हुए पामाल उधर।

पावोंमें लगाके रंगे हिना,

अब ख़ून सरे बाज़ार न कर॥

ऐ नसीम ! न साथ गुलोंके जा,

अफ़साना सुनाती उल्फ़तका।

पर काटके मौसमे गुलमें अरे,

इस बुलबुलको बेज़ार न कर॥

जो दर्द दिया तो दवा भी दे,

जो हिज्र हुआ तो वस्ल भी हो।

गर है न मसीहाई तुझमें,

तो उल्फतका बीमार न कर॥

रहने दे जहाँमें फ़रहत को,
शुहरतका तेरी बाइस है ये।
अब बाँकी तिरछी चितवनका,
यह तीर जिगरके पार न कर॥

१७४
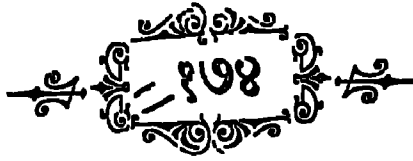
ये फ़रेबकी दुनिया है इसमें,
किसी वादा शिकनको प्यार न कर।
परदे ही में रह ऐ परदानशीं!
बे-पर्दा हो आँखें चार न कर॥

चरचा न सनमका होवे कहीं,
बस इश्क़ मेरा पोशीदा रहे।
ऐ अश्क! निकल कर आँखोंसे,
इस राज़का तू इज़हार न कर॥

उम्मीदसे ज़िन्दगीका है मज़ा,
उम्मीद पै क़ायम है दुनिया।
गर वस्ल न हो उम्मीद सही,
उम्मीदकुशी ऐ यार! न कर॥

है हुस्न जहाँ उल्फ़त है वहीं,
उल्फ़तमें है ग़मे हिज्र :छिपा।
गर रंजो अलमसे डर है तुझे,
किसी बुतको गलेका हार न कर॥

सद हज़ार ग़ुलाम बनेंगे तेरे,
ये हज़ारहा दिल जो रहेंगे बचे ।
बनकर बे-मुरव्वत ऐ बेवफ़ा !
हर दिलके टुकड़े हज़ार न कर ॥
पतवार है तेरे हाथ मेरी,
गर पार न कर तो बचाये ही रह ।
इस किश्तिये ज़ीस्तका बहरे जहाँ—
में बहना भी दुश्वार न कर ॥
दिल करता हूँ मैं ख़ुद ही नज़र,
ख़्वाहिश हो तेरी तो जान भी ले ।
बस फ़रहत की है अर्ज़ यही,
इक बोसेसे इनकार न कर ॥

न छोड़ हाथोंसे दामने गुल,
　　　　कि बादे सरसरका सामना है।
बहारे गुलशनको चन्द रोज़ा,
　　　　ख़िज़ाँके लश्करका सामना है॥
फ़साने फ़रहाद और मजनूँसे,
　　　　साफ़ हमको हुआ है ज़ाहिर।
हमेशा इन वहशियोंको सहरा,
　　　　व कोहे बदतरका सामना है॥
न चैन रिन्दोंके घरमें मुतलक़,
　　　　न मुरदोंको है मज़ारमें भी।
हर एक आशिक़को इश्क़ सुलताँ—
　　　　है इस ही किश्वरका सामना है॥
है इस तरफ़को हमारी आहें,
　　　　उधर रक़ीबोंकी हैं दुआयें।
ये दोनों लड़ती हैं आसमाँसे,
　　　　अजब बराबरका सामना है॥

सिखा दो, अच्छी तरह पढ़ा दो,

अदाये अबरूकी तेग़को तुम।

कि बीच मैदांमें मुँह न मोड़े,

किसी दिलावरका सामना है॥

हमारा कोई न मेहर्बां है,

तुम्हारे ख़ादिम खड़े हैं लाखों।

ये कैसी है कशमकश कि मुफ़लिसको,

इक तवंगरका सामना है॥

निकालूँ क्योंकर गुबार दिलका,

वहाके आँखोंसे ख़ून फ़रहत।

करे है सिज्देमें तान मोमिन,

कि अल्लाह अकबरका सामना है॥

जोशे फ़रहत
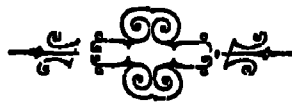
जुदाईका नक़्शा यह बदन है,
ये आँख तसवीरे जुस्तजू हैं।
जिगर है लुक़्मा कबाबका इक,
ये दिल फ़क़त क़तरए लहू है॥
जो हो गईं मुझसे चार आँखें,
तो सिर झुका मुस्कुरा दिये वह।
न जाने क्यों तबसे हर ज़ुबाँ पर,
इसीका चर्चा ये चारसू है॥
गया मेरा दिल जो वे बुलाये,
तो उस पै तेवरके तीर छूटे।
ज़रा-सी हरकतकी यह सज़ा उफ़्!
अजब सनम मेरा तुन्दख़ू है॥
किताबें कितनी ही उलटी पुलटीं,
पता न पर्दानशींका पाया।
जो बुतको देखा तो मैंने समझा,
यही तो अल्लाह रूबरू है॥

ज़मानेमें खुश नसीब तू है,

न अपनी क़िस्मतका कुछ गिलाकर।

तुझे न चाहेंगे कैसे फ़रहत,

जो उन पै दिलसे निसार तू है॥
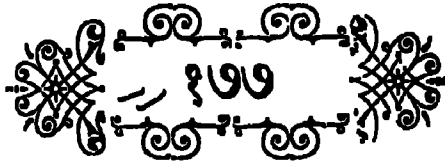
किसीके बेकस ग़रीब दिलको,
किसीने मैदाँमे आके मारा।
जिसे लगा वह गिरा वहींपर,
ये तीर कैसा चलाके मारा॥
ये ज़ुल्फ़ हैं या घिरी हैं फ़ौजें,
तने हैं अबरू कि तेग़ निकली।
है माँग सुर्ख़ी लिये सनमकी,
कि ख़ूँ किसीका बहाके मारा॥
ये नोके मिज़गाँ किसीके होंगे,
जो आज नश्तर चला रहे हैं।
इधर निगहके निराले ख़ंजर,
उधरसे जलवा दिखाके मारा॥
मरे हैं कितने लुटे हैं कितने,
हुए हैं पामाल हाल कितने।
ये जंग कैसी है या ख़ुदा जो,
ग़मो अलममे रुलाके मारा॥

जोशे-फ़रहत

बयाँ करूँ क्या बयाने दिल मैं,

रहा न जोशो-ख़रोश बाक़ी।

किसीने फ़रहत किसीको अपना,

असीरे गेसू बनाके मारा॥
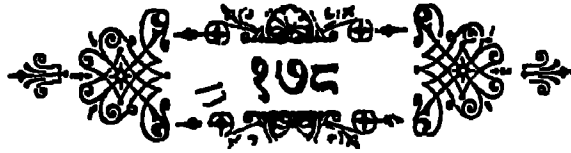
किसीको अबरू किसीको मिज़गाँ,

किसीको ख़ंजर दिखाके मारा।

किसी पै तीरे नज़र चलाकर,

किसीको जादू चलाके मारा॥

कोई है ज़ुल्फ़े दुता पै मायल,

कोई है रंगे हिनाका क़ायल।

उठाके घूँघट दिखाके जलवा,

किसीको आशिक़ बनाके मारा॥

बिखरके रुख़सारे बुत पै गेसू,

मज़े मुहब्बतके ले रहे हैं।

किसीको इनका बनाके शैदा,

किसीको उनमे फँसाके मारा॥

ये मस्त आँखें हैं उस सनमकी,

कि गर्म सौदा है मैकशीका।

किसीके दिलमें सवाब होकर,

किसीको बे-ख़ुद बनाके मारा॥

नौशे फ़रहत

उभार सीने पै आ रहा है,

दिलों पै नश्तर चला रहा है।

विसालकी शब हँसा हँसाकर,

फ़िराक़की शब रुलाके मारा॥

यह आज फ़रहत से कह रही है,

तुम्हारी भोली-सी शक्ल क़ातिल।

हमी शमा हैं हमी ने हरदम,

हज़ारहा दिल जलाके मारा॥